शंकराचार्य जी का

ज्ञान संदेशों

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

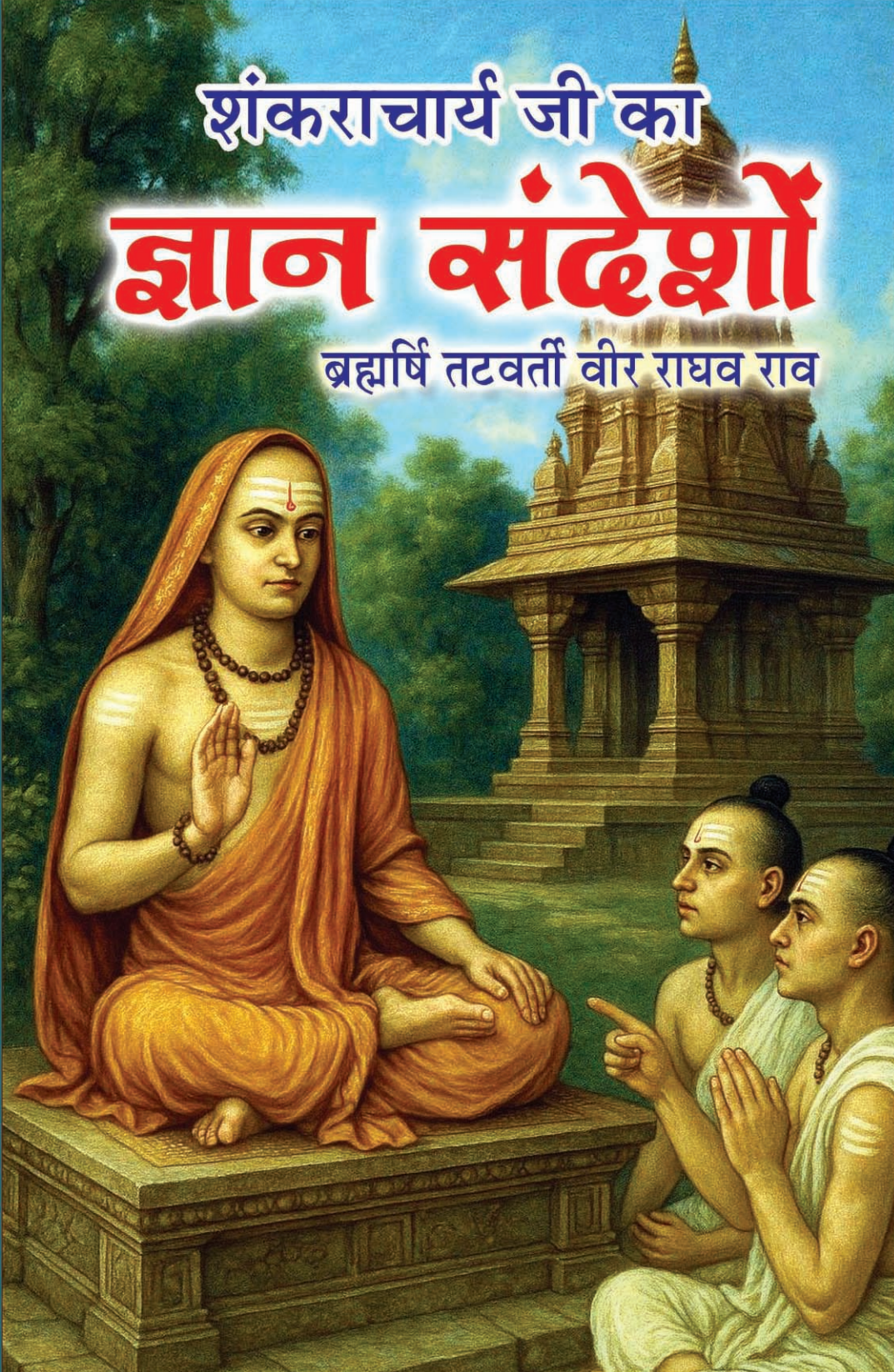

शंकराचार्य जी का
ज्ञान संदेशों

लेखक : ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :

TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO

Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.

W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs. 100/-

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) साधना में स्थितियाँ..... Rs.80/-
3) ज्ञान माला..... Rs.70/-
4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।..... Rs.70/-
5) अगर मानव को योगी बनना है तो ?..... Rs.60/-
6) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.60/-
7) महात्माओं का संदेशों..... Rs.50/-
8) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
9) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.50/-
10)शाकाहार ही मानव का आहार है!..... Rs.50/-

ध्यान की पद्धति - श्वास पर ध्यान

हर किसी को अपने लिए उपयुक्त सुखासन में आराम से बैठकर.. दोनों हाथों को मिलाकर... आंखों को बंद करके... सहज रूप से होने वाले उच्छ्वास और निश्वास पर गौर करना है!

बीच में कई सारे विचार हमारे मन में आते रहते हैं, उन सबका खंडन करते हुए... वापस हमारे ध्यान को श्वास पर लाना है... ध्यान भटकता रहेगा लेकिन वापस श्वास पर ध्यान लाते रहना है. धीरे-धीरे.. विचार रहित स्थिति प्राप्त होगी... चित्तवृत्ति का निरोध होगा मन शून्य बन जाएगा। मन शांति प्राप्त करेगा। यही ध्यान स्थिति है।

इस विचार रहित स्थिति में प्राप्त होने वाले शारीरिक, तंत्रिका व्यवस्था और आत्मानुभव पर ध्यान देते रहना है। उस स्थिति में असीमित विश्वमय प्राणशक्ति शरीर के अंदर प्रवाहित होकर तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि करती है। इस शक्ति के कारण सारे रोग दूर हो जाते हैं। तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि के कारण सारे कर्म दूर हो जाते हैं।

साधारण रूप से मनुष्य की उम्र जितनी है.. कम से कम उतने मिनट तक.. हर रोज दिन में दो बार... ध्यान करना है।

::1::

मानव लोगों अपनी ज़िंदगी में होने वाली कई घटनाओं से दुखी होते हैं। खासकर मरे हुए लोगों के बारे में उन्हें बहुत ज़्यादा दुख होता है। क्योंकि उन्हें सत्यं नहीं मालूम होता। इसीलिए शंकराचार्य जी ने उन चीज़ों, जिनसे इंसान दुखी होता है, के बारे में असली सत्य को सिखाया है। अब जानते हैं कि वह क्या है।

''यावत्कालम भवेत कर्म तावत तिष्ठति जन्तवः ।

तस्मिन क्षीणे विनश्यन्ति तत्र का परिवेदना बब'' ।।

तात्पर्यः– **''जब तक उनका कर्म बंधन दुनिया में है! सिर्फ़ तभी तक जीव जीते हैं, और जैसे ही वह कर्म बंधन छूटता है, वे मर जाते हैं। इसलिए, यह जानना चाहिए कि जन्म और मृत्यु दोनों ही जीव का धर्म है, इससे दुखी या डरना क्यों चाहिए?''**

इसलिए पत्री जी कहते हैं कि ज्ञान के बिना सिर्फ़ दुख है।

मानव जन्म लेता है, और मरता है। जन्म लेना जितना सहज है, उतनी ही मौत भी है। सृष्टि में यही व्यवस्था है। यह तो होना ही है, इसके लिए रोते क्यों हो? को कहा है। लेकिन जब ऐसा होता है, तो बहुत से लोग वो अपने काम करना छोड़ देते हैं, जो उन्हें करना चाहिए और ज़िंदगी भर रोते रहते हैं। चाहे उनकी पत्नी या पति मर जाएं, उनके बच्चे मर जाएं, या उनके रिश्तेदार मर जाएं, वे दुख में बैठे रहते हैं। इसका कारण ज्ञान की कमी है।

शंकराचार्य जी ने और क्या कहा? हर कोई कर्म के बंधन के अनुसार जीता है। जब तक इस सृष्टि में कर्म का बंधन है, हर जीव, सिर्फ़ इंसान ही नहीं, सिर्फ़ जानवर ही नहीं, बल्कि सभी जीव जीते हैं। जैसे ही कर्म का बंधन टूटता है, वे मरते हैं। ये जन्म और मृत्यु जीवितों का धर्म है।

इसलिए, दुख होने की कोई ज़रूरत नहीं है, शंकराचार्य जी ने कहा है।

कुछ लोग क्या कहते हैं, कि ''मेरे पति अभी तक यहीं था, उनके द्वारा मुझे बहुत सारे फ़ायदे और लाभ मिले हैं, अब अगर वे चले गए, तो मेरी क्या हालत होगी ? मैं कैसे दुख न उठाऊँ ?'' लेकिन ये बातें उन लोगों को आती हैं, जो अज्ञानता में हैं।

क्योंकि हर कोई पूर्णात्मा से, या मूलात्मा से अलग होकर अंशात्माएं है। यानी, हर कोई आत्माएं ही है, लेकिन शरीरों नहीं है। तुम, आत्मा, अपने लक्ष्य को पाने के लिए एक शरीर में प्रवेश किए हो, यानी, तुम कर्म के चक्र में आ गए हो, यानी तुम जन्म और मृत्यु के चक्र में आ गए हो। तुम्हें इस मृत्यु और जन्म के चक्र से, यानी कर्म के बंधन से बाहर निकलना है, यानी तुम्हें उस लक्ष्य को प्राप्त करना है, जो पूर्णात्मा ने तुम्हारे लिए तय किया है, और वह लक्ष्य है सत्यलोक तक पहुँचना।

तब तक, मृत्यु और जन्म तो होना ही है। इसी तरह, कुछ अनुभवों के लिए आप खुद ही अपनी ज़िंदगी तय करते हैं। आप उस जन्म में कितने साल जिएंगे ? कब तक जिएंगे ? किसके साथ रहेंगे ? आपके कितने बच्चे होंगे ? यह सब आप ही तय करते हैं। पति तय करना , पत्नी तय करनी , आप कहाँ रहेंगे ? किस धर्म में ? किस जाति में ? यह सब आप खुद ही तय करते हैं। लेकिन क्योंकि आप कर्म के बंधन में फंसे हैं, आपको अपने किए हुए कर्मों के आधार पर ही अपनी ज़िंदगी चुननी होगी। आपके चुने हुए कर्मों के आधार पर, कभी अच्छी ज़िंदगी आ सकती है, कभी बहुत दुखद ज़िंदगी आ सकती है, और यह आपके कंट्रोल में नहीं है।

इसलिए, अगर आप कर्म करते हैं, तो आपको उसका फल ज़रूर भोगना पड़ेगा। जो लोग ऐसे कर्म के बंधन में फंसे हैं, वह कर्म का बंधन किस हद तक रहेगा, तब तक ही जीते हैं, और जब कर्म का बंधन

टूट जाता है, तो आप मर जाते हैं। इसलिए, यह जन्म और मृत्यु, जीवितों का धर्म है, आपको इसके लिए दुखी क्यों होना चाहिए? शंकराचार्य जी कहते हैं।

श्री कृष्ण ने भी गीता में यही कहा है।

श्लोक: **अशोच्या नन्वशोच स्त्वां प्रज्ञावादांश्च भाषचे ।**

गतासू नागतासूंश्च नानुशोचन्ति पंडिताम।। (भ.गी.2-11)

तात्पर्य:- हे अर्जुन! आप उनके लिए शोक कर रहे हैं जो शोक करने के लायक नहीं हैं। इसके अलावा, आप एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह बोल रहे हैं। विद्वान, जिनके पास ज्ञान है, वे कभी भी मरे हुए या जीवित के लिए शोक नहीं जताते हैं।

इसलिए, कम से कम अब से, सावधान रहें। गलतियाँ या पाप न करें, अधर्म काम न करें, सृष्टि के खिलाफ काम न करें, अपना ज्ञान बढ़ाएँ! पत्री जी ने कहा, बुद्ध जैसे लोगों द्वारा सिखाए गए ''श्वास पर ध्यास'' का ध्यान करें। जब तुम बहुत ज़्यादा साधना करोगे, तो तुम्हें ज़रूर ज्ञान मिलेगा, तुम यह सब समझ जाओगे। तुम खुद को शरीर समझते हो, तुम खुद को औरत समझते हो, तुम खुद को आदमी समझते हो, तुम खुद को अमीर समझते हो, तुम खुद को गरीब समझते हो। लेकिन तुम इनमें से कुछ नहीं हो, तुम आत्मा हो। सत्यं को जानो, ये सब क्यों हो रहा है? समझो। तुम क्यों दुख होते हो? दुखी मत होना, शंकराचार्य जी कहते हैं।

शंकराचार्य जी ने और भी कहा है कि, न केवल ज्ञान की कमी की वजह से तुम दुख झेल रहे हो, उन्होंने सृष्टि में रहने वाले सत्य सिखाया और कहा कि दुख मत रहना। इसलिए जान लो कि तुम्हारे पास जितना ज़्यादा ज्ञान होगा, तुम उतने ही दुख से मुक्त हो जाओगे।

उन्होंने और क्या कहा ? कि

''ऋणानुबंध रूपेण पशुपत्नि सुतालयः ।
ऋणक्षये क्षयं यांति कातत्र परिवेदना'' ।।

तात्पर्यः– **''जब तक पिछले जन्मों का ऋणानुबंध है, तब तक पत्नी, बच्चे, घर और मवेशी होते हैं। एक बार वह ऋणानुबंध खत्म हो गया, तो ये सब चीज़ें खत्म हो जाएँगी। उसके लिए क्यों दुख होना ?''** शंकराचार्य जी कहते हैं।

इन शहरों में रहने वाले लोग इन मवेशियों को पालने जैसा काम नहीं करते। लेकिन पुराने ज़माने में, किसी भी राज्य में गांव का माहौल होता था। मवेशी भी एक दौलत हैं। पुराने ज़माने में, जिस राजा के पास जितने ज़्यादा मवेशी होते थे, उसे उतना ही दौलत वाला माना जाता था।

आप महाभारत में देखिए, राजा विराट के पास बहुत सारे मवेशी थे। कौरवों को पता चला कि पांडव वहीं हैं। उन्हें बाहर निकालने के लिए, सारे कौरव दो ग्रुप में बंट गए और राजा विराट के जानवरों को हांकने लगे। उन्हें पता था कि पांडव उनकी रक्षा के लिए बाहर आएंगे। और इसलिए अर्जुन आए।

सिर्फ़ पांडवों में ही कौरवों का सामना करने की ताकत थी, और किसी में नहीं। राजा विराट भी नहीं। अर्जुन ने अपनी अज्ञानतावश खत्म हो गया है कि नहीं, उसने गिनती की। फिर वह धनुष लेकर उन मवेशियों की

रक्षा करने चला गया। यानी मवेशी और गाय भी धन में गिने जाते थे। इसीलिए शंकराचार्य जी ने ऐसा कहा है।

यानी, एक बार बंधन टूट जाए तो सब कुछ दूर हो जाता है। इसकी चिंता क्यों करें ? वह कहते हैं।

इसलिए, आपको यह जानना चाहिए कि जो भी हो, चाहे कुछ भी हो, तभी तक चलेगा जब तक वह ऋणानुबंध है। यानी आपको यह जानना चाहिए कि कुछ भी परमानेंट नहीं है। लेकिन हर कोई ऐसे जीते हैं, जैसे बच्चे, पति और पत्नी परमानेंट हैं। इसीलिए दुख है। अगर आप यह समझ लें कि कोई भी परमानेंट नहीं है, तो आप समझ जाएंगे कि जब तक ऋणानुबंध रहेगा, हर कोई रहेगा, और, वो दूर होने से दुख नहीं होगा।

जिन लोगों को शाश्वत सोचते हैं, वे कई तरह से आपसे दूर हो जाएंगे। स्वाभाविक रूप से, वे सोचते हैं कि वे तभी दूर होंगे जब वो मर जाएंगे। खुद को दूर करने के लिए सिर्फ मौत ही जरूरी नहीं है। कई संसारों को देखें, ऐसे लोग हैं जो झगड़ों की वजह से दूर रहते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जो अलग-अलग घरों में बस गए हैं, और कुछ ऐसे हैं जो महीनों और सालों से एक ही घर में रह रहे हैं, लड़ते-झगड़ते हैं और एक-दूसरे से बात नहीं करते।

और क्या कुछ लोग सालों से विदेश या दूसरी जगहों पर पैसे कमाने नहीं गए हैं ? क्या वे दूर नहीं हो गए हैं ? इसी तरह, बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके बच्चे भी विदेश चले गए हैं और बिना किसी कनेक्शन के रह रहे हैं।

इसलिए शंकराचार्य ने कहा कि ये बच्चे, पत्नी, पति, घर और मवेशी तब तक रहेंगे जब तक पिछले जन्म का ऋणानुबंध रहेगा। उन लोगों को देखो जो युद्धों, भूकंपों और सुनामी में अलग हो गए हैं, कितने

लोगों ने अपने घर खो दिए हैं ? क्यों वे दुख झेलते हैं ? शंकराचार्य जी कहते हैं। ।

मानव लोग अज्ञानता के वजह से कई विषयों में दुख झेलता है। ज्ञान का मतलब है कि नहीं दिखाई देने वाली चीज़ों के बारे में जानना। क्या आप किसी के पिछले जन्म का ऋणानुबंध को देख सकते हैं ? क्या आपको पता है कि वह पति, पत्नी कितने समय तक रहेंगे ? आपको नहीं पता कि वे कितने समय तक रहेगा, लेकिन अगर आपको एहसास हो कि आपको कभी न कभी तो दूर हो जाना है, तो आप दूर होने पर दुखी नहीं होंगे।

अगर आपको कुछ काम करने को बाकी है, तो आप चाहकर भी नहीं जाएंगे, अगर आपका काम हो गया है, तो आप चाहकर भी नहीं रुकेंगे। पत्री जी के विषय में भी यही हुआ। उसने 2095 तक की प्लानिंग की। उसकी कड़ी मेहनत की वजह से, प्लान किया हुआ काम बहुत जल्दी पूरा हो गया। इसीलिए उसका जल्दी निष्क्रमण हुआ। कोई भी जब उसका ऋणानुबंध खत्म हो जाती है, तो वह दूर हो जाते हैं।

इसलिए ये सब टेम्पररी है। आपको यह जानकर जीना चाहिए कि किसी दिन मेरा ऋणानुबंध इनसे खत्म हो जाएगा, और वे मुझसे दूर चले जाएंगे। याद रखें, अगर आप यह सोचकर जीते हैं कि हमेशा के लिए रहेंगे हैं, तो आपको अनंत दुख होगा। इसके अलावा, उस दुख में रहकर, वो काम भी नहीं करेंगे जो आपको करना चाहिए।

अगर आप धरती पर बहुत कुछ पाने, बहुत सारा ज्ञान पाने, बहुत सारे अनुभव पाने के लिए आते हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं करते हैं, तो आपको और जन्म लेने पड़ेंगे। जो इंसान अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करता है, वह 400 जन्मों में ही जो हासिल करना है, उसे अभी हासिल कर लेगा। जो इंसान अपनी बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करता, उसे 1000 जन्म लेने पड़

सकते हैं। इसे यहीं पूरा करने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह आपकी समझ पर निर्भर करता है।

आप तय करें, कोई जल्दी नहीं है। अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अच्छा समय बिताएं, रोज़ सिनेमा जाएं, किसी फाइव-स्टार होटल में जाएं और अच्छा खाएं, समुद्र में रहने वाले सभी तरह के जीवों को खाएं और उनका मज़ा लें, धरती पर रहने वाले सभी तरह के पक्षियों को खाएं, सभी तरह के जानवरों को खाएं, अगर आप सुपरमार्केट जाते हैं, वहां सब कुछ मिलता है। कमाएं और अच्छे से लाएं और अपने पूरे परिवार के साथ खाएं। एक-दो जन्म यहां खाने से नरक का अनुभव होगा। उसके बाद फिर से खाते रहें। दूसरे जन्म में जीवन का आनंद लें। ऐसा सोचने वाले बहुत से लोग हैं।

जो कुछ भी हो, जीवन दुख से भरा है, आपको इससे जल्दी बाहर निकल जाना चाहिए, मैंने पहले भी ऐसी कई चीजें अनुभव की हैं, मैं और क्या अनुभव करूंगा! बुद्धिमान व्यक्ति यह जानेगा। वह जानता है कि, मुझे मनोरंजन नहीं, बल्कि आत्मसाक्षात्कार चाहिए। जो मनोरंजन की तलाश करता है वह अज्ञानी है, बुद्धिहीन है। जो आत्मसाक्षात्कार के लिए प्रयास करता है, वह बुद्धिमान और ज्ञानी है।

अगर पत्री जी यह कहता है, तो यह हमारे लिए आपत्तिजनक होगा। क्या एक टुकड़ा रोटी और आचार काफ़ी नहीं है? वे कहते हैं। इसका मतलब है कि तुम्हें इन चीज़ों से इतना लगाव क्यों है! अगर तुम्हारे पास है, तो इसका मज़ा लो, तुम इसके लिए कोशिश क्यों करते हो? अगर तुम्हारे पास नहीं है तो तुम क्यों दुख उठाते हो? अगर कोई और खाता है तो तुम्हें क्या है ? आप आत्मा साक्षात्कार के लिए कृषि करो। इसी जन्म को तुम्हारा आखिरी जन्म बनाने को कहते हैं।

यह बात हर कोई जानना चाहिए।

::3::

हम सब जानते हैं कि आदि शंकराचार्य जी कितने महान थे और उन्होंने कितने लोगों को प्रभावित किया। वे भारत में उन दिनों पैदा हुए थे जब हिंदू धर्म खत्म हो रहा था और भारत में बौद्ध धर्म का बोलबाला था। उन्होंने हिंदू धर्म और अद्वैत सिद्धांत के महत्व को बहुत ही विस्तार से और आसानी से समझने लायक तरीके से समझाया। उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक तीन बार पैदल यात्रा की और लगभग सभी को अपना शिष्य बना लिया। उन्होंने भारत में अपने आदर्शों को मजबूती से स्थापित करने के इरादे से चार जगहों पर पीठ भी बनाईं।

हम कह सकते हैं कि शंकराचार्य जी का धरती पर आना और भारत में बौद्ध धर्म को खत्म करके हिंदू धर्म की स्थापना करना, एक कुदरती फैसला था। क्योंकि इस दुनिया में जो कुछ भी होता है, वह कुदरती फैसले के हिसाब से होता है। हिंदू धर्म दुनिया से गायब हो गया है। इसलिए, यह समझना चाहिए कि कुदरत ने हिंदू धर्म की शान और अद्वैत सिद्धांत की महानता को फिर से लाने के लिए शंकराचार्य जी को धरती पर भेजा।

हम जान सकते हैं कि, शंकराचार्य जी जैसे महान व्यक्ति के संदेश कितने महान होंगे। पत्री जी ने हमें क्या बताया ? मानव जन्म में आने के बाद, जन्म रहित की स्थिति तक पहुंचने में लगभग चार से पांच सौ जन्म लगते हैं। यानी, मानव को पूर्णत्वं पाने के लिए, पूर्ण ज्ञान पाने के लिए, हर तरह के अनुभव पाने के लिए, इतने जन्म ज़रूरी हैं।

उतना ही नहीं, इतने सारे प्रांतों होने चाहिए, इतने सारे मज़हबों होने चाहिए, इतनी सारी जातियां होनी चाहिए, इतने तरह के जीवन होने चाहिए। और तो और परिपूर्ण ज्ञान पाने के लिए, स्त्री जन्म लेना पड़ता है,

और पुरुष जन्म भी लेना पड़ता है। और स्त्री जन्म लेकर बहुत कुछ सीखा जाता है, पुरुष जन्म लेकर बहुत कुछ सीखा जाता है। इसलिए, यह जानना चाहिए कि स्त्री कभी स्त्री नहीं होती, और पुरुष कभी पुरुष नहीं होता।

इसीलिए शंकराचार्य धरती पर आए और खत्म हो चुके हिंदू धर्म को फिर से स्थापित किया है। हिंदू धर्म में ये जो आध्यात्मिक ग्रंथ, उपनिषद, वेद, भगवद गीता और पुराणों जैसे ग्रंथ किसी भी धर्म में नहीं मिलते हैं। अगर कोई भी इन्हें समझ ले, या अवगाहन कर ले, तो वह समस्त को जाननेवाले हो जाता है। जो लोग इसे नहीं समझते, उनका यह धर्म खत्म हो जाएगा, वह धर्म बढ़ेगा, नहीं तो दूसरा धर्म बढ़ेगा, ऐसा कहते हैं ।

लेकिन धरती पर कोई भी धर्म खत्म नहीं होगा, यहां हर तरह के धर्म रहेगा, हर कोई रहेगा । हर कोई सभी धर्मों में पैदा होता है, और वे, हर धर्म से जो सीखना होता है, सीखते हैं।

पत्री जी को ही लीजिए, उन्होंने कहा कि 2500 साल पहले मैं बुद्ध का शिष्य था जिसका नाम आनंद था, तब मैं बौद्ध था। फिर मैं अमेरिका में एक ईसाई बेंजामिन फ्रैंकलिन के रूप में पैदा हुआ, फिर मैं उड़ीसा में पैदा हुआ और मैंने पूरी ज़िंदगी सिर्फ ध्यान ही किया। फिर मैं हैदराबाद में एक मुस्लिम सूफी गुरु हज़रत इनायत खान के रूप में पैदा हुआ, अब मैं सुभाष, ब्राह्मण जाति में एक हिंदू के रूप में पैदा हुआ हूं। अब मेरी जाति क्या है ? मेरा धर्म क्या है ? मुझे बताओ। इसलिए सभी के सभी तरह के जन्म होते हैं। इसलिए कोई कम नहीं है, कोई ज़्यादा नहीं है। सब बराबर हैं।

आज आप हिंदू हैं, इसका मतलब आप हमेशा हिंदू ही नहीं रहने वाले हैं। सिर्फ़ इसलिए कि तुम आज पुरुष हो, तुम हमेशा पुरुष नहीं हो। सिर्फ़ इसलिए कि तुम आज अमीर हो, तुम हमेशा अमीर नहीं हो। सिर्फ़

इसलिए कि तुम नौकर हो, तुम हमेशा नौकर नहीं हो। एक राजा जिसने सत्ता और सुख भोगा है, उसे भी फिर से एक गरीब आदमी और एक मज़दूर के तौर पर अनुभव हासिल करने पड़ते हैं।

इसलिए पत्री जी ने हमें साफ़-साफ़ बताया है। हर किसी को तब तक जन्म लेते रहना चाहिए जब तक उन्हें यह एहसास न हो जाए कि मैं ही सब कुछ हूँ, सब कुछ मैं ही हूँ। अब हम सब वही कोशिश कर रहे हैं, हम यह सब जानने में बहुत दिलचस्पी दिखा रहे हैं। यही वजह है कि हम सुबह तीन बजे उठते हैं, नहाते हैं और ध्यान करते हैं, और इन सभी संदेशों को दिलचस्पी से सुनते हैं।

जब तुम यह सब सीख रहे हो तो तुम्हें यह समझना चाहिए। यह एक मौका है जो कुदरत ने मुझे दिया है, इसलिए तुम्हें यह सारा ज्ञान ध्यान से सुनना चाहिए, इकट्ठा करना चाहिए, और इसका अनुभव करना चाहिए। तब तुम्हें सृष्टि में नए अनुभव और नया ज्ञान पाने के लिए एक अच्छा जन्म मिलेगा। अगर तुम इसे नज़रअंदाज़ करते हो, निर्लक्ष्य करते हो, या अनदेखा करते हो, तो तुम्हें इसे पाने के लिए बार-बार जन्म लेना पड़ेगा। अगर आप इसे अभी हासिल कर लेते हैं, तो आपको दोबारा ऐसे जन्मों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

बहुत से लोग यह जाने बिना काम करते हैं और उनसे खुश हो जाते हैं। आपको यह भी सोचना चाहिए कि आपके इन कामों से आपका ज्ञान कितना बढ़ रहा है। प्रकृति, सृष्टि का ज्ञान देने के लिए, एक या दो को नहीं भेजती, वह शंकराचार्य जैसे लोगों को भेजती रहती है।

अगर एक व्यक्ति चला भी जाता है, तो भी धरती पर दूसरे लोग आते रहेंगे। उनसे यह ज्ञान मिलता रहेगा। जो थोड़े समझदार हैं, वे समझेंगे कि यह ज्ञान हमें किससे मिला है, उन्हें अनुसार करेंगे और उनसे जितना

हो सके उतना ज्ञान प्राप्त करते हैं।

नहीं किया तो भी कोई नुकसान नहीं, जन्मों की संख्या बढ़ जाएगी। लेकिन वह समझदारी की कमी है। कुदरत ने इंसान को सारे मौके दिए हैं लेकिन उसने उनका उपयोग नहीं किया। लेकिन जो जन्मों की संख्या कम करता है, वह समझदार है। जो यह-वह कहकर, परिवार कहकर, मैं यह काम कर रहा हूँ, मैं वह काम कर रहा हूँ, यह कहकर नहीं करता है, उससे ज़्यादा बेवकूफ कोई और नहीं है। जिसने उनका उपयोग किया है, उससे ज़्यादा समझदार कोई और नहीं है।

इसलिए एक बार भीमावरम में तीन दिन की क्लास में हिस्सा लें। फिर आंध्र, कर्नाटक और भारत के सभी राज्यों में घूमें। जहाँ भी आपको ऐसा ज्ञान पाने का मौका मिले, अगर आपको ऐसी प्रैक्टिस करने का मौका मिले, तो आप उसे फॉलो कर सकते हैं। जहाँ भी ज्ञान मिलता है, उसे हासिल करें। सबको आज़ादी है, यह एक शानदार मौका है जो कुदरत ने आपको दिया है।

मुझे समझ नहीं आ रहा कि ये सारे संदेशों मेरे पास कैसे आए। और मैं और अम्मा हर मैसेज को कैसे बार-बार समझा सकते हैं? क्या हमने पहले इसकी पढ़ाई की थी? क्या हमने की थी? यह सब कहाँ से आता है? अब इस ज्ञान की ज़रूरत दुनिया में हर किसी को है। इसीलिए यह हमारे ज़रिए आप सभी को इस तरह दिया जा रहा है। पत्री जी का दिया इस "श्वास पर ध्यास" ध्यान को तीव्रता से करने के लिए इस भीमावरम क्लास बहुत काम की हैं। तो इस मौके का इस्तेमाल करें ।

::4::

''एक मुनि जो आत्म ज्ञानी है, भले ही वह मानव के शरीर में हो, वह शरीर से जुड़े किसी भी सहज गुण के बिना, आसमान की तरह जीता है। भले ही वह दुनिया के बारे में सब कुछ अच्छी तरह जानता हो, वह ऐसे घूमता है जैसे कुछ नहीं जानता।''

चाहे वह साधक हो, मुनि हो, योग करने वाला व्यक्ति हो, या इस ''श्वास पर ध्यास'' का ध्यान करने वाला व्यक्ति हो, किसी को भी अपनी साधना से धीरे-धीरे आत्मा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। अगर हमें आत्मा ज्ञानी को समझना है, तो हमें पत्री जी का उदाहरण ले सकते हैं।

उनके पास एक शरीर है, और शरीर होने के बावजूद, वे बिना किसी गुण के जीते हैं। यह कैसे है ? अगर आप आसमान को कुछ चिपकना चाहते हैं, जैसे रंग या कुछ भी, चिपक नहीं सकते हैं। बादल आते-जाते रहते हैं, लेकिन वे आसमान से नहीं चिपकते। अगर उस बादल चिपकता है वह बादलों वहीं पर रुक जाते हैं। क्योंकि वह चिपकता नहीं है, थोड़ी हवा आने से, तो वह चला जाता है और गायब हो जाता है।

इसी तरह, जिन्हें आत्म-साक्षात्कार हो गया है, उनका शरीर भी बाकी सब लोगों जैसा होता है, लेकिन वे किसी चीज़ से चिपकते नहीं हैं। एक तरह से, वे गवाह बने रहते हैं। वे ऐसे रहते हैं जैसे, वे जानते हैं फिर भी न जानते जैसे रहते हैं, वे सुनते है परंतु सुना नहीं जैसे रहते है। वे ऐसे रहते हैं जैसे उनका कोई कनेक्शन नहीं है। वे हर चीज़ में शामिल नहीं होते, वे हर चीज़ पर उंगली नहीं रखते ।

आप देखिए, जब हम ट्रेन में सफ़र करते हैं, तो हमारे आस-पास कुछ लोग होते हैं। वे बातें करते रहते हैं। उनके बातें में कुछ चीज़ें आपको दिलचस्प लगती हैं,

उनकी बातों में कुछ फ़र्क भी हो सकता है। उन्हें यह विषय नहीं पता है करके, कि वे बेवजह गलत राय में हैं समझकर, और उनके गलतियाँ सुधारने के लिए आप बीच में जुट जाते हैं।

शंकराचार्य जी यहाँ पर क्या कह रहे हैं ? हमें इसकी ज़रूरत नहीं है। अगर वे हमसे पूछें, तो हम उन्हें बता सकते हैं, लेकिन उन्होंने पूछा नहीं, तो हम उनकी बातचीत में क्यों जाना है ? हम उनकी बातचीत में दखल क्यों दें ? आप पूछ सकते हैं, क्या हमें उन्हें मेडिटेशन के बारे में बताना चाहिए ? या नहीं ? उन्हें बताएँ जो आप जानते हैं, लेकिन अगर वे इंटरेस्ट नहीं दिखाते हैं, तो बस चुप रहें।

आपका कोई फंक्शन है। हम फंक्शन में नहीं जाना चाहते, लेकिन हम कहते हैं कि हम एक बार मिलेंगे। जब हम जाएँगे, तो आपके आस-पास के लोग या दूसरे लोग कुछ न कुछ बात करेंगे, आप बस सुनते रहना, इससे आपका कोई लेना-देना नहीं है। भले ही आप अपने दोस्तों के घर या अपने पुश्तैनी घर जाएँ, आपको सबसे बात करना चाहते हैं। लेकिन एक आत्मज्ञानी हर चीज़ में दखल नहीं देता है। अगर दूसरे उससे कुछ पूछते हैं, तो वह उसका पूरा जवाब देगा।

इसी तरह, जब आप अपने करीबी रिश्तेदारों, दोस्तों, या उन लोगों को देखते हैं जिनसे आप मेडिटेशन में जाने से पहले मिले थे, तो वे आपको नमस्ते करेंगे और कुछ कहेंगे, कुछ पूछेंगे। अगर आप इस तरह बातें करेंगे, तो वे आपसे बहुत देर तक बात करेंगे। वे अपने बच्चों, आपके बच्चों, अपनी पढ़ाई, आपके घर में क्या हो रहा है, उस घर में क्या हो रहा है, इन सब के बारे में बात करेंगे। लेकिन आप अचानक यह मेडिटेशन टॉपिक ले आइए ! यानी, क्या आप मेडिटेशन कर रहे हैं ? क्या आप जानते हैं कि मेडिटेशन क्या है ? क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको मेडिटेशन के

बारे में बताऊँ ? तब वे तुरंत शांत हो जाते हैं, उनके चेहरे पूरी तरह बदल जाते हैं। वे तभी बात करेंगे जब आप उनसे कोई ऐसी बातचीत करेंगे जो उन्हें पसंद हो, वरना वे बात नहीं करेंगे। अगर आप ऐसे ही बात करते रहे, तो वे कहेंगे, अम्मा मैं जा रहा हूँ।

तो अगर इस बार आपको उनकी बातें बोरिंग लग रही हैं, तो यह टॉपिक उठाएँ। उन्हें कोई क्लास बताएँ जैसी मैंने सुबह बताई थी। देखें कि वे इस बार कितनी देर रुकते हैं। मैं हमारे ध्यानियों के घर जाता रहता हूँ। अगर औरतें ध्यानी हैं, तो वे अपने पतियों को परिचय करती हैं। तब उन लोगों कि चेहरे बदल जाते हैं। वे मना नहीं कर सकते हैं और आकर बैठ जाते हैं ।

उसे वह मेडिटेशन ही पसंद नहीं है जो वह करती है। बहुत से लोग सोचते हैं कि मैं उसे बिगाड़ रहा हूँ। वे मुझे कोसते हैं कि मैंने उनकी पत्नी को ऐसी कर दी। उनको अपनी पत्नी पसंद है, लेकिन वह काम करना पसंद नहीं है। इसीलिए वे बिना मन के मुझसे मिलते हैं, मैं उनके चेहरे के एक्सप्रेशन से समझ जाता हूँ।

मैं ऐसे लोगों के साथ यह करता हूँ कि अगर वह बिज़नेस कर रहा है, तो मैं बिज़नेस की बात उठाऊँगा, अगर वह नौकरी कर रहा है, तो मैं नौकरी की बात उठाऊँगा, फिर वह थोड़ी देर मेरे साथ बैठकर बात करेगा। अगर मैं मेडिटेशन की बात करूँगा, तो वहां से धीरे से चला जाएगा।

कुछ पतियां भी ध्यान करते हैं, लेकिन पत्नियाँ नहीं करते हैं। ऐसे पत्नियां मुझसे बहुत नाराज़ रहती हैं। वह सोचते हैं कि हर दिन सुबह खराब कर देता है। वे ज़ोर से नहीं कहती, लेकिन कोसती हैं। हालाँकि, एक आत्मज्ञानी यह मानव शरीर पाकर भी, जैसे आकाश किसी चीज़ से

चिपकती नहीं है, वैसे ही शरीर को कुछ भी सहज गुणों नहीं चिपककर जीता है। क्या आप ऐसे जी रहे हैं ? या नहीं ? खुद को परीक्षा करें। अगर ऐसे परिस्थितियों सामने आते भी हैं, तो आपको वैसे जीना आना चाहिए। तभी आप बहुत आगे बढ़ चुके माने जाएंगे।

आपको किसी की राय की ज़रूरत नहीं है। एक आत्म ज्ञानी को सिर्फ़ इस बात की फ़िक्र होती है कि वह जो कर रहा है वह सही है या नहीं ? लेकिन उसे दूसरों की या दूसरे क्या सोचते हैं, इसकी कोई फ़िक्र नहीं होती। आपको उस हालत तक पहुँचना चाहिए। तब आप ज्ञानी बन रहे हैं।

शंकराचार्य जी और क्या कहते हैं ? एक आत्म ज्ञानी में तमोगुण, रजोगुण, सात्विक गुण जैसे नहीं होतीं, यानी इन गुणों से परे हो जाती है। जैसे-जैसे साथना करता है, जैसे-जैसे उसका मन पवित्र होता जाता है, वह इन गुणों से परे हो जाता है, और ऐसा होना भी चाहिए। नहीं तो, सालों तक भीमावरम आने का क्या फ़ायदा ? सुबह ढाई घंटे बैठने का क्या फ़ायदा ? आस-पास हो रही सभी विषयों को अंदर रखने और उनका ज़िक्र करने का क्या फ़ायदा ?

इसलिए, आत्म-ज्ञानी, भले ही वह दुनिया के बारे में सब कुछ अच्छी तरह से जानता हो, वह ऐसे घूमता है जैसे कुछ नहीं पता, और निस्संगत्व में रहते हैं, आपको उस अवस्था तक बढ़ना होगा।

हर दिन आप बहुत सी चीजें करते हैं। वे क्या सोच रहे हैं ! यह लोग क्या सोच रहे हैं ! ऐसे सोचते हैं, यह बहुत गलत है। जितना हो सके उतना करो, जितना हो सके उतना खर्च करो, दूसरों के बारे में मत सोचो। भले ही आप ध्यान में आ गए हों, आपने संसार नहीं छोड़ा है, आपने अपने बच्चों को नहीं छोड़ा है, आपने अपनी ज़िम्मेदारियाँ नहीं छोड़ी हैं, सब

कुछ निभा रहे हैं, लेकिन आपको अपने हालात के हिसाब से वही करना चाहिए जो आप सोचते हैं। आपको इस बात की ज़रूरत नहीं है कि कोई क्या सोचता है, आपको उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

उनकी बुराई, उनकी तारीफ़, आप सुनते हैं लेकिन न सुनें जैसे रहना, लोग चुप नहीं रहेंगे, यही दुनिया का स्वभाव है। आप कुछ भी कर रहे हैं, वे कुछ तो कहते हैं। अगर आप अच्छा करते हैं, तो वे अच्छा कहते हैं, आपने अच्छा किया। अगर आप बुरा करते हैं, तो वे बुरा कहते हैं, अगर आप कुछ नहीं करते हैं, तो कहते हैं कि आप कुछ नहीं करते हैं, यही दुनिया का स्वभाव है। इसलिए, बेहतर है कि आप अपना काम करते रहें।

अगर आप धीरे-धीरे ऐसे जिएंगे, तो आप साक्षीभूत की हालत में चले जाएंगे, वही परिपूर्ण स्थिति है। यही भगवान का लक्षण है, भगवान साक्षीभूत हैं, वे सब कुछ जानते हैं लेकिन ऐसे हैं जैसे कुछ नहीं जानता है। उन्हें सब कुछ पता है, लेकिन वे ऐसे हैं जैसे कुछ है ही नहीं, आपको उस स्थिति तक पहुंचना चाहिए। अपार ज्ञान से भरपूर भगवान का लक्षण, साक्षीभूत तत्व है।

इसलिए, आपको यह देखते रहना चाहिए कि आपका व्यवहार कैसा है। अगर फिर भी कोई कमी है, तो आपको उसे ठीक करना चाहिए, और जानना चाहिए कि आपका साधना कम है, और आगे साधना करना चाहिए। आप यहाँ कितनी भी साधना कर लें, इस माया प्रभाव से आप अपनी मामूली सी हालत में वापस आते रहेंगे, इसलिए निरंतर साधना ज़रूरी है। नहीं तो, आपको 400, 500 जन्मों की क्या ज़रूरत है ?

अभी आप संसार में निर्वाण पाने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, अगर आप ज़्यादा से ज़्यादा समय साधना करते हैं, संसार में रहते ही, और

अपने साथियों के साथ उसी तरह मिलते हैं, तो आपका अगला जन्म ज़रूर अच्छा अनुकूल जन्म होगा। आपको ये ममकारें नहीं होंगे, संसार में रहते हुए भी किसी से परवाह नहीं करते, आप अपना काम सहजता से करते हैं। आपको ऐसा अच्छा जन्म मिलेगा। और तो और, इस जन्म में भी, आपकी लगन के हिसाब से, आपको धीरे-धीरे कुदरत का साथ मिलेगा, आपके बुरे हालात अच्छे हालात में बदल जाएंगे।

आप देखिए, स्वामी विवेकानंद ने शादी नहीं की, शंकराचार्य जी ने नहीं की, रमण महर्षि भी ऐसे ही हैं।

वे सब उस स्थाई तक पहुंचे हैं, अपने आखिरी जन्म में आए हैं। ऐसे लोग बहुत कम हैं। क्योंकि वे पूर्ण आत्माएं ऐसे ही नई आत्माएं सृष्टि करते रहते हैं। और वे सबी फिर से पहले जन्म से शुरू करते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं। इसलिए, दुनिया में हर तरह के लोगों का होना नैचुरल है।

पत्रिजी ने एक बार क्या कहा था? उन्होंने कहा कि उनके जैसे लोगों, बुद्ध जैसे लोगों, रमण महर्षि जैसे लोगों और सत्य साईं बाबा जैसे लोगों की कोशिशों से शाकाहारी लोगों का परसेंटेज बदलेगा, लेकिन पूरा बदलाव कभी नहीं आएगा। इसलिए, यह निरंतर चलता रहता है। पत्रिजी जैसे लोग जाते रहते हैं, और फिर कुछ नए लोग शुरू हो जाते हैं। वे कोशिश करते रहते हैं। यह सदियों से होता आ रहा है और आगे भी होता रहेगा।

इसलिए, याद रखें कि आसमान किसी भी चीज़ से चिपकती नहीं है! एक आत्मज्ञानी मानव के शरीर में होते हुए भी इनमें से किसी भी गुण के बिना जीता है। इसी तरह, शंकराचार्य जी ने कहा है कि वह ऐसे घूमता है जैसे दुनिया में हो रही चीज़ों को नहीं जानता हो, भले ही वह उन्हें जानता हो।

::5::

''बाह्य के वस्तुएं, जो अनित्य हैं, और भ्रम पैदा कर रही हैं, उन पर सुख प्राप्त करने की इच्छा का गुण, को त्याग देना चाहिए, तथा आत्मा की सुख में स्थित रहकर, संतुष्ट रहना चाहिए। ऐसा व्यक्ति अपने भीतर, हंडिया में दीपक की तरह चमकता है।''

अगर हम गौर करें, तो बाहरी रूप से जो कुछ भी दिखाई देता है, वह स्थायी नहीं है। लेकिन संसार में मनुष्य उनसे आसक्त हैं। वे उन्हें पाने और उनका अनुभव करने का प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि वे सभी सुख देते हैं, इसलिए वे उस सुख का अनुभव करने का प्रयास कर रहे हैं।

मनुष्य को पाँच इन्द्रियाँ दी गई हैं। स्वाभाविक रूप से, मनुष्य मनस के वश में हैं, इसलिए वे उन इन्द्रियों के माध्यम से उस सुख को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। गुरु उन्हें कितना भी समझाएँ, सुख भ्रांति लुप्त नहीं होता, वे सुख प्राप्त करने के लिए धन कमाते हैं, उन सुखों का संचय करते रहते हैं, अपनी शक्ति के अनुसार सभी प्रकार से उनका भोग करते हैं।

शंकराचार्य ने क्या कहा ? वे कहते हैं कि उस सुख को पाने की इच्छा छोड़ दो। अगर तुम विषय-भोगों की आसक्ति छोड़ दोगे, तो तुम अपनी आत्मा में सुख पा सकोगे। लेकिन यह इतना आसान नहीं है, क्योंकि मनस की आदत को तोड़ना बहुत मुश्किल है। मनस मरने को तैयार है, लेकिन अपनी आसक्ति नहीं छोड़ेगा, अगर तुम ना कहोगे, तो नहीं मानेगा, और कोई तुम्हारी बात मानेगा, लेकिन मनस नहीं सुनेगा। अगर मनस की उस इच्छा को दूर करना है, तो मनस का महत्व कम करना होगा, और कोई उपाय नहीं है।

शंकराचार्य ने जो कहा, उसे करने के लिए मन की महत्व ज़रूर कम करनी होगी। उसके लिए दो काम करने होंगे, एक तो खाने के नियमों

का पालन करना होगा, यानी सात्विक शाकाहारी खाना खाना होगा, और दूसरा, ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान तीव्रता से करना होगा। इसके अलावा, मनस की प्रामुख्यता किसी और चीज़ से कम नहीं होगी, और अगर मनस की प्रामुख्यता कम नहीं होगी, तो इंसान उन अनित्य चीज़ों पर यानी इस दुनिया की चीज़ों पर, भ्रांति नहीं छोड़ेगा।

वे उनके दासी हो जाते हैं, और ऐसे काम करते हैं जो नहीं करने चाहिए, वे गलतियाँ करते हैं, पाप करते हैं, और गलत काम करते हैं। आखिर में, वे मुश्किलें लाते हैं। वे आत्मा की सुख की महानता को नहीं जानते। आत्मा की सुख की महानता कब पता चलेगी, यानी जब मनस की प्रामुख्यता कम हो जाएगी। जो लोग आत्मा की उस सुख का स्वाद जान लेते हैं, वे इन प्रापंचिक चीज़ों से अपना लगाव पूरी तरह छोड़ देते हैं।

अगर हम रमण महर्षि और शिरडी बाबा को लें, तो वे चाहें तो इसका अनुभव कर सकते हैं। उनके बहुत सारे शिष्य हैं। उनके पास जो कुछ भी वे चाहते हैं, उसे पाने की संभावना है। क्यों कि उन्होंने आत्मा की सुख की महानता को महसूस किया है, वे जानते हैं कि इन अनित्य चीज़ों से मिलने वाली खुशी बहुत छोटी है। लोग सच में उन्हें पागल समझते हैं, लेकिन उन्हें इसकी परवाह नहीं है। असली सुख का अनुभव करने के बाद, छोटी, अनित्य खुशी की कोई ज़रूरत नहीं रह जाती।

इसलिए कोई कितना भी पा ले, जितना भी पा ले, वे और माँगते रहते हैं। वे हर तरह की मीठी चीज़ें खाते हैं, वे इसे जी भरकर खाते हैं, शाम को फिर से खाते हैं, वे इसे अगले दिन फिर से चाहते हैं। वे जो चाहते हैं वह उन्हें मिल जाता है, वे एक अच्छा घर बनाना चाहते हैं, वे इसे बनाते हैं, वे इसे सजाना चाहते हैं, ए.सी. लगाना चाहते हैं, वे इसे लगाते हैं। फिर भी कोई संतुष्टि नहीं है।

अगर उससे भी बेहतर कुछ है, तो वे इसे फिर से चाहते हैं। वे

एक कार खरीदना चाहते हैं, वे इसे खरीदते हैं, क्या यह उन्हें संतुष्ट करेगी, यानी अगर कोई बेहतर मॉडल है, तो वे इसे फिर से चाहते हैं। इस तरह, इन अनित्य चीजों से कितना भी सुख मिले, वे और भी अधिक चाहते हैं। इसे छोड़ो और आत्मा की सुख पर दृष्टि, और उसे पाने की कोशिश करो, शंकराचार्य जी कहते हैं।

हम सभी यही करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन यह इतना आसान नहीं है। आप दृढ़ता, समर्पण और मेहनत के बिना उस स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकते। बहुत से लोग सोचते हैं कि मैं लंबे समय से ध्यान कर रहा हूं। मैं घंटों ध्यान करता हूँ, और मैं इसे गंभीरता से कर रहा हूँ, लेकिन क्या इन अनित्य चीज़ों से आपका लगाव खत्म हुआ है ? या नहीं ? आपको देखना चाहिए। अगर इनसे आपका भ्रांति नहीं है, या कम होता है, तो मान सकते हैं कि अपनी साधना में तरक्की कर रहे हैं।

क्या मैं साधना में आगे बढ़ रहा हूँ ? या नहीं ? क्या मुझे साधना का फल मिल रहा है ? या नहीं ? यह जानने के लिए, क्या अनित्य चीज़ों से लगाव खत्म हो गया है ? या यह अभी भी है ? यही सवाल है। इसके अलावा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इसे कितने सालों से कर रहे हैं। अगर आप इसे सुनेंगे और इसका एनालिसिस करेंगे, तो आप कई ज़रूरी बातें सीखेंगे। उन्हें एक अलग किताब में लिखना चाहिए, यह आपकी तरक्की के लिए बहुत काम आएगा। महान लोगों के संदेश सामान्य नहीं होते। वे अनुभव से बताए गए संदेश होते हैं।

शंकराचार्य जी की माँ ने कहा कि, बेटा, तुम साधु की तरह क्यों घूम रहे हो ? शादी कर लो, बच्चे पैदा करो और खुश रहने की विनती की। माँ भौतिक स्थिति में थीं, जबकि शंकराचार्य जी आत्मा स्थिति में थे। इसलिए, माँ ने अनित्य चीजें पाकर सुख रहने को कह रही थी। लेकिन शंकराचार्य जी ने शाश्वत आत्मा सुख पाया। इन अनित्य चीजें पर व्यामोह

क्यों होगी ? इसलिए, उन्होंने कितना भी कहा, शंकराचार्य जी नहीं गए।

क्योंकि उनके पास वह अनुभव है, उन्होंने हमें उसके बारे में बताया। लेकिन पत्री जी ने हमें बीच का रास्ता बताया। अगर तुम्हारे पास है, तो उसका अनुभव करो, अगर तुम्हारे पास नहीं है, तो चिंता मत करो। उनके लिए गलतियाँ या पाप मत करो, दूसरों से मुकाबला मत करो, दूसरों के पास जो है उससे दुखी मत हो, जो तुम्हारे पास है उसमें संतुष्ट रहो, दूसरों से अपनी तुलना मत करो, उन्होंने कहा।

पत्री जानते थे कि एक ही बार में शंकराचार्य जी जैसा बनना मुमकिन नहीं है। इसीलिए उन्होंने कहा ''संसार में निर्वाण''। उन्होंने कहा कि संसार में अभ्यास करो, संसार के सुखों का आनंद लो, जितना हो सके संतोष से जियो, और जो सुख मिल सकते हैं उन्हें पाओ, और तीव्र मेहनत करो। खासकर अगर कोई खाने के नियमों का पालन नहीं करता है, तो चाहे कितनी भी साधना क्यों न कर ले, सब बेकार हो जाएगा और सही फल नहीं मिलेंगे।

जब आप खाने के नियमों का पालन करते हुए तीव्र साधना करते है, तो मनस का शुद्धिकरण होता और ज़रूर बदलाव आएगा। ज़रूर, आपके घर के लोग कहेंगे, तुम इतने क्यों बदल गए हो ? जब ऐसी हालत में पहुँच जाता है, तो वह अपने अंदर ऐसे चमकता है जैसे हंड़िया में दीपक। जैसे वह रोशनी ऊपर से नहीं दिखती,लेकिन वह अंदर से चमकती है। इसी तरह, अगर आप रमण महर्षि को देखें, तो वह एक भिखारी जैसे दिखते हैं, लेकिन बाहर के लोगों को उनकी महानता को कैसे पता चलेगा ?

और हज़ारों नहीं, बल्कि लाखों लोग रमण महर्षि के गुलाम और शिष्य बन गए। स्वामी विवेकानंद के आज भी बहुत से शिष्य हैं। उन्हें मानने वाले लोग हैं। युवा, स्वामी विवेकानंद से ज़्यादा प्रभावित हैं। और

हममें से कितने लोग पत्री जी से प्रभावित हुए हैं। इसीलिए ऐसे लोगों की महानता बाहर से नहीं दिखती।

एक बार मैंने पत्री जी के साथ भीमावरम में ही इस चुनावी रैली में गया था। तब मैं उनके साथ कुछ गलियों में घूमा। चलते समय, उन गलियों में किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया। उनके आस-पास के लोगों का व्यवहार नॉर्मल था। मैं हैरान था कि, इतने दिव्य इंसान आने से भी लोग उन पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं ! हम सोचते हैं कि वह बहुत महान हैं, लेकिन गाँव में कोई भी उनकी परवाह नहीं करता।

यही तो, हंडिया में रखा दीपक, होता है। वह कितना भी महान क्यों न हो, कितना भी तेजस्वी क्यों न हो, बाहर से कुछ भी दिखाई नहीं देता। वह भी बाकी सब की तरह साधारण है। उसके अंदर ज्ञान का अपार भंडार कोई नहीं समझ सकता! और शंकराचार्य जी ने इसे बहुत ही शानदार तरीके से समझाया है कि, ऐसे महान लोग हंडिया में रखे दीपक की तरह अपने अंदर चमकते हैं।

इसलिए आप देखिए, एक सत्य साईं बाबा या शिरडी बाबा समाज में कुछ बदलाव लाने, सबको एक संदेश देने का प्रणालिका लेकर आए थे। इसलिए, वह संदेश देने के लिए लोगों को उनके पास आना है। उन्हें सुनने के लिए लोगों को उन पर विश्वास करना है। इसलिए, उन्होंने क्या किया? वे अपनी कुछ शक्ति खर्च करके और कुछ जादू दिखाते थे।

सत्य साईं बाबा विभूति सृष्टि करते, ज्वेलरी सृष्टि करते थे, चेन और छोटी मूर्तियाँ सृष्टि करते थे। ये लोग उनकी तरफ आकर्षित होते हैं। फिर वे झुंड में उनके पास आते, और कहते, अरे, उनके पास बहुत शक्तियां हैं, वे कोई आम इंसान नहीं हैं। और शिरडी बाबा पानी से दीया जलाना, उबलते चावल को अपने हाथों से मिलाना। इस वजह से, बहुत से लोग उनकी तरफ आकर्षित होते थे, और कहते कि उनकी भी बहुत महिमाएं है।

वे ऐसे आने वालों को संदेश देते थे। और सत्य साईं बाबा ने पंच सूत्र सिखाए, जिसमें खास तौर पर दो बातों पर ज़ोर दिया गया, प्रेम और सेवा। पत्री जी ने ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान और सात्विक शाकाहारी खाने पर ज़्यादा ज़ोर दिया। इसलिए, अगर कोई इस लेवल पर आना चाहता है, तो उसे पहले उन दो चीज़ों की आचरण करनी होगी जैसा सत्य साईं बाबा ने कहा था। इसीलिए जो लोग सत्य साईं बाबा को मानते हैं, वे आसानी से इस ध्यान में आ जाते हैं।

इसी तरह, जो लोग मेहर बाबा के रास्ते पर हैं, वे भी ध्यान में आ जाते हैं, क्योंकि यह ध्यान ही आखिरी चरण है। कोई सीधे नहीं आता। उन्होंने उन सभी को करके दिखाया है, लेकिन पत्री जी का क्या कहना है ? वे कहते हैं कि उनमें से किसी की भी ज़रूरत नहीं है। उन्हें यह दिखाना, वह दिखाना और आकर्षण करना नहीं, वे कहते हैं, अपने ज्ञान से आकर्षित करो। तुम्हें अलग वेशभूषा पहनने की भी ज़रूरत नहीं है, तुम्हें चोटी, जूड़ा, भगवा पहनने की ज़रूरत नहीं है। तुम्हें रुद्राक्ष पहनने की ज़रूरत नहीं है, तुम जैसे हो वैसे ही रहो।

अगर तुम जाकर साधारण कपड़ों में क्लास सिखाने लगोगे, तो कौन उसमें जाएगा ! अगर तुम वहाँ जाकर कोई भी क्लास सिखाने लगोगे, तो वे सोचेंगे, ये गुरु हैं क्या! लेकिन जो लोग यह आत्म-ज्ञान सिखाते हैं, वे उन गुरुओं से बेहतर हैं जो अलग वेशभूषा पहनते हैं और हंगामा करते हैं। इसीलिए पत्री जी कहते हैं, अपनी ज्ञान से आकर्षित करो।

इसलिए पत्री जी की पब्लिसिटी धीरे-धीरे बढ़ी है। इसीलिए जो लोग ऐसे जीते हैं, जैसे हंड़िया में दीपक, उनकी रोशनी उनके अंदर ही रहती है लेकिन बाहर नहीं दिखती। इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि तुम उन विद्वानों से बहुत बेहतर हो जो लाखों लोगों को आकर्षित कर सकते हैं। क्योंकि वे ध्यान सिखाते नहीं हैं या ध्यान नहीं करवाते हैं।

::6::

''जिसने आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया है, मोह के सागर को पार कर, राग-द्वेष के राक्षसों को मार कर, तथा शांतिपूर्ण जीवन से आत्मा अनुभव प्राप्त कर, वह ब्रह्मानंद से प्रकाशित होते है।''

शंकराचार्य ने इस संदेश द्वारा हमें सिखाया है कि एक आत्मज्ञानी व्यक्ति का आचरण कैसा होना चाहिए। वे कह रहे हैं कि यह आत्मज्ञानी व्यक्ति मोह रूपी सागर को पार कर चुका है। यहाँ मोह की तुलना सागर से की गई है। यह मोह मनुष्य के अरिशठ वर्गों का एक लक्षण है। ये अरिशठ वर्गों मतलब काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद, मात्सर्य है।

मोह का अर्थ है हर चीज़ का मोह। धन का मोह, संपत्ति का मोह, पद का मोह, यश का मोह, स्वर्ण का मोह। इसी मोह के कारण, इन्हें पाने की चाह में, लोग पाप करते हैं, अधर्म करते हैं। वे जीवन को दु:खमय बना लेते हैं। एक तरह से, इसी मोह में वे जीवन को नष्ट कर देते हैं।

एक अविवाहित पुरुष किसी थोड़ी-सी सुंदर लड़की को देखकर मोहित हो जाता है। एक लड़की किसी सुंदर लड़के को देखकर मोहित हो जाती है। अत्यधिक मोह किसी के पतन का कारण बनता है। यह अज्ञानी का लक्षण है। अज्ञानी को अरिशठ वर्गों नियंत्रण में नहीं होते हैं। लेकिन जो लोग ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, वे इन अरिशठ वर्गों को नियंत्रण में रख लेते हैं।

इस दुनिया में कई अशश्वत चीज़ें हैं, जो बहुत आकर्षक हैं। आप उन्हें जैसे भी देखें, मोहित हो जाते हैं। कई लोगों के लिए, पड़ोस के घरों में होने वाले चीजें चाहिए, साड़ियां की दुकान को देखते ही पागल हो जाते हैं और इसीलिए इस व्यामोह की तुलना समुद्र से की गई है। लेकिन आत्मा ज्ञानी, वह मोह के इस समुद्र को पार कर जाता है, उसने कहा है।

उन्होंने और क्या कहा? एक आत्म ज्ञानी राग-द्वेष नाम के

राक्षस को मारता है। मतलब अपने लोगों से प्यार और दूसरों के लिए नफरत दोनों रहते हैं।

अपने लोगों से वह एक प्रकार से व्यवहार करता है, और दूसरे लोगों से वह दूसरी प्रकार से व्यवहार करता है। यह अज्ञानी व्यक्ति का लक्षण है। लेकिन यदि कोई यह ज्ञान प्राप्त कर ले कि सब कुछ एक है, सब आत्मा हैं, सब कुछ मैं हूँ, और मैं ही सब कुछ हूँ, तो किसी के प्रति या वस्तु के प्रति राग-द्वेष नहीं रहेगा।

जो इस सत्य को जानता है, वही ज्ञानी है। अतः आत्मज्ञानी ही राग-द्वेष नामक इस राक्षस का नाश करता है। यहाँ शंकराचार्य जी ने बताया है कि आत्मज्ञान प्राप्त करने से कितने लाभ प्राप्त होते हैं। जो लोग गुरु बनना चाहते हैं, विशेषकर जो शिक्षा देते हैं, उन्हें ज्ञान की महानता और महत्ता का बोध करना चाहिए।

आप जितना बेहतर ज्ञान समझाएँगे, उतनी ही ज्यादा ज्ञान प्राप्त करने में उनकी रुचि बढ़ेगी। अगर उन्हें ज्ञान प्राप्त करने में रुचि होगी, तो वे ध्यान को ज़्यादा महत्व देंगे। इसलिए, जहाँ भी जाएँ, उन्हें ज्ञान की विशिष्टता और ज्ञान प्राप्ति के लाभों के बारे में समझाएँ।

पत्री जी ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा। चाहे आप कितना भी ज्ञान प्राप्त कर लें, फिर भी सीखने के लिए बहुत कुछ है। उन्होंने कहा कि यह ज्ञान बहुत महान है। इसीलिए, पत्री जी ने हमें बताया कि, शिव अभी भी ध्यान में हैं। इसी तरह, जब कोई क्लास में जाता है जो लोग दूसरे फ़ायदों से ज़्यादा ज्ञान की बातें करते हैं, वे बहुत महान बन जाते हैं। उनसे ऊपर कोई नहीं होता। ऐसे लोगों को कुदरत का भी अच्छा साथ मिलता है।

आत्म-ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है, आत्म-ज्ञान ही सत्य ज्ञान है, इससे परे कुछ भी नहीं है। इसीलिए पत्री जी ने कहा, मूर्तिपूजा मत करो, बल्कि सत्य की आराधना करने को कहा। उन्होंने आत्मा की शरण लेने

के लिए क्यों कहा? क्योंकि जो आत्मा की शरण लेते हैं, अर्थात ''श्वास पर ध्यास'' का ध्यान करते हैं, वही इस ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं, वे बहुत महान बनेंगे।

क्या हम जानते हैं कि शंकराचार्य जी कितनी सारी बातें समझाते हैं? उनकी कही हर बात सत्य है। उन्होंने एक बहुत ही अद्भुत संदेश दिया। उन्होंने कहा कि जिसने इस आत्म-ज्ञान को प्राप्त कर लिया है, उसे मोह के सागर से पार हो जाना चाहिए और राग-द्वेष के राक्षस का वध कर देना चाहिए। यानी ज्ञान प्राप्त करके, मनुष्य उन चीज़ों का त्याग कर देता है जो उसके लिए आवश्यक नहीं हैं और जो हानिकारक हैं।

उन्होंने और क्या कहा? उन्होंने कहा कि वह शांति से ज़िंदगी जीते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें आत्म-साक्षात्कार मिल गया है। यानी आत्मा को देखना नहीं, बल्कि उस आत्मा का अनुभव करना है, और आत्मा का अनुभव करना मतलब समस्त पाया है। जो उस आत्मा का अनुभव करता है, वह ब्रह्मानंद से प्रकाशित होते है।

जब आप ज्ञान प्राप्त किया, तो आप जहां भी जाएंगे, अच्छे से क्लास दे पाएंगे और सबको आकर्षित कर पाएंगे। ऐसा नहीं है कि अगर आप दूसरों को ध्यान सिखाते हैं तो आप मास्टर बन जाते हैं, लेकिन अगर आप दूसरों को ज्ञान सिखा सकते हैं, तो आप मास्टर हैं। आप जितना ज़्यादा ज्ञान बढ़ाएंगे, उतने ही बड़े मास्टर बनेंगे।

जो लोग शॉल ओढ़ाकर सम्मानित रहते हैं, वे सीनियर मास्टर नहीं होते हैं, सीनियर मास्टर वो होते हैं जो ज्ञान सिखा सकें।

जब आप ज्ञान सिखाएँगे, तो ज्ञान की आकांक्षा रखने वाले लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे। बहुत कम लोगों में ज्ञान की आकांक्षा होती है, इसलिए वे बिना किसी प्रयास के इन कक्षाओं में नहीं आते। इसलिए स्त्री हो, या पुरुष हो, तुम्हारे पास पैसा हो या न हो, अगर उनमें ज्ञान की

आकांक्षा होगी, तभी वे तुम्हारे पास आएंगे। वरना वे नहीं आएंगे।

हमारे पास आने वाले सभी लोग ज्ञान की आकांक्षा वाले होते हैं। इसीलिए जब हम ज्ञान की बातें करते हैं, तो वे बड़े आसक्ति से सुनते हैं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि जिनमें ध्यान की आकांक्षा है, यानी जो तीन सौ जन्म पार कर चुके हैं, और जिनमें ज्ञान की आकांक्षा है, वो तीन सौ पचास-तीन सौ साठ जन्म पार कर चुके हैं।

आत्म-ज्ञान प्राप्त करने वाले लोग हर चीज़ पर विजय पा लेते हैं। वे सब कुछ अपने नियंत्रण में रखते हैं। जैसे लोहा चुम्बक की ओर आकर्षित होता है, वैसे ही ज्ञान में रुचि रखने वाले सभी लोग उस ज्ञान को सिखाने वालों की ओर आकर्षित होते हैं। इसीलिए पत्री जी ऐसे लोगों के लिए यात्रा करते थे। जब भी उन्हें कहीं कोई क्लास आयोजित करनी होती, तो वहाँ के मास्टरों उस आस-पास के गांवों में जाते और बहुत से लोगों को इकट्ठा करने की पूरी कोशिश करते हैं। वे खूब जश्न मनाते, यह सोचकर कि अगर वे 1000 से 1500 लोगों को इकट्ठा कर लेंगे तो पत्री जी बहुत खुश होंगे।

लेकिन, चाहे कितने भी लोग आएँ, पत्री जी को ज़्यादा फ़र्क़ नहीं पड़ता, उसे तो बस ज्ञान में रुचि रखने वाले चाहिए। क्योंकि दुनिया का भला करने, दुनिया का भला करने की रुचि सिर्फ़ ज्ञानी लोगों में होती है, लेकिन अज्ञानियों में नहीं, जिनके पास ज्ञान में रुचि नहीं है, उनके पास नहीं। इसलिए अगर वे यहाँ आते भी हैं, तो कोई फ़ायदा नहीं करते, ऐसे लोग हमेशा अपने फ़ायदे में लगे रहते हैं। लेकिन जिनके पास ज्ञान आसक्ति है, वे इसमें आएंगे तो त्याग की भावना से रहेंगे और दुनिया का बहुत भला करैंगे, इसीलिए पत्री जी ऐसे लोगों को ढूंढते थे।

वह पूरी ताकत से उन्हें देखते और पता लगाते। मैं देखता था, वह कुछ लोगों को खास तौर पर बुलाकर बिठाते थे, और अगर कुछ लोग पास आते भी थे, तो उन्हें डांटकर भगा देते थे। बाद में मुझे समझ आया कि

ओह.. यह इंसान बहुत विकसित आत्मा है, इसकी वजह से दुनिया का कुछ भला होगा । इसीलिए वह उसे बुलाने और पास बिठाने के लिए इतने उत्सुक रहते थे। इसी तरह, जो अपने फायदे के लिए आता है, वह किसी के काम का नहीं होता, इसलिए उसे भगा दिया जाता था।

और बदलाव हर किसी के साथ एक बार में नहीं आता, यह धीरे-धीरे आता है। जैसे-जैसे आप करेंगे, आप अपनी सारी कमियां दूर करेंगे, अपनी सारी अलक्षणों दूर करेंगे, और परिपूर्ण बनेंगे। आप अपना स्वार्थ छोड़कर दुनिया की भलाई के लिए बहुत मेहनत करेंगे, और प्रकृति आपके काम से बहुत खुश होगी, इतना ही नहीं, वह हर मामले में आपका सहयोग भी देगी। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या करते हैं। सिर्फ़ आध्यात्मिक तौर पर ही नहीं, बल्कि प्रापंचिक मामलों में भी, आप जो भी मन में ठान लेंगे, उसमें आपको आशीर्वाद मिलेगा।

जैसे-जैसे आप इस रास्ते पर ज्ञान हासिल करेंगे, दूसरों का भला करने की इच्छा अपने आप में बढ़ती जाएगी। आपका जाना, यानी शरीर छोड़ना भी बिस्तर पर लेटने और उसे अपने साथ ले जाने जैसा नहीं होगा। आप अपना काम संभालते हुए जाएँगे। आपको ज्ञान मिल गया है, इसलिए आपके सहायकों के साथ तुरंत चले जाएँगे, महान लोकों में ले जाया जाएगा, और आपको महान लोगों के सांगत्य मिल जाता है, और अगला जन्म भी तुम्हारे लिए अच्छा होगा।

अब तुमने करने वाले मेहनत बेकार नहीं होगी। इस मार्ग में तुमने जो मेहनत की है, वह तुम्हारा भविष्य बहुत बढ़िया बनाएगी। पत्री जी कहते हैं, 'जो जितना करता है, उतना बड़ा फल पाता है'। लेकिन यह ज्ञान हर कोई नहीं समझते हैं।

इसलिए, आत्मा ज्ञानी मोह के सागर को पार कर जाता है, राग-द्वेष के राक्षस को मार डालता है, शांति से जीवन जीता है, आत्म का अनुभूति पाता है और ब्रह्मानंद से प्रकाशित होते है।

शंकराचार्य जी, पत्री जी, वशिष्ठ महर्षि, श्री कृष्ण, मैडम ब्लावाट्स्की, मुम्मिडिवरम बालयोगी और कई सारे महान लोगों, योगियों और योगीश्वरों ने आत्मा ज्ञान की महानता के बारे में बताया है। यह बोध किया है कि आत्मा ज्ञानि दुनिया में सब से महान है, और इसलिए हर किसी को आत्मा ज्ञानी बनने को बोध किया गया है ।

आत्मा ज्ञान के बारे में बात करने का मतलब है आत्मा के बारे में बात करना, आत्मा की महानता के बारे में बताना। अगर आप ध्यान दें, तो जो लोग हमारे जूम पर आते हैं, जो लोग भीमावरम आते हैं, वे कुछ दिनों तक आ सकते हैं। फिर वे आ नहीं पाते।

इसका मुख्य कारण यह है कि इसे कितनी भी बार सुना हो, कुछ नया सुनना, कुछ नया जानना अच्छा है के भाव में रहना। लेकिन अगर आप यह जान सकते हैं कि आत्मा से, आत्मा ज्ञान से बड़ा कुछ नहीं है, तो फिर यह सवाल ही नहीं उठता कि हर बार यह वही है या नहीं। अगर आप सच में आत्मा ज्ञान के बारे में सुनना या जानना चाहते हैं, तो आपको हमारे जूम पर आना चाहिए। हम कई बातें कई एंगल से और कई तरीकों से सिखाते हैं।

जो लोग जानते हैं कि इससे महान कोई रास्ता नहीं है, वे भी यही बात कहते रहते हैं, यह बहुत अजीब है। यह रास्ता कितना महान है, यह आम नज़रिए से समझ में नहीं आता, क्योंकि दुनिया में दो तरह के रास्ते हैं

1) कर्म का मार्ग, 2) ज्ञान का मार्ग

1) कर्म का मार्ग:- कर्म का मार्ग चींटी जैसा है, कर्म के मार्ग को प्रापंचिक मार्ग कहते हैं, कर्म के मार्ग का संबंध शरीर से है। इस कर्म के रास्ते को चींटी जैसा क्यों कहा जाता है ? चींटी सिर्फ़ ज़मीन पर, आस-

पास जो है, वही जान सकता है, उससे ज़्यादा वह नहीं जानता या समझता।

2) ज्ञान का मार्ग:– ज्ञान का मार्ग एक पक्षी की तरह है, ज्ञान के मार्ग को आध्यात्मिक मार्ग कहते हैं, ज्ञान का मार्ग आत्मा से संबंधित है। एक पक्षी सिर्फ़ धरती पर ही नहीं बल्कि आसमान में भी उड़ सकता है, यानी वह जान सकता है कि आसमान में क्या है।

जो लोग कर्म करते हैं, वे कर्म के मार्ग पर चलते हैं। वे कर्म करते रहते हैं, कर्म बढ़ाते जाते हैं, और जैसे–जैसे वे कर्म बढ़ते हैं, उनकी मुश्किलें भी बढ़ती जाती हैं। जो लोग इस कर्म के मार्ग पर जीते हैं, कुछ जन्मों के बाद, मुश्किलें बढ़ने से वे उलझन में पड़ जाते हैं। उन्हें दुख होता है कि ज़िंदगी ऐसी क्यों हो गई है ? और पता नहीं चलता कि बाहर कैसे निकलें। जिनकी कोई नहीं होती, वे भगवान को ही अपनी समझते हैं और अपनी पसंद के देवताओं की शरण लेते हैं, लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि भगवान क्या है, और न ही भगवान कौन है।

लेकिन जैसे एक पक्षी सिर्फ़ धरती पर ही नहीं, बल्कि आसमान में भी कैसे उड़ सकता है! आसमान की चीज़ों को भी जान सकता है, वैसे ही जो लोग इस ज्ञान के मार्ग पर हैं, जो ज्ञान प्राप्त किया है, वे न सिर्फ़ धरती पर क्या है, बल्कि जो आँखों से नहीं दिखाई देने वाले लोकों में क्या है यह भी जान सकते हैं। कितने तरह की लोकों होते हैं ? उन लोकों में कौन है ? वह सब कुछ जानेगा।

धरती पर रहने वाली हर आत्मा कुछ सालों बाद अपना शरीर छोड़कर उन अनदेखी लोकों में पहुँचती है, जहाँ वे और ज़्यादा सीखेंगे। न केवल उस लोक में रहने वाले, और उस लोक में क्या होता है, बल्कि धरती पर किए गए अपने कर्मों को भी देख पाएँगे। वहाँ की ज़िंदगी धरती की ज़िंदगी से बहुत अलग लगेगी, और यह हैरानी की बात होगी। जब वे

धरती पर होंगे, तो उन्हें लगेगा कि वही ज़िंदगी है। मौत के बाद जब तुम चले जाओगे, तो तुम्हें पता चलेगा। अरे, भूमि पर ज़िंदगी ही सब कुछ नहीं है, जानने के लिए और भी बहुत कुछ है।

लेकिन जो लोग ज्ञान के इस मार्ग पर चलेंगे, वे धरती पर रहते हुए यह सब जानेंगे और समझेंगे, हैरान होंगे। जब उन्हें पता चलेगा कि यह सब होता है! वे अपनी ज़िंदगी में करने वाले गलतियां को समझ कर, उनमें बहुत बदलाव आएगा ।

कर्म के मार्ग पर चलने वालों की ज़िंदगी इस ज्ञान के मार्ग पर आने के बाद पूरी तरह बदल जाएगी। मौत के बाद की ज़िंदगी के बारे में जानने के बाद उनका व्यवहार, और वे जो काम करेंगे, वे अलग होंगे। आप सबकी ज़िंदगी वैसी ही होगी। अगर तुम अभी इस मार्ग पर अपनी ज़िंदगी, अपने परिवार, अपने माता-पिता और रिश्तेदारों की ज़िंदगी को देखो, तो हैरान हो जाओगे।

हमारे मामले में भी यही हुआ। हमारे लोग सब कुछ नहीं जानते। हम उन्हें बताने की कोशिश भी करें, तो वे समझते नहीं हैं! उन्हें यह बातें समझने केलिए उन्हें 50, 100 और जन्म लेने होंगे, का विषय हमें समझ आया है।

शारीरिक रूप से तो सब कुछ एक जैसा लगता है, लेकिन आत्मा के मामले में फर्क होता है। हम सब ने कई जन्म लिए हैं और यह सब सीखा है! इसीलिए उनकी ज़िंदगी और हमारी ज़िंदगी एकदम अलग है। क्योंकि ज्ञान अनंत है, हम कितना भी सीख लें, फिर भी सीखने के लिए और भी बहुत कुछ है। इस अनंत ज्ञान को हर योगी अपने तरीके से समझाता है।

इसलिए ऐसे महान लोगों के संदेशों को हमें सीखकर अपना

ज्ञान बढ़ाना चाहिए, अपने व्यवहार में अपनी गलतियों को सुधारना चाहिए, और ध्यान रखना चाहिए कि हमें नष्ट नहीं होता है। हम इस दुनिया में कितना भी सीखें, कितना भी हासिल करें, और कितना भी कमा लें, सब कुछ बेकार है। हम कितना भी हासिल कर लें, ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमारे हैं , और ऐसा कोई नहीं है जो हमारे हैं। जो है उसे महत्व देना चाहिए, लेकिन जो नहीं है उसे इतना महत्व क्यों देना है ?

जो है उसे महत्व देनेवाले लोग भाग्यशाली और महान हैं। आप अभी यही कर रहे हैं। जब आप अपना शरीर छोड़कर ऊपर लोकों में जाएंगे, तो आप यह बात अच्छी तरह समझ जाएंगे। आप बहुत महान लोकों में पहुंचेंगे, और वहां आप और भी बहुत सी महान विषयों जानेंगे। यहां यह ज्ञान प्राप्त करके, आप समझ जाएंगे कि आप वहां कितना महान स्थिति पाएंगे।

यहां यह जन्म कितना भी महान क्यों न हो, आपको अगले जन्म के अनुभवों के लिए, पाठों सीखने के लिए एक और साधारण जन्म लेना होगा। इसलिए, आपको यह जान लेना चाहिए कि वर्तमान जीवन शाश्वत नहीं है।

इसलिए ज्ञान के मार्ग पर चलकर तुम इस लोक और पर लोक के बारे में बहुत कुछ जानोगे और सीखोगे। कर्म के मार्ग पर कर्म कर रहे हैं, इसलिए वे थोड़ा ही जान पाते हैं।

::8:::

हम आत्म-ज्ञान प्राप्त करने वालों के प्रवर्तन के बारे में जान रहे हैं। और आप सभी प्रतिदिन ध्यान करके, पुस्तकें पढ़कर और आत्म-ज्ञान के संदेश सुनकर ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। आप अपने द्वारा अर्जित ज्ञान को सभी के साथ साझा करने का भी प्रयास कर रहे हैं, और इसके लिए आप बहुत मेहनत भी कर रहे हैं। भीमावरम क्लास में आ रहे हैं ।

जब आप इन सभी तरीकों से प्रयास करते हैं, तो आपका ज्ञान अनजाने में ही बढ़ता है। आपको इसका एहसास भले ही न हो, लेकिन यह ज़रूर बढ़ रहा है। आपने जो किया है वह व्यर्थ नहीं है। आदि शंकराचार्य जी बताते हैं कि जब ज्ञान बढ़ता है और पराकाष्ठा पहुँचता है, तो क्या होता है। इसलिए अगर हम इन सभी बातें जानेंगे, तो आपको समझ आएगा कि आप किस अवस्था में हैं।

कई लोगों के मन में शंकाएँ होती हैं, कि मैं ध्यान तो कर रहा हूँ, लेकिन क्या मैं सचमुच बदल गया हूँ ? या नहीं ? मैं किस स्तर तक आगे बढ़ा हूँ ? लेकिन हो सकता है कि पूरी तरह से बदलाव न हो, लेकिन बदलाव ज़रूर होगा। इसीलिए एक गुरु की ज़रूरत होती है। गुरु के सहयोग के बिना विकास करना बहुत मुश्किल है।

मेहर बाबा ने भी स्पष्ट रूप से कहा था कि सद्गुरु की सहायता अत्यंत आवश्यक है। सद्गुरु वह होता है जिसके पास अनुभव और ज्ञान होता है। आपका आत्म-अभ्यास आपको कुछ हद तक आगे बढ़ा सकता है और फिर रुक भी सकता है, लेकिन सद्गुरु की सहायता से आप निरंतर बढ़ते रहेंगे। यदि आप श्रद्धा से करें , तो इसमें कोई संदेह नहीं कि आप इसी जन्म में पराकाष्ठा पहुँच जाएँगे।

आप संसार में हों, समस्याओं में हों, आप पर ढेरों ज़िम्मेदारियाँ हों, अगर आप अपने प्रयास जारी रखेंगे तो आप आगे बढ़ते रहेंगे। लेकिन

कभी निराश न हों, क्योंकि भगवान कृष्ण के संदेश ''यद्भावं तद्भवति'' के अनुसार, आपकी भावनाएँ हमेशा ऊंची और विशाल होने चाहिए।

पत्री जी से परिचय होने के बाद, मेरे मन में भी ऐसी ही ऊँची भावनाएँ आने लगीं। मैं उनसे बड़ा क्यों नहीं हूँ ? क्या वे सीनियर मास्टर हैं ? मुझे लगता था कि मैं उनसे सीनियर मास्टर बन जाऊँगा। मैं कभी निराश नहीं हुआ, मैं कभी रुका नहीं। और मैं निश्चित रूप से सबसे आगे लेवल तक पहुँच पाया। आप भी निराश नहीं होना चाहिए, पीछे नहीं हटना चाहिए, रुकना नहीं चाहिए, चलते रहना चाहिए, क्यों नहीं बनेंगे !

पत्री जी भी कई मौकों पर मुझे डाँटते थे। लेकिन मैं निराश नहीं हुआ। उन्होंने मेरी गलती सुधारी, और मैं यह तय कर लिया था कि मुझे इसे दोबारा नहीं दोहराना है, और ऐसा कई मौकों पर हुआ। मैं जानता हूँ कि पत्री जी बहुत ज्ञानी, अपार ज्ञानी और अनंत ज्ञान संपन्न इंसान हैं। मैंने कई गुरु देखे हैं, कई संदेश सुने हैं, और गुरुओं की कई किताबें पढ़ी हैं, लेकिन किसी ने मुझे ऐसा ज्ञान नहीं सिखाया।

हर कोई ज्ञान की बात करता है, और उन्हें लगता है कि उनके पास यही है। लेकिन सिर्फ़ पत्री जी ने ही हमें उस ज्ञान को अनुभव करने की सही साधना दी है। इसीलिए मेरे मन में उनके लिए इतनी गौरव भाव है।

अजीब क्या है ? पत्री जी के मार्ग में आने के बाद भी, सबने यह ''श्वास पर ध्यास'' जो उन्होंने कहा था, छोड़कर और उसके बजाए गए संगीत पर ध्यास कर रहे हैं। यानी, गुरु होने के बावजूद, वे उसके साधना को नहीं समझ पाए। मैंने खुद से कई बार यह सवाल पूछा कि उन्होंने उनसे ऐसा क्यों करवाया। तब मुझे समझ आया कि यह एक परीक्षा था जो पत्री जी ने हम सभी को दिया था। हम सब उस परीक्षा में सफल हो गए। इसलिए हम सब बहुत भाग्यशाली हैं।

::9::

''जिस प्रकार भ्रमर के कारण कीड़ा भ्रमर बन जाता है, उसी प्रकार मुक्त आत्मा आत्मज्ञान प्राप्त करके पूर्व शरीर से संबंधित गुणों को त्याग देती है, तथा सच्चिदानंद स्वरूप होकर ब्रह्म का निरंतर चिंतन करके ब्रह्म हो जाती है।''

इसका मतलब है कि वह भगवान बन रहा है। वह सह-सृजनकर्ता बन रहा है। हम सभी भ्रमर-कीडे की कहानी जानते हैं। भ्रमर एक कीड़े को अपने घोंसले में रखता है, और घोंसला मे ऐसे गुनगुनाता है। कीट भ्रमर की गुनगुनाहट के अलावा और कुछ नहीं सुनता। सुनते-सुनते, सुनते-सुनते, वह भी भ्रमर बन जाता है और घोंसले से बाहर उड़ जाता है।

इसी प्रकार, जो लोग इस ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान का तीव्र अभ्यास करते हैं और आत्म-ज्ञान प्राप्त करते हैं, वे अंततः जीवन मुक्त हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि यदि वे जीवन मुक्त हो गए, तो उसके बाद और कुछ नहीं है, और वे सोचते हैं कि जीवन मुक्ति मृत्यु के बाद मिलती है। लेकिन जीवन मुक्त होने का अर्थ है कि वे जीवित रहते हुए ही उस मुक्त अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं। आप संसार में रहते हैं, हर तरह के कार्य करते हैं, लेकिन ज्ञान प्राप्त करके, आप उस मुक्त अवस्था को प्राप्त करते हैं।

जिन्हें ऐसा आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता है, वे उस शरीर में पहले से विद्यमान सभी गुणों का त्याग कर देते हैं। यदि वे तीव्र अभ्यास करें, तो वे उन गुणों का अवश्य ही त्याग कर देंगे। तमोगुण, रजोगुण और अंततः सत्वगुण का भी त्याग करके, वे सच्चिदानन्द स्वरूप की तरह, निरन्तर आनन्द की स्थिति में रहेंगे।

जब आप उस परमानंद की अवस्था को प्राप्त कर लेंगे, तो

जीवन में चाहे कुछ भी हो जाए, आप दुखी नहीं होंगे, आप खुश रह पाएँगे। अगर आप उस अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं, तो आप गुणों से परे हो जाएँगे। आप संसार में सब कुछ देखते हैं, लेकिन किसी भी चीज़, चाहे वह राग हो या द्वेष, अहंकार ममकार नहीं रहेगा और नित्य आनंद स्थिति अनुभव करते हैं।

उस अवस्था में, निरंतर ब्रह्म का चिंतन होता है, अर्थात ध्यान केवल भगवान पर केंद्रित होता है। जीवन ऐसे चलता रहता है वही संसार हो, जहाँ भी जाओ, वापस उसी में आ जाते हो, कुछ भी करो, यह फिर वही है। अंततः, जैसे एक कीड़ा भ्रमर बन जाता है, वैसे ही तुम भी ब्रह्मं बन जाओगे।

क्या संकेत है कि कोई ध्यान के पराकाष्ठा पहुँच गया है ? अगर उन्हें समय मिल जाए, तो वे अपनी आँखें बंद करने का मन करते हैं। वे काम करना बंद नहीं करते, वे काम करते हैं, लेकिन अगर उन्हें थोड़ी सी समय मिलती है, चाहे वह 10 मिनट की हो या आधे घंटे की, वे अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। जैसे ही वे अपनी आँखें इस तरह बंद करते हैं, कुछ ही मिनटों में वे ब्रह्मं की स्थिति में रहते हैं, वे आनंद की स्थिति में रहते हैं। यही ध्यान में लीन होने का अर्थ है, यही आपका संकेत है। इसलिए, यदि आपको समय मिलती है, तो बाहरी चीजों पर ध्यान केंद्रित न करें, बल्कि ब्रह्मं पर ध्यान केंद्रित करें। चाहे आपने कितने भी जन्म लिए हों, आपने कितने भी संसार किए हों, आपने कितने भी जन्मों में कितनी भी ज़िम्मेदारी निभाई हो, सभी को अंततः ब्रह्मं बनना ही है।

बाहर भगवान की सृष्टि है, भीतर स्वयं भगवान हैं। यदि बाह्य ध्यान बढ़ता है, तो दुःख बढ़ता है, यदि आंतरिक ध्यान बढ़ता है, तो सुख बढ़ता है। इसके लिए भगवान का कृपा आवश्यक है, उसी कृपा से आपको

गुरु मिलेंगे, उसी गुरु के माध्यम से आप उस अवस्था को प्राप्त करेंगे। भगवान का कृपा तभी होती है जब आपकी रुचि भगवान में हो।

भगवान ऐसा कोई निर्णय नहीं लेता जो आपकी राय के विपरीत हो। जब आप बाहर की चीज़ों पर ध्यान देते हैं, दुनिया या बच्चों जैसी बाहरी चीज़ों में दिलचस्पी रखते हैं, तो वह ऐसा कोई फ़ैसला नहीं लेते जो आपके फ़ायदे के ख़िलाफ़ हो। वह आपसे कहते हैं कि आप मज़े करें, अपनी इच्छाएँ पूरी करें।

चाहे आप कितने भी जन्म लें, जब आप उन पर ध्यान देना शुरू करेंगे, तो आपको उनकी कृपा मिलेगी। फिर, उनकी कृपा से, आपकी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी और आपके लिए एक अच्छा माहौल बनेगा, यही उनका सहयोग है। वह आपकी तपन के बिना, सब कुछ अपने हिसाब से कैसे कर सकते हैं ? सिर्फ़ अगर आप तपन करेंगे, सिर्फ़ अगर आप कोशिश करेंगे, तभी आपको भगवान की कृपा या गुरु की कृपा मिलेगी। हर किसी की ज़िंदगी में परेशानियाँ और ज़िम्मेदारियाँ होती हैं, और वे उनके बिना नहीं हैं। अगर आप उन्हें परवाह नहीं करेंगे, तो आपको निश्चित रूप से कई जन्मों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

::10::

''जिस प्रकार कोई जानता है कि हंडिया आदि मिट्टी के बने हैं, उसी प्रकार, जिसे आत्म-ज्ञान है, वह जानता है कि यह संपूर्ण जगत आत्मा है, तथा इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसके अलावा, वह यह जानकर जीता है कि जो संपूर्ण जगत दिखाई दे रहा है, वह उसकी आत्मा ही है।''

कई तरह के हंडिया, बर्तन, कड़ाही, सुराही वगैरह होते हैं। हम सब जानते हैं कि ये सब मिट्टी से बने होते हैं। फिर इंसानों को क्या जानने की ज़रूरत है ? जैसे सभी बर्तन मिट्टी से बने होते हैं, वैसे ही इस दुनिया में हम जो कुछ भी देखते हैं, वह आत्मा से बना है।

यह बात वे जानते हैं जिन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया है, अर्थात जो आत्मा के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। यदि वे नहीं जानते, तो वे सोचते हैं कि सब कुछ अलग है, सब कुछ भिन्न है। पशु, पक्षी, कीड़े-मकोड़े, जलचर, वे सोचते हैं कि सब कुछ अलग है। लेकिन जैसे अनेक प्रकार के हंड़िया होते हैं, वे एक ही मिट्टी से कैसे बने हैं , वैसे ही सृष्टि में 84 लाख प्रकार के जीव, ये लोक, अर्थात चर और अचर, सभी आत्मा से उत्पन्न हुए हैं, यह बात आत्मा ज्ञानी जानता है, शंकराचार्य जी ने कहा है।

अब, अगर हम अभी भी अलग अलग होने के भाव में हैं, तो इसका मतलब है कि हमें अभी आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है। बहुत से लोग कुछ समय ध्यान करके समझते हैं कि उन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया है। क्या उन्हें सचमुच ज्ञान प्राप्त हुआ है ? या नहीं ? वे किस अवस्था में हैं ? हमें कैसे पता ? यानी जो लोग शंकराचार्य द्वारा बताए गए संदेशों को सुनते हैं, और उसी के अनुसार आचरण करते हैं, उनकी साधना का फल अच्छा मिलता है।

इसके अलावा, चाहे आप कितना भी साधना करें, अगर आप उनके कहे अनुसार आचरण नहीं करते, तो आपको समझना चाहिए कि आपके पास अभी भी कोई ज्ञान नहीं है। और मनुष्यों के बीच हम कई तरह के अंतर देखते हैं, कोई अलग जाति का है, कोई अलग परिवार का है, कोई अलग धर्म का है, कोई अलग क्षेत्र का है, वो पुरुष है, ये महिला है। जब तक आप ऐसे हैं, तब तक आप अज्ञानता में हैं, आपको आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है।

क्योंकि न केवल सभी जीवों की उत्पत्ति आत्मा से होती है, बल्कि वह अनंत आत्मिक ऊर्जा भी सभी जीवों में रहती है और उनका चलाती है। इसीलिए यदि आत्मा शरीर से निकल जाए, तो शरीर मृत हो जाता है, लेकिन आत्मा को रहने पर ही शरीर जीवित रहता है।

आप भगवद्गीता में देखिए...

अह मात्म गुडाकेशा सर्वभूताशयस्थितः।

अहमादिश्च मध्यंच भूताना मन्त एव च ।। (भ.गी.10-20)

तात्पर्यः- हे अर्जुन! मैं ही समस्त प्राणियों में स्थित आत्मा हूँ। तथा मैं ही प्राणियों का आदि मध्य और अंत हूँ।

अर्थात, इस सृष्टि की रचना से पहले केवल एक ही चीज़ थी, वही अनंत शक्तिशाली आत्मा। आत्मा के अलावा और कुछ नहीं है। उसी आत्मा से पाँच तत्वों की रचना हुई। उन्हीं पाँच तत्वों से ये लोक और चौरासी लाख जीव-जंतु उत्पन्न हुए।

यह सब कहीं और से बनाकर नहीं लाया गया, यह सब आत्मा से आया है। आत्मा ने न केवल इन जीवों के शरीर बनाए, बल्कि आत्मा ने ही इन जीवों में अपनी ऊर्जा का संचार करके इन शरीरों को क्रियाशील बनाया। इसी ऊर्जा के कारण ये जीव जीवित हैं। अर्थात, क्योंकि आत्मा

हम सभी के शरीरों में है, इसलिए हम अब बात कर रहे हैं, खा रहे हैं, देख रहे हैं और बहुत कुछ कर रहे हैं।

अर्थात यदि आत्मा इस शरीर को छोड़ दे, तो यह शरीर शव बन जाता है, आंखें देख नहीं सकतीं, कान सुन नहीं सकते, मुख बोल नहीं सकता, हाथ-पैर काम नहीं करते, मृत शरीर को ले जाकर दाह संस्कार कर दिया जाता है। इसका अर्थ है कि आत्मा होने पर ही कोई जीव जीवित रह सकता है, आत्मा के बिना कुछ लुप्त हो जाता है।

इसलिए, किसी वस्तु का आकार देखकर उसे अलग समझना अज्ञानता है। जब तक यह अज्ञानता रहेगा, तब तक नफ़रत, ईर्ष्या, एक-दूसरे की हत्या, झगड़े, लड़ाई-झगड़े, दुश्मनी, युद्ध, ये सब होते रहेंगे। पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, यहाँ तक कि समुद्री जीव-जंतुओं को भी अलग दिखने की नीयत से मारकर खाया जाता है। लेकिन ये सब आत्मा से ही आया है।

आप जब तक अलग होने की स्थिति में रहेंगे, उतनी देर तक आप अज्ञानता में ही रहेंगे। बहुत से लोग कहते हैं कि उन्हें आत्म-ज्ञान प्राप्त हो गया है। ऐसा नहीं है कि उन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया है, बल्कि उनके व्यवहार से यह पता चलता है। और अगर आप समाज पर नज़र डालें, तो आप देखेंगे कि कुछ लोग दूसरों को पसंद नहीं करते, कुछ लोग दूसरों को बर्दाश्त नहीं कर पाते, कुछ लोगों को लगता है कि वे दूसरों से श्रेष्ठ हैं। उनकी मंशा होती है कि उन्हें दूसरों से श्रेष्ठ होना चाहिए।

पत्री जी कहते हैं कि क्लास में बच्चे परीक्षा देते हैं और सोचते हैं कि उन्हें बाकियों से पहले आना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं सोचना है कि वे ही पहले आना चाहते हैं। वे कहते हैं कि वे भी पहले आना चाहने हैं, कि वे भी पहले आने वालों में से एक बनना चाहने हैं। ''मैं आत्मा हूँ''

के स्तर पर रहने वाला व्यक्ति ऐसा ही महसूस करता है।

यदि आपको ऐसा महसूस होगा कि सब कुछ अलग है, तो आपको ऐसा लगेगा कि आपको शीर्ष पर रहना है और बाकी सभी से बेहतर होना है।

अगर आप गौर करें, तो जो लोग इस रास्ते में आए हैं, वे अब भी अलग होने का एहसास लेकर व्यवहार करते हैं। वे पत्री जी द्वारा बताई गई सेवाएँ कर रहे हैं, किताबें पढ़ रहे हैं, ध्यान कर रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं, लेकिन उनके व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आता, मानो वे तभी विकसित हुए हैं जब वह बदलाव आया है।

हमें इस बात की परवाह करने की ज़रूरत नहीं है कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं। जब हम इतनी साधना करके आगे बढ़ रहे हैं, तो हमें ज़रूर उस तरह के व्यवहार के साथ जीना चाहिए। जब तक मन का असर है, सब कुछ अलग-अलग लगता है। लेकिन जब आप मन का असर कम करते हैं और आत्मा का असर बढ़ाते हैं, और आत्मा की स्थिति में जीते हैं, तो सब कुछ बदल जाता है, ऐसे जीते हैं जैसे सब एक हैं।

तो क्या हुआ अगर ऐसा है? क्या मैं अपनी पत्नी के साथ रह सकता हूँ? क्या मैं अपने नौकर से काम करवा सकता हूँ? कुछ लोग पूछते हैं। इसीलिए वशिष्ठ महर्षि ने क्या कहा? ''बाहर द्वैत है, अंदर अद्वैत है।'' जो लोग उस स्थिति तक पहुँच गए हैं, जो समझते हैं कि सब कुछ एक है, बाहर से वे ऐसे जीते हैं जैसे मेरी पत्नी अलग है और मैं अलग हूँ। लेकिन अंदर से उन्हें यह एहसास होता है कि दोनों एक हैं।

एक असली आत्मज्ञानी व्यक्ति का व्यवहार ऐसा ही होना चाहिए। इसलिए शंकराचार्य जी ने क्या कहा? जिन्होंने आत्मज्ञान पा लिया है, उनके लिए यह पूरी दुनिया आत्मा है, सब कुछ आत्मा है, लेकिन यह

अलग-अलग दिखाई देता है, लेकिन कुछ भी अलग नहीं है। वे थोड़ी देर इधर-उधर भागते हैं और फिर दिखाई नहीं देते। देखो। वहाँ कौन है ? क्या तुम्हारे पिता वहाँ हैं ? क्या तुम्हारे दादा वहाँ हैं ? क्या तुम्हारे परदादा वहाँ हैं ? क्या तुम रहोगे ? कौन है ?

लेकिन तुम ऐसा व्यवहार कर रहे हो जैसे तुम यहीं रह जाएंगे, इसीलिए तुम्हें यह सब पता होना चाहिए। भले ही इस सोसाइटी में आकर मेडिटेशन करते हैं, जो लोग तुम्हारे पास नहीं आते, जो लोग इन मैसेज को नहीं सुनते, वे फायदे की उम्मीद करेंगे, वे डींगें हाँकते हैं कि उन्हें वो शक्तियां मिल गई हैं, उन्हें वो अनुभव हुए हैं, वे सोचते है कि ध्यान करने से वही मिलेगा। लेकिन अगर तुम मेडिटेशन की पराकाष्ठा पर जाओगे, तब जानोगे कि मैं ही सब कुछ हूँ और सब कुछ मैं ही हूँ।

इसलिए, कोई भी अलग-अलग नहीं है। वह अनजाने में वैसा ही व्यवहार किया, वह उसे अगले 50 या 100 जन्मों में पता चलेगा। आप जब समझ गए हो, तो चाहे वो कैसा भी व्यवहार करे, तुम्हें वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। पति-पत्नी में भी तो कहते हैं, ''मेरा पति मेरी बात नहीं मानता, मेरी पत्नी मेरी बात नहीं मानती।'' वह कैसे सुनेंगे ? तुम तो 350 जन्म पार कर चुके हो, और वो तो अभी 150, 200 जन्मों में ही पड़े हैं। उनका व्यवहार तुम्हारे जैसा कहाँ होगा ?

वे बिना समझे ऐसा व्यवहार कर रहे हैं। आप झगड़ा या बहस नहीं करना हैं। क्योंकि आप ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, इसलिए आपको यह समझना चाहिए, और निश्चित रूप से सभी को इसी जीवन में उस स्तर तक पहुँचना चाहिए। जब आप अपनी साधना को तीव्र करेंगे और आहार-नियमों का पालन करेंगे, तो मन का महत्व कम होता जाएगा। जैसे-जैसे मन का महत्व घटेगा, आत्मा का महत्व बढ़ता जाएगा, और जैसे-जैसे

आत्मा का महत्व बढ़ता जाएगा, आपको उस बोध की प्राप्ति होती जाएगी।

इस तरह के संदेश हमें बहुत सोचने पर मजबूर करते हैं और हमें बताते हैं कि हमारी साधना किस स्तर पर है। कोई भी कहे, वह एक ही बात कह रहा है। हर कोई इसे अलग नज़रिए से समझाता है। उदाहरण भले ही अलग हों, लेकिन सबका कहा हुआ सत्य एक ही है। इसीलिए कहा गया है, ''एकं सत विप्राः बहुधा वदन्ति।'' यानी सत्य एक ही है, चाहे कोई भी कहे, एक ही कहना चाहिए। वे इसे अपने-अपने स्तर से समझाते हैं।

शंकराचार्य जी ने अद्वैत का बोध किया। उन्होंने कभी दो नहीं कहा। उन्होंने कहा कि सब कुछ एक है। उन्होंने कहा कि जैसे सभी हंड़िया मिट्टी से बनते हैं, वैसे ही संसार की हर चीज़ आत्मा से उत्पन्न होती है। उन्होंने कहा कि आत्मा के अलावा कुछ भी नहीं है। उन्होंने और क्या कहा? उन्होंने कहा कि आत्मज्ञानी व्यक्ति यह जानकर जीता है कि वह जो भी संसार देख रहा है, वह उसकी आत्मा है। इसके अलावा, उन्होंने कभी द्वैत नहीं कहा, उन्होंने अद्वैत का बोध किया था ।

::11::

आदि शंकराचार्य जी बहुत ज्ञानी थे। वे इतने महान थे कि वे अपने ज्ञान से भारत को हिंदू धर्म में बदल पाए। जो लोग उनके संदेशों को अक्षरश: मानते हैं, उनका भविष्य बहुत अच्छा होगा। उन्हें अपनी ज़िंदगी में अनपेक्षित फ़ायदे मिलेंगे। उनका हर शब्द अक्षरश: सत्य है, सत्य का मतलब अटूट या निरुत्तर। आइए जानते हैं उनका एक और संदेश।

''एक योगी जिसने पूरा आत्म-ज्ञान पा लिया है, वह अपनी आँखों से पूरे ब्रह्मांड को अपनी आत्मा में देखता है। और वह पूरी दुनिया को जो एक ही चेतना है, को अपनी आत्मा के रूप में देखता है।''

शंकराचार्य जी ने क्या कहा ?

पूरा आत्म-ज्ञान पा लेने का मतलब है कि और कोई ज्ञान पाने केलिए कुछ नहीं है। ऐसा पूरा ज्ञान सिर्फ़ वही पा सकता है जिसने योग अभ्यास किया हो।

पतंजलि महर्षि ने कहा है कि योग का अर्थ है चित्त वृत्ति को नियंत्रित करना। यानी, जो चित्त वृत्ति को नियंत्रित करते हैं, वे योगत्व को प्राप्त करते हैं, उसी को योगी कहते हैं। जो चित्त वृत्ति को नियंत्रित करते हैं, वे बिना आलोचना अवस्था को प्राप्त करते हैं, यानी वे ऐसी अवस्था प्राप्त कर लेते हैं जहाँ मन काम नहीं करता। योग की यह अवस्था कैसे प्राप्त होती है ? पत्री जी ने स्पष्ट रूप से कहते हैं कि केवल ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान से ही प्राप्त होती है, किसी और चीज़ से नहीं।

चाहे कितना भी गैडिंग, म्यूज़िक, गुडाकेश, कर्म विपाक वगैरह क्यों न कर लें, वे योगत्वं नहीं पा सकते, वे चित्त वृत्ति को नहीं रोक सकते। वे मन को काम करने से नहीं रोक सकते। इसीलिए वह स्पष्ट रूप

से कहा गया कि यह केवल ज्ञानी योगी के लिए ही संभव है। यह केवल उसी के लिए संभव है जो चित्त वृत्तियों को रोक लिया है, जो निर्विचार अवस्था को प्राप्त कर चुका है। जिसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, वह धीरे-धीरे पूर्ण आत्मज्ञान को प्राप्त कर सकता है।

अब आप सब भी यही कर रहे हैं। आप न तो संगीत सुनते हैं, न ही कोई शब्द सुनते हैं। आप सुबह जल्दी उठते हैं, स्नान करते हैं, ''श्वास पर ध्यास'' योग करते हैं, और योगी बनने का प्रयास करते हैं। इसलिए, आप न केवल ज्ञान अर्जित करेंगे, बल्कि धीरे-धीरे उसका विकास करते हुए उस परिपूर्ण ज्ञान को प्राप्त करेंगे।

यदि आप इसी प्रकार आगे बढ़ते रहें, अपने ज्ञान को बढ़ाते रहें, तो आपको ज्ञान-चक्षु प्राप्त हो जाएगा। इस प्रकार, आप ज्ञान-चक्षु प्राप्त करके परिपूर्ण आत्म-ज्ञान भी प्राप्त कर सकेंगे।

ये आँखें खुली हों तो केवल बाहर का ही दृश्य दिखाई देता है। लेकिन जिन्हें ज्ञान-चक्षु प्राप्त हो गए हैं, वे आँखें बंद करके भी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, अर्थात चौदह लोक, इस अनन्त सृष्टि में कितने लोक हैं, उन लोकों में क्या है, तथा अन्य सब कुछ देख सकते हैं, और उस ज्ञान-चक्षु से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को देख सकते हैं।

इन सभी लोकों को देखने के लिए वे समझते हैं कि रॉकेट में जाना पड़ता है। लेकिन पूरे ब्रह्मांड को देखने के लिए आपको रॉकेट में जाने की ज़रूरत नहीं है, जब कृष्ण के बचपन में उसकी माँ यशोदा ने, कृष्ण ने मिट्टी खाया समझकर, उन्हें अपना मुँह खोलने के लिए कहा, तो उन्होंने अपना मुँह खोला। जैसे ही उन्होंने अपना मुँह खोला, सभी लोक, सभी अनंत लोक उनमें दिखाई देने लगे।

व्यास जी ने वह घटना द्वारा हमें यह दिखाया है कि सभी लोक

आपके अंदर हैं।

और यह कैसे संभव है कि सारे लोक इसी शरीर में समाहित हों? ऐसा कौन कर सकता है? यानी जिनके पास ज्ञान नेत्र है, वे सब कुछ देख सकते हैं। उन्हें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं! वे जहाँ हैं, वहीं बैठकर सब कुछ देख सकते हैं।

ज्ञान क्यों प्राप्त करना चाहिए? हमारे समाज में भी ऐसे लोग हैं जो यह प्रश्न पूछते हैं। ज्ञान कोई साधारण चीज़ नहीं है। इसीलिए कहा जाता है कि ज्ञान प्राप्त करने वालों से बड़ा कोई नहीं है। जैसे-जैसे ज्ञान प्राप्त होता है, ज्ञान बढ़ता है, वैसे-वैसे न केवल तीसरा नेत्र प्राप्त होता है, बल्कि उससे भी बड़ा ज्ञान-चक्षु भी प्राप्त होता है, और वह संपूर्ण ब्रह्मांड को देख पाता है। सृष्टि में सब कुछ ज्ञात हो जाता है। सृष्टि में ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जिसे प्राप्त न किया जा सके। परिपूर्ण आत्म-ज्ञान प्राप्त करने का यही अर्थ है!

इसलिए सभी को ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और ज्ञानी बनना चाहिए। ऐसा पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया योगी ज्ञान के चक्षु से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपनी आत्मा में ही देखता है। उसे और क्या नहीं पता? इसीलिए तो बड़े-बुज़ुर्ग कहते हैं कि तुम सृष्टि में हो और सृष्टि तुममें है। ऐसा कैसे कि सारी सृष्टि हमारे भीतर है! यह बात सबको हैरान करती है। अगर तुम्हारे अंदर आत्मा है, मतलब सारी सृष्टि तुम्हारे अंदर है!

शंकराचार्य जी ने और क्या कहा? और ऐसा ज्ञानी व्यक्ति सम्पूर्ण जगत को एक ही चेतना है, अपने आत्मा मे ही जानता है। यदि इस संसार में 84 लाख जीव हैं, तो प्रत्येक प्रकार के करोड़ों जीव हैं, और यदि आप कुल मिलाकर देखें, तो सोचिए कि कितने हैं। यदि आप एक चींटी लें, तो करोड़ों हैं, यदि आप एक मच्छर लें, तो भी करोड़ों हैं, और इसी प्रकार, यदि आप विभिन्न प्रकार के 84 लाख जीव को लें, तो करोड़ों हैं!और एक

ज्ञानी व्यक्ति उन सभी को, जो एक ही चेतना है, अपनी आत्मा के रूप में देखता है ।

अर्थात, कि जो भी आत्मा उसके भीतर है, जो भी चेतना उसके भीतर है, वही चेतना हर चीज़ में, सभी जीवों में विद्यमान है को, वह देखता है। यह देखकर, वह समझता है, ''सब कुछ मैं ही हूँ, मैं ही सब कुछ हूँ।''

जिस दिन व्यक्ति यह समझ लेता है कि 'मैं ही सब कुछ हूँ, सब कुछ मैं ही हूँ', वह किसी भी जीव को नहीं सताता, किसी भी जीव को नहीं खाता, किसी का अपमान नहीं करता, किसी से घृणा नहीं करता, किसी से शत्रुता नहीं करता, और उसकी स्थिति पर दुःखी नहीं होता। जब व्यक्ति पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो उसका व्यवहार भी उसी प्रकार बदल जाता है। यदि वह अभी भी चीजों को अलग अलग दृष्टि से देख रहा है, तो समझ लीजिए कि उसका ज्ञान बहुत निम्न स्तर पर है।

::12::

''जिस प्रकार एक व्यक्ति बिना यह जाने कि उसे किस मार्ग पर जाना है, इधर-उधर भटकता रहता है, सूर्योदय के समय उसे पूर्व और पश्चिम का ज्ञान हो जाता है, उसे यह पता चल जाता है कि उसे किस दिशा में जाना है, और वह गलत मार्ग को त्याग देता है, उसी प्रकार आत्म-ज्ञान मैं , और मेरा के भ्रम को समाप्त कर देता है।''

अगर आप अँधेरे में सफ़र करते हुए किसी चौराहे पर पहुँच जाएँ और वहाँ कोई न हो, तो या तो आप रुक जाते हैं, क्योंकि आपको पता नहीं होता कि किस तरफ़ जाना है। या फिर आप अंदाज़ा लगाकर अँधेरे में एक ही दिशा में चलते रहते हैं।

कभी जब आप कोई लोकेशन फिक्स करते हैं, तो आप भ्रमित हो जाते हैं और समझ नहीं पाते। आपको उत्तर दिशा में जाना चाहिए, लेकिन अंधेरे में आप पूर्व दिशा में जा सकते हैं। वह चौराहा ऐसा होता है। कुछ दूर जाने के बाद, जब सूरज उगता है और रोशनी आती है, तो आपको समझ आता है कि आपको पूर्व दिशा में नहीं, उत्तर दिशा में जाना चाहिए। और जब आपको समझ आता है कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं, तो आप रुककर सही रास्ता अपनाते हैं और अपनी मंज़िल तक पहुँच जाते हैं।

अगर आप गलत रास्ता अपनाएँगे, तो आप अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच पाएँगे, आपकी यात्रा में देरी होगी, आपकी मेहनत बेकार जाएगी, आपका पेट्रोल बहुत खर्च होगा, और आपका समय भी बहुत बर्बाद होगा।

उस सफ़र में आपको चिढ़ भी होगी। अगर आपको इतनी दूर वापस जाना पड़े तो कैसा लगेगा ? ज़रा सोचिए, आपको कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

इसी प्रकार, जो अज्ञानी हैं, वे मैं, मेरा, हमारा के भ्रम में जीते हैं। अर्थात, उन्हें ऐसा लगता है कि मैं पुरुष हूँ, मैं स्त्री हूँ, मैं इस जाति का हूँ, इस धर्म का हूँ, इस क्षेत्र का हूँ। और जब तक वे भावनाओं से भरे रहेंगे, वे अपने जीवन की यात्रा में अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच सकते, न ही वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

अंधेरे में रास्ता भटके लोग जैसे, यह लोग उजाले में भी रास्ता भटक गए हैं। क्यों ? अज्ञानता के कारण। अज्ञानता के कारण ही वे ''मेरा'' और ''हमारा'' कहते हैं। मेरा का मतलब है मेरा कमाया हुआ पैसा, मेरी संपत्ति, मेरा सोना, मेरे शेयरों, मेरी इमारतें, मेरा घर। और जब यह शरीर ही तुम नहीं हो, तो तुम्हारा क्या है ? तुम्हारा क्या है ?

जब पत्री जी ने सबको इतना ज्ञान दिया हैं, तो वे बिना समझे, यह मेरा, और हमारा समझते हुए....वे उसके लिए संकल्पों रखते हुए.... अपना सारा जीवन बर्बाद करते हुए.....वे अंधेरे में भटके हुए लोगों की तरह जीते हैं। उन्हें समझ ही नहीं आता कि उन्हें कौन सा रास्ता में जाना है। इसीलिए पत्री जी ने मेरा, हमारा को छोड़ने को कहा हैं।

उन्होंने कहा था कि मेरा-हमारा का भ्रम मिटाओ। अगर वह भ्रम रहा, तो जीवन की इस यात्रा में सही राह पर चलना मुश्किल हो जाएगा।

इंसान उसे छोड़ते नहीं हैं, है ना ? वे उनके लिए ये संकल्प रख रहे हैं।

मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरे बच्चे का भाव कितने मज़बूत हैं। यह शरीर मैं हूं, और इस शरीर द्वारा जो कुछ पाया है, सब मेरा कहता है। जब तुम ही नहीं हो, तो तुम्हारा कहाँ है ? तुम इस ग़लत रास्ते पर चल रहे हो। तुम्हें कब पता चलेगा कि यह ग़लत है ? जब ये मेरा और हमारा चला जाएगा ? कब जाएगा ? जब तुम आत्म-ज्ञान पायेगा ।

आप इस धरती पर आये, आप इस मार्ग पर आये, ज्ञान प्राप्त करने ही, इसके अलावा कुछ नहीं। इसीलिए पत्री जी ने शंकराचार्य जी का एक श्लोक बताया ।

''भगवद्गीता किंचिदधीता
गंगाजललवकणिकापीता
सकृदपि येन मुरारी समर्चा
क्रियते तस्य यमेना न चर्चा ?''

तात्पर्य:- भगवद्गीता का थोड़ा-बहुत अध्ययन तो करना ही चाहिए, यानी स्वाध्याय करनी चाहिए। गंगा नदी के पानी की एक बूंद भी पीनी चाहिए, यानी ध्यान करना चाहिए। अगर कोई ध्यान करता है, तो वह उस कॉस्मिक एनर्जी को लेता है। अगर इसका थोड़ा-सा भी लेना है, तब उसे साधना भी करनी चाहिए।

इसी तरह, सकृदपि येन मुरारी समर्च का मतलब है कि कम से कम एक बार आत्मा ज्ञानियों से चर्चा करनी चाहिए, यानी संगति करनी चाहिए। इसे सज्जन संगत्यम कहते हैं। यानी, शंकराचार्य जी ने इस श्लोक के ज़रिए समझाया कि साधना, स्वाध्याय और संगति करनी चाहिए। पत्री जी ने भी हमें यही समझाया।

अगर आप ये तीन काम करते हैं, तो यमराज ऐसे लोगों की तरफ नहीं देखेंगे । यमराज परवाह नहीं करेंगे, इसका भी एक अंतरार्थ है। शरीर छोड़ने के बाद हर कोई ऊपर की दुनिया में जाता है, और जब वे जाते हैं, तो वहां मास्टर्स सलाह देते हैं।

वे मास्टर्स आपसे पूछेंगे। आप धरती पर क्या करने गए थे? आपने क्या किया? आप ज्ञान पाने गए थे, और ज्ञान पाने की कोशिश करने के बजाय, आप उनके पीछे पड़ गए यह कहते हुए कि वे मेरे और हमारे

हैं, और आपने उनके लिए ही सब कुछ किया। वे आपसे सख्ती से पूछेंगे कि आपने अपना जन्म बर्बाद कर दिया।

पत्री जी ने हमें, शंकराचार्य जी का संदेश समझाया कि, जब तुम इन तीनों की साधना करोगे, तो यमराज, यानी ऊपर की दुनिया वाले तुम्हें रोकेंगे नहीं या तुम्हारी बुराई नहीं करेंगे। क्यों नहीं रोकोगे ? अगर तुम ये तीनों करोगे, तो वे सब कुछ जान जाएंगे। यहां मेरा नाम की कोई चीज़ नहीं है, मैं नाम की कोई चीज़ नहीं है, यह शरीर मैं नहीं हूं, इस शरीर के साथ आने वाली हर चीज़ मेरी नहीं है, मैं आत्मा हूं। मैं परब्रह्म हूं। तुम जान जाओगे कि सब कुछ मैं हूं और सब कुछ मेरा है।

तुम ये सब काम उन लोगों की तरह कर रहे हो जो अज्ञानता में भटक गए हैं, लेकिन अगर तुम ये तीनों करोगे, गलत रास्ता छोड़ोगे और ज्ञान हासिल करोगे, तो तुम मैं, मेरा और हमारा का भ्रम छोड़ दोगे, तुम सही रास्ते पर चलोगे, और अपना लक्ष्य हासिल करोगे। यही बात शंकराचार्य जी ने तुम्हें यहां इस संदेश के द्वारा बताई है।

जब तक तुम अज्ञानता में रहोगे, तुम इस मैं, मेरे के भ्रम में रहोगे। जो तुम्हें करना चाहिए उसे करने के बजाय, तुम वो करोगे जो तुम्हें नहीं करना चाहिए। तुम उन चीज़ों को महत्व दोगे। आप अपना सारा समय, एनर्जी और शब्द इसमें लगा देते हैं, और अपनी ज़िंदगी का बर्बाद कर देते हैं। इसलिए ज्ञान पाना बहुत ज़रूरी है। अगर आप ज्ञानी हैं, तो आपको अपनी ज़िंदगी का हल मिल गया है।

::13::

''जैसे जंगल में पेड़ का तना दूर से देखने पर इंसान जैसा दिखता है, वैसे ही आत्मा, जो ब्रह्म है, माया ने उसे एक जीव के रूप में बनाया है। जब व्यक्ति को यह ज्ञात हो जाता है कि जीव का वास्तविक स्वरूप आत्मा ही है, तो वह मनुष्य जीव नहीं है समझकर और उसके होने का भ्रम दूर हो जाता है।''

अगर कोई जंगल में अंधेरे में घूम रहा हो और थोड़ी दूर से देखे, तो पेड़ का तना इंसान जैसा दिखता है, यानी लगता है कि वहां एक आदमी खड़ा है।

लेकिन क्या वह सच में इंसान है ? मतलब नहीं है। कौन ? यानी पेड़ का तना। हो सकता है वह सूखकर ठूंठ बन गया हो, या किसी ने उसे काटकर छोड़ दिया हो। और जब वे उस अंधेरे में दूर से उसे देखते हैं, तो उन्हें लगता है कि यह कोई इंसान है। लेकिन जब वे थोड़ा पास जाते हैं, तो उन्हें समझ आता है कि यह कोई इंसान नहीं बल्कि एक पेड़ का तना है। वे हैरान हो जाते हैं, ओह, मुझे सच में लगा था कि यह कोई इंसान है, लेकिन यह नहीं है।

इसी तरह, माया के प्रभाव में इंसान आत्मा को, जो ब्रह्म है, एक जीवित प्राणी मानते हैं। पत्री जी ने हमें बताया हैं कि आत्मा ही परब्रह्म है। हर किसी के शरीर में जो आत्मा है, वह सामान्य नहीं है। वह इस सृष्टि को बनाया है, जो सृष्टि को चलाता है, जो इस सृष्टि का आधार है। यह न जानने के कारण, आत्मा को जीवित प्राणी माना जाता है क्योंकि वह शरीर में है। यह आत्मा एक जीव, यह एक कल्पना है। यह कोई जीव नहीं है, यह ब्रह्म है, परब्रह्म है जो पूरी सृष्टि में हर चीज़ से महान है। माया के असर के कारण, वे सोचते हैं कि यह एक जीव है, एक इंसान है।

जैसे इंसान, अंधेरे में पेड़ के तने के बारे में सोचता है, वैसे ही यह आत्मा को एक ज़िंदा प्राणी समझता है। यह एक भ्रम है। भ्रम की वजह से ऐसा लगता है। लेकिन जो कोई भी गंभीरता से इस ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान का अभ्यास करता है, जो पत्री जी ने हमें दिया है, वे इस भ्रम के असर की वजह बने मन के प्रमुखता को पूरी तरह से हटा देते हैं, और महसूस करते हैं कि यह कोई ज़िंदा प्राणी नहीं बल्कि एक आत्मा है। उन्हें जब यह एहसास होगा! जीवत्व का वह भ्रम, यानी यह एहसास कि मैं एक इंसान हूँ, उनसे गायब हो जाता है।

जब जीवत्व का भ्रम गायब हो जाता है, यानी यह एहसास कि मैं एक इंसान हूँ, गायब हो जाता है, तो वे समझते हैं कि मैं ही वह भगवान हूँ, कि मैं ही वह परब्रह्म हूँ। तब तक वे इंसान बनकर जीते थे, यह सोचते हुए कि भगवान अलग हैं, लेकिन जब इंसान होने का वह भ्रम गायब हो जाता है, तो उन्हें यह समझकर हैरानी होती है कि मैं इंसान नहीं हूँ, मैं एक आत्मा हूँ, मैं परब्रह्म हूँ।

यह सोचकर कि भगवान अलग हैं, यह सोचकर कि मैं इंसान हूँ, यह न जानते हुए कि मुश्किलें क्यों आ रही हैं, वे आई हुई मुश्किलों को दूर करने के लिए तरह-तरह के तरीके अपनाते हैं, और आखिर में यह सोचकर कि भगवान ही उन लोगों के लिए सहारा हैं जिनके पास कोई सहारा नहीं है, वे अपनी पसंद के किसी भी भगवान का सहारा लेते हैं और अलग-अलग तरीकों से उनकी पूजा करते हैं। लेकिन, अगर मुश्किलें दूर नहीं होतीं, तो वे उस भगवान और यहाँ तक कि धर्म भी बदल लेते हैं और तरह-तरह के उतार-चढ़ाव से गुज़रते हैं।

लेकिन जो इस हालत में आ गए हैं, वे समझते हैं। मैं इंसान नहीं हूँ, मैं जानता हूँ कि मैंने अब तक जिस भी भगवान से प्रार्थना की है, पूजा

की है, पूजा की है और चाहा है, वह मैं ही हूँ।

अगर भगवान, इंसान अलग हैं, तो उस भगवान से प्रार्थना की जा सकती है। फिर वह भगवान आकर इस इंसान का साथ देगा, उसकी रक्षा करेगा, उसे बचाएगा और उसे आशीर्वाद देगा। लेकिन, जिससे यह इंसान प्रार्थना करता है, वह खुद है।

वेदों में ''अहं ब्रह्मास्मि'' कहा गया है, है ना? जब खुद ही ईश्वर ही है, जब खुद ही ब्रह्मा ही है, तो फिर और किसकी प्रार्थना करेगा?

अब दुनिया में सब भगवान हैं! कहीं और कोई भगवान नहीं हैं। पत्री जी ने ऐसा कहा है न? पूजा करने वाला ही भगवान है, और जिस मूर्ति की पूजा की जाती है, वह मूर्ति ही है, और वे भ्रमवश उसी को भगवान समझते हैं। वे ये सब इसी भ्रमवश करते हैं कि वे एक जीव हैं, यानी एक इंसान।

इसीलिए वेमना ने कहा, ''पूजा करने से तुम पुजारी बन जाओगे।''

इस सृष्टि में आप ही पूजनीय हैं। आप कहाँ पूजन करेंगे? आप किसकी पूजा करेंगे? आपकी ही पूजा होनी चाहिए, यह स्पष्ट कहा गया है।

और दुनिया में करोड़ों लोग होने के बावजूद, हर कोई अज्ञान में है। और अगर आप कहें कि आप भगवान हैं, तो बहुत से लोग कहेंगे, ''अगर मैं भगवान हूँ, तो मुझे समस्याएँ क्यों हैं?''

यह सोचना कि मैं मानव हूँ, यह सोचना कि हर कोई अलग है, यह सोचना कि मैं एक पुरुष हूँ, यह सोचना कि वे एक महिला हैं, यह सोचना कि मैं इस जाति का हूँ, यह सोचना कि वे दूसरी जाति के हैं, यह सोचना कि मैं इस धर्म का हूँ, यह सोचना कि वे दूसरे धर्म के हैं, उनसे घृणा करना, ईर्ष्या करना, उनसे बदला लेने की कोशिश करना, ऐसे काम

करना जो नहीं करने चाहिए, गलतियाँ करना, पाप करना, और परिणामस्वरूप, वे विभिन्न प्रकार के कष्टों का अनुभव करते हैं।

वे इस तरह से कष्ट झेल रहे हैं और अपने पसंदीदा भगवान की पूजा कर रहे हैं, यह कहते हुए कि यह उनके नहीं, बल्कि भगवान के कारण है।

शंकराचार्य ने कहा था कि जो व्यक्ति दूर से पेड़ के तने को देखता है, उसे लगता है कि वह कोई मनुष्य है। वास्तव में जो वहाँ है, वह कोई मनुष्य नहीं है। लेकिन दूर से देखने के कारण वह इतना भ्रमित हो जाता है।

जब पास जाकर देखा तो पता चला कि वह कोई इंसान नहीं, बल्कि एक पेड़ का तना था।

इसी प्रकार, कुछ लोग अंधेरे में रस्सी को साँप समझ लेते हैं।

अगर घर के सामने कोई रस्सी हो जो थोड़ा टेढ़ा हो, तो वे डर जाएँगे और चिल्लाएँगे, ''साँप, साँप!'' जब कोई आएगा और उन्हें टॉर्च की रोशनी में देखेगा, तो उन्हें पता चल जाएगा कि यह साँप नहीं, बल्कि रस्सी है, और यह सब एक भ्रम है।

इसी प्रकार, अज्ञान के अंधकार में, यह मनुष्य ईश्वर को अलग समझता है, और उसे केवल एक मनुष्य मानता है। लेकिन जो लोग गंभीरता से ध्यान का अभ्यास करते हैं, जैसा कि पत्री जी ने बताया है, उनके लिए इस भ्रम के प्रभाव में मन का महत्व धीरे-धीरे कम होता जाता है। जैसे-जैसे यह कम होता जाता है, कुछ समय बाद वह मन शून्य हो जाता है। धीरे-धीरे, वे उस भ्रम से बाहर आ जाते हैं।

और इसी भ्रम को ईसाई शैतान कहते हैं। मुसलमान इसे नपशल अम्मारा कहते हैं। हिंदू इसे माया कहते हैं। और जब यह भ्रम दूर हो जाता

है, जब अज्ञान मिट जाता है, तो व्यक्ति समझ जाता है कि ईश्वर मैं ही हूँ। उसे अपनी अज्ञानता पर आश्चर्य होता है।

और उस भ्रम से मुक्ति पाने के लिए आपको अपने अभ्यास की तीव्रता बढ़ानी होगी, मन को निश्चल करना होगा, फिर निर्मल करना होगा, फिर परि निर्मल करना होगा, महा परि नर्मल करना होगा, धीरे-धीरे उसे शून्य करना होगा, परि शून्य करना होगा, महा परि शून्य करना होगा, तब पता चलेगा कि मैं कोई जीव नहीं हूँ, मैं वो ईश्वर हूँ।

जो लोग इस अवस्था तक पहुँच चुके हैं, वे कहते हैं कि वे ईश्वर हैं। वे ही हैं जिन्होंने इसे अनुभव किया है। अगर वे शिरडी बाबा या सत्य साईं बाबा कहें, तो बहुत से लोग आपत्ति करेंगे। वे ईश्वर होने का दावा कर रहे हैं, कोई भगवान कैसे बन सकता है? लेकिन जो बोलता है वह भी भगवान है, और जो बुराई करता है वह भी भगवान है। बेवकूफ लोग बिना जाने बुराई करते हैं। इसे ही भ्रम में पड़ना कहते हैं।

जब तक आप सोचते हैं कि आप एक जीवित प्राणी हैं, आप भ्रम में हैं। जब आप समझ जाते हैं कि मैं एक जीवित प्राणी नहीं हूँ, मैं वह भगवान हूँ, 'अहम ब्रह्मास्मि', तो आप भ्रम से बाहर आ गए। जब तक आप इस भ्रम में हैं, तब तक आप दुखी रहेंगे। जब आप इस भ्रम से बाहर आ जाएँगे, तो आप बिल्कुल भी दुखी नहीं होंगे।

जब भ्रम दूर हो जाएगा, तो आप समझ जाएँगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, हर कोई भगवान है, सब कुछ मैं ही हूँ। जब आप यह समझ जाएँगे, तो आप किससे नफरत करेंगे? आप किससे जलेंगे? आप किससे नाराज़ होंगे? आप किससे बेहतर बनने की कोशिश करेंगे? जब सब कुछ एक जैसा होता है, तो आपका व्यवहार बहुत बदल जाता है।

एक बार, जब शंकराचार्य जी काशी में गंगा नदी से स्नान करके

लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्हें एक चांडाल मिला। सभी शिष्यों ने कहा, हट जाओ, हट जाओ। अगर चांडाल को छूओगे, तो वह अशुद्ध हो जाएगा, इसलिए वह नहीं छूते हैं। दूर से ही वह लोग हटने को कहा। उसने नहीं हटा, और आखिर में शंकराचार्य ने भी उस चांडाल को हटने को कहा।

तब उस चांडाल ने कहा। तुम किस को छोड़ना को कह रहे हो ? मेरा शरीर उन्हीं पाँच तत्वों से बना है जिनसे तुम्हारा शरीर बना है। जो जीव तुम्हारे शरीर में है, वही जीव मेरे शरीर में भी है। तुममें और मुझमें क्या फ़र्क है ? तुममें क्या खास है ? तुम मुझे क्यों हटने को कह रहे हो ? ऐसे पूछने से शंकराचार्य जी को समझ आया।

वह तुरंत उस चांडाल के पैरों में गिर पड़ा। वह साक्षात में शिव स्वरूप है, वे मेरी आंखें खोलने के लिए इस रूप में मेरे सामने प्रकट हुए हैं, समझकर, वे पूरी तरह से भ्रम से बाहर आ गए।

उनके जीवन में ऐसी घटनाएँ होने के बाद, उन्होंने ये सभी संदेश दिए। वे हर अनुभव पर किताबें लिखते थे। हम अब उनके बारे में सीख रहे हैं। जब तक यह सत्य न समझ लें कि मैं भगवान हूँ, तब तक जन्म लेते रहना होगा। नहीं तो, चाहे कितने भी जन्म ले लो, दुख तो होगा ही। बीमारियाँ तो होंगी ही, मुश्किलें तो होंगी ही, और दुख तो होगा ही।

इससे, समझें कि माया से बाहर आने के लिए आपकी साधना कितनी तीव्र होनी चाहिए। फालतू चीज़ों पर समय बर्बाद करने के बजाय, उस समय का इस्तेमाल सत्य जानने में करें।

जो लोग मॉर्निंग ज़ूम में हिस्सा लेंगे, उन्हें ज्ञान में पकड़ हासिल होगी, और जो लोग भीमावरम के 3-दिन के ध्यान यज्ञ में हिस्सा लेंगे, उन्हें ध्यान में पकड़ हासिल होगी। ध्यान में पकड़ का मतलब है कि जो सीखा है, उसे अनुभव मे लाना। इन दोनों के ज़रिए, व्यक्ति जीवन का लक्ष्य हासिल करता है।

''हालांकि आत्मा असल में हमेशा अंदर ही रहती है, लेकिन अज्ञानता के वजह से नहीं मिलती। जब वह अज्ञानता खत्म हो जाता है, जैसे कोई इंसान अपने गले का गहना हर जगह ढूंढता है और आखिर में उसे अपने गले में पा लेता है, वैसे ही आत्मा अंदर से ही प्रत्यक्ष होती है''।

यहां, अगर कोई इंसान अज्ञानी है तो उसका व्यवहार कैसा होता है ? इसी तरह, अगर उसे ज्ञान मिल जाए तो उसका व्यवहार कैसा होता है ? यह शंकराचार्य ने विवरण दिया है। इस शरीर में आत्मा असल में हमेशा अंदर ही रहती है, कहीं और नहीं। यह दरगाहों, मंदिरों, काशी, मक्का या येरुशलम में नहीं है। आत्मा ही भगवान है। हर कोई इस भगवान को हर जगह ढूंढ रहा है। लेकिन, वह भगवान हर किसी के शरीर में है।

और फिर भी, अज्ञानता के कारण, वे उसे पा नहीं पाते, उसे जान नहीं पाते। वे उस आत्मा को ढूंढते हुए इधर-उधर भटक रहे हैं, हर जगह ढूंढ रहे हैं। शंकराचार्य जी ने इसका एक उदाहरण भी दिया। एक औरत ने अपने गले में एक हार पहना था और भूल गई कि उसने उसे पहना है। उसने अलमारी और दराजों में ढूंढा कि उसने उसे कहां रखा है। उसने बिस्तर पर से कंबल हटाया और पूरे घर में ढूंढा लेकिन वह नहीं मिला। आखिर में, उसने या तो अपना हाथ अपनी गर्दन पर रखा या शीशे के पास जाकर उसमें देखा। वह यह देखकर हैरान रह गई कि उसने इतनी देर तक उसे अपनी गर्दन पर लटकाए रखा था और पूरे घर में ढूंढा।

बहुत से लोग उत्तर भारत में चारधाम नाम की जगह पर पैदल या घोड़ागाड़ी से जाते हैं। वहां कार और बसें नहीं जातीं। रास्ते में खाना भी नहीं मिलता। फिर भी, भगवान को पाने की कोशिश करते रहते हैं। लेकिन चाहे कितनी भी कष्टों क्यों न करें, वे उसे पा नहीं पाते। क्योंकि वह

भगवान शरीर में ही है। और अगर वे उसे दूसरी जगहों पर, पवित्र जगहों पर ढूंढेंगे तो वे कैसे पाएंगे ?

उसके गले का हार पूरे घर में नहीं मिलता, भले ही वे उसे पूरे गांव में ढूंढ लें। आम तौर पर, यह तभी पता चलता है जब कोई बताता है, जब वे आईने में देखते हैं, या जब वे अपनी गर्दन थपथपाते हैं। तब वे सोचते हैं, ओह माय, उन्होंने कितनी मुश्किलें झेली हैं।

इसी तरह, इंसान भी अज्ञानता के कारण अपने शरीर में ही स्थित उस भगवान को नहीं जान पाता। जब वह अज्ञानता खत्म हो जाती है, तो उसे यह जानकर हैरानी होती है कि भगवान कहीं और नहीं, बल्कि मेरे शरीर में हैं।

उदाहरण के लिए, हमने कहा कि यह ऐसा है जैसे घर में एक घंटे तक बिना देखे घूमना, लेकिन इंसान उस भगवान को पाने के लिए 350 से 400 जन्म तक ढूंढता है। अगर कोई अज्ञानता को दूर नहीं करता और ज्ञान हासिल नहीं करता, तो भले ही वे और 500 जन्म ले लें, उन्हें भगवान नहीं मिलेंगे। इसीलिए हम सबसे कहते हैं कि अज्ञानता को दूर करो और ज्ञान हासिल करो। अगर तुम ज्ञान प्राप्त करोगे, तो तुम अपने शरीर के अंदर उस भगवान को देखोगे। तुम उसे अपने शरीर के अंदर पाओगे। अगर तुम उसे पा लोगे, तो तुम्हें और जन्मों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। कोई दुख नहीं होगा।

इसलिए, अगर तुम ज्ञान प्राप्त करोगे, उस ज्ञान नेत्र से, तुम जान जाओगे कि वह तुम्हारे शरीर के अंदर है। तुम उसे महसूस करोगे। वहाँ से, तुम्हारा व्यवहार, तुम्हारे काम, तुम्हारी बातें सब पूरी तरह बदल जाएँगी। उससे ज़्यादा कुछ नहीं चाहिए। इतने जन्म कष्ट किए हैं, थक भी गया है।

आपको कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है, बस जहाँ हैं वहीं रहें और

आराम से ये चार काम करें।

1) ''श्वास पर ध्यास'' रखकर तीव्र ध्यान करें।

2) आत्म-ज्ञान पर किताबें पढ़ें

3) साथ ही, उन लोगों के संदेश सुनना जो आत्म-ज्ञान सिखा सकते हैं। वे आपको भीमावरम में और हमारे जूम पर भी अच्छे से मिल जाएँगे।

4) इस मार्ग में कुछ सेवा करें। जितना हो सके, कीजिए।

सबसे बड़ी बात है उचित ध्यान सिखाना, अज्ञान दूर करने के लिए ज्ञान बोध करना। और इसी से कर्मों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त होता है।

अंततः तुम अपने लक्ष्य तक पहुँच ही जाओगे। इसलिए ये चार काम करो। इसी जन्म में तुम्हें बहुत ज्ञान प्राप्त कीजिए। अगर तुम थोड़ा भी पीछे रह गए, तो आगे चलकर तुम्हें एक अनुकूल जन्म मिलेगा। तुम उस जन्म को अपना अंतिम जन्म बना पाओगे। इस कीचड़ और इस मामले से तुम हमेशा के लिए मुक्त हो जाओगे।

तुम उस अवस्था को प्राप्त करोगे जहाँ न तो मृत्यु है और न ही पुनर्जन्म, यही तुम्हारा लक्ष्य है। शंकराचार्य जी ने यही कहते हैं। तुम अपनी बुद्धिहीन के कारण से हर जगह खोज रहे हो। लेकिन वह आत्मा, अर्थात भगवान, तुम्हारे भीतर ही है। अपने अज्ञानता को दूर करो, अज्ञानता के कारण ही तुम उस भगवान को प्राप्त नहीं कर पा रहे हो। उन्होंने इसे दूर करने के लिए बहुत स्पष्ट रूप से कहा था।

याद रखें, चाहे आप कितने भी काम करें, चाहे आप अपनी समस्याओं का समाधान करना चाहते हों, अपने कर्मों का निवारण करना चाहते हों, या अपने चाहतें को प्राप्त करना चाहते हों, आपको ज्ञान प्राप्त करना ही होगा। ज्ञान प्राप्त करने से ही आप सब कुछ प्राप्त कर पाएँगे। ज्ञान प्राप्त किए बिना आप कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

::15::

शंकराचार्य जी के पृथ्वी पर आने का क्या कारण था ?

हम सभी जानते हैं कि आदि शंकराचार्य जी कितने महान थे और कितने लोगों को प्रभावित कर सकते थे। उनका जन्म भारत में उस दौर में हुआ था जब हिंदू धर्म लुप्त हो रहा था और बौद्ध धर्म का बोलबाला था। उन्होंने हिंदू धर्म और अद्वैत सिद्धांत के महत्व को बहुत ही व्यापक और सुगम तरीके से समझाया। उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक तीन बार पैदल यात्रा की और लगभग सभी को अपना शिष्य बनाया। उन्होंने भारत में अपने आदर्शों को दृढ़ता से स्थापित करने के उद्देश्य से चार स्थानों पर पीठों की स्थापना भी की।

हम कह सकते हैं कि शंकराचार्य जी का पृथ्वी पर आगमन और बौद्ध धर्म का उन्मूलन करके भारत में हिंदू धर्म की स्थापना, प्रकृति का निर्णय था। क्योंकि इस सृष्टि में जो कुछ भी घटित होता है, वह प्रकृति के निर्णय के अनुसार ही होता है। हिंदू धर्म संसार से लुप्त हो चुका है। अत: यह समझना चाहिए कि प्रकृति ने ही हिंदू धर्म की महिमा और अद्वैत सिद्धांत की महानता को पुन: स्थापित करने के लिए शंकराचार्य जी को पृथ्वी पर भेजा।

हम समझ सकते हैं कि शंकराचार्य जी जैसे महापुरुष के संदेशों, कितने महान हैं। पत्री जी ने हमें क्या बताया ? मनुष्य योनि में प्रवेश करने के बाद, अजन्मा अवस्था तक पहुँचने में लगभग चार-पाँच सौ जन्म लग जाते हैं। अर्थात, मनुष्य को पूर्णत्वं प्राप्त करने, पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने और सभी प्रकार के अनुभव प्राप्त करने के लिए, इतने सारे जन्म आवश्यक हैं।

इसके अलावा, इतने सारे क्षेत्र, इतने सारे धर्म, इतनी सारी जातियाँ,

इतने सारे जीवन-प्रकार होने चाहिए। और तो और, पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्त्री के रूप में जन्म लेना ज़रूरी है, पुरुष के रूप में जन्म लेना ज़रूरी है। और स्त्री का जन्म लेकर व्यक्ति बहुत कुछ सीखता है। पुरुष का जन्म लेकर व्यक्ति बहुत कुछ सीखता है। इसलिए, स्त्री कभी स्त्री नहीं होती, और पुरुष कभी पुरुष नहीं होता।

इसीलिए शंकराचार्य जी पृथ्वी पर आए और विलुप्त हिंदू धर्म की पुनः स्थापना की। हिंदू धर्म में जितने आध्यात्मिक ग्रंथ, उपनिषद, वेद, भगवद्गीता, पुराण हैं, वे किसी अन्य धर्म में नहीं मिलते। यदि कोई इन्हें समझ लेता है, तो वह सब कुछ जान लेता है। जो इसे नहीं समझता, वह कहेगा कि इस धर्म नष्ट हो जाएगा, वह धर्म बढ़ेगा, अन्यथा कोई दूसरा धर्म बढ़ेगा।

लेकिन धरती पर कोई भी धर्म कभी लुप्त नहीं होगा। हर तरह के धर्म रहेंगे। हर कोई रहेगा । हर कोई हर धर्म में पैदा होता है, और हर धर्म के ज़रिए वह कुछ तो सीखता है जो उसे सीखने की ज़रूरत है।

पत्री जी को ही लीजिए, उन्होंने कहा कि 2500 साल पहले वह आनंद नाम से बुद्ध का शिष्य था, फिर वह बौद्ध बना। फिर वह अमेरिका में बेंजामिन फ्रैंकलिन नाम से ईसाई बना, फिर उड़ीसा में पैदा हुआ और जीवन भर ध्यान किया। फिर वह हैदराबाद में हज़रत इनायत खान नाम से एक मुस्लिम सूफी गुरु बना, और अब मैं सुभाष नाम से एक हिंदू ब्राह्मण जाति में पैदा हुआ हूँ। अब मेरी जाति क्या है? मेरा धर्म क्या है? मुझे बताइए। इसलिए, सभी को जन्म अलग-अलग होते हैं। इसलिए, कोई भी न कोई कम है, न कोई ज़्यादा। सब बराबर हैं।

सिर्फ़ इसलिए कि आप आज हिंदू हैं, आप हमेशा के लिए हिंदू नहीं हैं। सिर्फ़ इसलिए कि आप आज पुरुष हैं, आप हमेशा के लिए पुरुष

नहीं हैं। सिर्फ़ इसलिए कि आप आज अमीर हैं, आप हमेशा के लिए अमीर नहीं हैं। सिर्फ़ इसलिए कि आप नौकर हैं, आप हमेशा के लिए नौकर नहीं हैं। यहाँ तक कि एक व्यक्ति जिसने राजा के रूप में सत्ता और सुख का आनंद लिया है, उसे फिर से एक गरीब व्यक्ति और मजदूर के रूप में अनुभव प्राप्त करना होगा।

इसीलिए पत्री जी ने हमें साफ़-साफ़ बताया था। सबको तब तक जन्म लेते रहना चाहिए जब तक उन्हें यह एहसास न हो जाए कि सब लोग एक है, सब कुछ मैं ही हूं , मैं ही सब कुछ हूँ। अब हम सब यही कोशिश कर रहे हैं। हमें यह सब जानने में बहुत रुचि है। हम सुबह तीन बजे उठते हैं, स्नान करते हैं और ध्यान करते हैं। हम इन सभी संदेशों को आसक्त के साथ सुन रहे हैं।

जब आप यह सब मालूम हो रहा है, तो आपको समझना चाहिए कि यह प्रकृति द्वारा आपको दिया गया एक अवसर है। आपको इस सारे ज्ञान को ध्यान से सुनना, उसे इकट्ठा करना और उसका अनुभव में लाना चाहिए। तब आपको सृष्टि में नए अनुभव और नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक अनुकूल जन्म मिलेगा। यदि आप इसकी उपेक्षा करते हैं, ध्यान नहीं देते हैं, या इसे न सुनने का नाटक करते हैं, तो आपको इसे प्राप्त करने के लिए बार-बार जन्म लेने पड़ेंगे। यदि आप इसे अभी प्राप्त कर लेते हैं, तो आपको और जन्मों की आवश्यकता नहीं होगी।

बहुत से लोग यह जाने बिना कुछ काम करते रहते हैं और उनसे खुश हो जाते हैं। बुरे काम नहीं, ऐसे काम नहीं जो नहीं करने चाहिए, लेकिन हमें उनसे संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें यह भी सोचना चाहिए कि इन कामों से हमारा ज्ञान कितना बढ़ेगा। प्रकृति सृष्टि का ज्ञान देने के लिए एक या दो को नहीं भेजती। वह उन्हें भेजती रहती है।

एक व्यक्ति के चले जाने पर भी, पृथ्वी पर अन्य लोग आते

रहेंगे। उनके माध्यम से यह ज्ञान आगे बढ़ता रहेगा। जो थोड़े समझदार हैं, वे समझेंगे कि यह ज्ञान हमें किससे मिल रहा है, और उनका अनुसरण करेंगे और उनसे जितना हो सके उतना ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वरना नुकसान नहीं होता, जन्मों की संख्या बढ़ जाती है। वो बुद्धि की कमी है। जो जन्मों की संख्या घटाता है वो बुद्धिमान है। जो जन्मों की संख्या बढ़ाता है वो नासमझ है। प्रकृति ने इंसान को सारे अवसर दिए हैं, लेकिन उसने उनका उपयोग नहीं किया है। वो ये कहकर, वो कहकर, परिवार कहकर, मैं तो वो काम कर रहा हूँ, मैं ये काम कर रहा हूँ, ये कहकर उनका उपयोग नहीं करता। उससे ज़्यादा मूर्ख कोई नहीं है। जिसने उनका उपयोग किया है, उससे ज़्यादा बुद्धिमान कोई नहीं है।

इसलिए आपको भीमावरम में होने वाली तीन दिवसीय कक्षाओं में कम से कम एक बार ज़रूर भाग लेना चाहिए। फिर आंध्र, कर्नाटक और भारत के सभी राज्यों की यात्रा करें। जहाँ भी आपको ऐसा ज्ञान और अभ्यास प्राप्त करने का अवसर मिले, आप उसका अनुसरण कर सकते हैं। सभी को स्वतंत्रता है। यह प्रकृति द्वारा हमें दिया गया एक अद्भुत अवसर है।

मुझे समझ नहीं आ रहा कि ये सारे संदेश मेरे पास कैसे आए। और मैं और अम्मा हर संदेश को लेकर उसे अनंत रूप से कैसे समझा सकते हैं! क्या हमने पहले इसका अध्ययन किया था? क्या हमने किया था? ये सब कहाँ से आ रहा है? अब इस ज्ञान की दुनिया में सभी को ज़रूरत है। इसीलिए यह हमारे माध्यम से आप सभी तक इस तरह पहुँचाया जा रहा है। भीमावरम की कक्षाएँ, पत्री जी द्वारा दिए गए इस श्वास पर ध्यास ध्यान के अभ्यास के लिए बहुत उपयोगी हैं। इसलिए इस अवसर का लाभ उठाएँ।

:: 16 ::

''ज्ञान - अज्ञान''

मानव जीवन में दु:ख का कारण, ज्ञान की बातों को न जान पाना है। ज्ञान क्या है ? अज्ञान क्या है ? हमें यह जानना होगा। ज्ञान का मतलब अदृश्य विषयों के बारे में जानना है। यदि उस विषय के बारे में जानता है कि क्या है, तो वह ज्ञानी है। यदि वह नहीं जानता कि क्या है, तो वह अज्ञानी है।

अर्थात, ज्ञान वह है जो मानव इंद्रियों से नहीं जाना जा सकता। वे मौजूद तो हैं, लेकिन मानव इंद्रियों में उन्हें जानने की शक्ति नहीं है। यदि कोई अदृश्य को मानव इंद्रियों से न जान पाने पर भी, या मानव इंद्रियों का उपयोग किए बिना भी जान सकता है, तो उसे ज्ञानी कहा जाता है।

उदाहरण 1:- एक स्त्री भूल जाती है कि उसके गले में हार है और पूरे घर में ढूँढ़ती रहती है। हार तो वहाँ है, लेकिन वह पूरे घर में ढूँढ़ती रहती है। यह अज्ञान है। इसी प्रकार, आत्मा अर्थात ईश्वर शरीर में ही है, लेकिन सभी तीर्थ स्थलों में उसी के लिए घूम रहे हैं। इसे अज्ञानता कहते हैं।

उदाहरण 2:- आपके घर में अचानक बिजली चली जाती है। घर में बहुत सारी चीज़ें हैं, क्या वे सब अंधेरे में दिखाई दे रही हैं ? वे दिखाई नहीं दे रही हैं। क्या कोई वस्तु नहीं है ? यानी वे हैं, लेकिन दिखाई नहीं दे रही हैं। क्योंकि इसका मतलब अंधकार है, इसलिए अंधकार की तुलना अज्ञानता से की जाती है।

बिजली वापस आ गई है। अब सब कुछ दिखाई दे रहा है। सब कुछ दिखाई दे रहा है, चाहे किसी कोने में कुछ भी हो। इसीलिए अगर विद्यमान वस्तुएँ दिखाई न दें, तो उसे अज्ञान कहते हैं। अगर विद्यमान

वस्तुएँ दिखाई दें, तो उसे ज्ञान कहते हैं। इसीलिए ज्ञान की तुलना प्रकाश से की जाती है। दूसरे शब्दों में, ये इन्द्रियाँ मौजूद होने पर भी, यदि आप नहीं जान पा रहे हैं, यदि आप इसे देख नहीं पा रहे हैं, तो यह अज्ञान है। ज्ञान वह है जिसे इंद्रियों से जुड़े बिना जाना और देखा जा सकता है।

देखो, मरने के बाद आत्मा शरीर से बाहर आती है। वह हवा में तैरती रहती है। क्या कोई उसे देख सकता है ? कोई उसे नहीं देख सकता। वे उसे क्यों नहीं देख सकते ? अज्ञानता। वह बोलता है। क्या तुम उसे सुन सकते हो ? क्या तुम्हारी इंद्रियाँ उन शब्दों को समझ सकती हैं ? नहीं। कारण अज्ञानता है।

इन इंद्रियों से किए गए सभी कार्य भी अज्ञानता से ही किए जाते हैं। पत्री जी क्या कहते हैं ! अगर तुम अज्ञान में हो, तो दुःख में रहोगे। अगर तुम ज्ञान प्राप्त करोगे, तो दुःख में नहीं रहोगे। यानी अगर तुम अंधकार में हो, तो दुःख में रहोगे। अगर तुम प्रकाश में आओगे, तो दुःख में नहीं रहोगे। इसीलिए वह हमें ज्ञान प्राप्त करने के लिए कहते हैं।

उदाहरणः आप घर पर खाना खाना चाहते थे, लेकिन अचानक बिजली चली गई। आप मोमबत्ती या दीया जलाना चाहते थे। लेकिन ऐसा करना संभव नहीं था। बिजली नहीं थी। फिर भी आप खाना खाना चाहते थे। अब, देखिए, उस अँधेरे में, अगर आप रसोई में जाना चाहें, तो आप पहले की तरह आसानी से नहीं चल पाएँगे। अगर आप चलते भी हैं, तो किसी दीवार या किसी चीज़ से टकरा सकते हैं।

अगर तुम किचन में जाकर शेल्फ से प्लेटें निकालोगे, अगर तुम एक ऊपर खींचोगे, तो चार नीचे गिर जाएंगी। कोई प्लेट तुम्हारे पैर पर गिर जाएगी। उस अंधेरे में, चावल कहाँ है ! करी कहाँ है ! मुझे नहीं पता, वह कहाँ परोसी जा रही है ? मुझे नहीं पता। मुझे इधर-उधर टटोलना पड़ता

है। जब तुम वो गर्म डिश निकालोगे, तो तुम्हारा हाथ जल जाएगा। अगर तुम सारी चीज़ें एक साथ रखकर खाओगे, अगर तुम थोड़ी मिर्च मुँह में डालकर चबाओगे, तो वह जल जाएगी। अगर तुम्हें फिर से ताज़ा पानी चाहिए, तो तुम्हें दिखेगा नहीं कि वह कहाँ है। उस अंधेरे में, किसी भी काम पूरा करने के लिए आपको कई मुश्किलें पड़ता है।

अगर अचानक बिजली आ जाए, तो सब कुछ फटाफट हो जाएगा। और अंधकार में जीने और प्रकाश में जीने में उतना ही अंतर है जितना अज्ञान में जीने और ज्ञान में जीने में। अगर आप अज्ञान में जीते हैं, तो सब कुछ कष्ट है, सब कुछ दु:ख है। लेकिन अगर आप ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो सब कुछ आनंद है, सब कुछ सुखी होता है।

दुनिया में हर कोई दु:खी है, कोई समस्या, कोई कठिनाई, कोई संघर्ष, कोई परेशानी, सब कुछ दु:खी है। हम दु:खी क्यों हैं ? अज्ञानता के कारण। बहुत से लोगों को यह संदेह होता है। और अज्ञानता से दु:ख क्यों आता है ?

अब तुम अपनी आँखों से देख रहे हो। किसी को देखकर क्या देखते हो ? शरीर दिखाई देता है। क्या आत्मा दिखाई देती है ? नहीं। और क्या आत्मा है ही नहीं ? है तो पर दिखाई नहीं देती। अगर तुम आत्मा देख सकोगे, तो सब कुछ एक जैसा है। सबमें आत्माएँ एक जैसी हैं। लेकिन तुम आत्मा को नहीं देख पाते।

जब आप शरीरों को देखते हैं, तो वे सभी एक जैसे नहीं दिखते। कुछ महिलाएँ, कुछ पुरुष, कुछ काले, कुछ गोरे, कुछ छोटे, कुछ लंबे, वे अलग-अलग दिखते हैं। इसके अलावा, हम समाज में अलग-अलग जातियाँ, अलग-अलग परिवार, अलग-अलग धर्म, अलग-अलग क्षेत्र, ये सब अंतर देखते हैं।

जब आप इन इंद्रियों से, यानी अपनी आँखों से देखते हैं, तो आपको लगता है कि सब कुछ अलग है। इसी वजह से आपके मन में उस व्यक्ति के प्रति नफ़रत पैदा होती है, यह सोचकर कि वह अलग है और मैं अलग हूँ। इसी नफ़रत में, आप हर चीज़ में उससे बेहतर होने की होड़ में लग जाते हैं। आपको लगता है कि आपको उससे बेहतर जीना चाहिए। अगर उसके पास ज़्यादा है, तो आप जलन हो जाते हैं।

वे उसे धोखा देते हैं और अपमानित करते हैं, सिर्फ़ उसे अच्छा महसूस कराने के लिए। उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं।

ऐसी राय के कारण, उनके साथ उनका व्यवहार और उनके सभी कार्य सृष्टि के विरुद्ध हैं। और सृष्टि का भी एक सिद्धांत है, है ना? सृष्टि में आप जो करते हैं, वही आपको मिलता है। इसलिए, अगर आप वैसा ही व्यवहार करेंगे, तो आपको वही मिलेगा। तो फिर वे ये सब क्यों करते हैं? अलग होने के भाव से। अलग होने का भाव क्यों आया? क्योंकि वे नहीं जानते कि वह और मैं एक हैं। क्योंकि वे यह नहीं देखते कि वह भी आत्मा है और मैं भी आत्मा हूँ।

यदि किसी को ज्ञान है, यदि वह आत्मा को देख और जान सकता है, तो उसे यह आभास होता है कि वह और मैं अलग नहीं हैं, कि वह और मैं एक हैं। यदि कोई अज्ञान में है, तो वह उन्हें अलग-अलग देखता है। यदि कोई ज्ञान प्राप्त करता है, तो उसे लगता है कि सब कुछ एक है। देखिए कैसे चीज़ें बदलती हैं।

अजीब बात है! आँखें काम तो करती हैं, पर आत्मा को नहीं देख पातीं। लेकिन ज्ञानी आत्मा को जानता है। अगर वे जो है उसे नहीं देख पाते, तो यह अज्ञान है। अगर वे जो है उसे देख पाते हैं, तो यह ज्ञान है। और क्योंकि वे जो है उसे नहीं देख पाते, और यह नहीं जानते कि सब कुछ

एक है, वे ऐसे काम करते हैं जो उन्हें नहीं करने चाहिए और मुश्किलें खड़ी करते हैं। मुश्किलें क्यों पैदा होती हैं ? वे अज्ञानता के कारण पैदा होती हैं।

और पशु–पक्षियों, जलीय जीवों और यहाँ तक कि कीड़ों–मकोड़ों में भी आत्मा होती है। आत्मा के बिना कुछ भी जीवित नहीं रह सकता, सब कुछ शव बन जाता है। आत्मा के होने पर ही ये सारी गतिविधियाँ, ये सारी क्रियाएँ और ये सारे व्यवहार मौजूद हैं। इसीलिए आत्मा का अस्तित्व है। और क्या यह दिखता है ? यानी यह अदृश्य है। बहुत अजीब है। अगर यह सचमुच दिखाई देता, तो कोई भी ऐसा व्यवहार नहीं करता।

वे पक्षियों, जलीय जीवों और जानवरों को अलग समझकर, उन्हें मारते हैं, साफ करके, उन्हें मसाला लगाते हैं और खाते हैं। वे खुद को अलग क्यों समझते हैं ? अज्ञानता के कारण ही।

इसलिए, अगर ये कठिनाइयाँ नहीं होनी चाहिए, तो अज्ञानता को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि ''श्वास पर ध्यास'' रख कर तीव्र ध्यान करें। वह योगियों द्वारा लिखी गई पुस्तकें पढ़ना चाहिए। और ऐसे लोगों की संगति करना चाहिये । और जब आप ये सब करेंगे, तो आपको भी धीरे–धीरे ज्ञान प्राप्त होगा, आपका व्यवहार बदलेगा, आपके कर्म बदलेंगे, और आपको हर चीज़ का एहसास होगा। यह जानते हुए कि सब कुछ एक ही है ! जब आप किसी को दुःख पहुँचाए बिना जीवन जीते हैं, तो आपको कठिनाइयों या दुःख का सामना नहीं करना पड़ेगा। यदि आपके कर्म सही हैं, तो कोई दुःख नहीं है।

ध्यान आपको ज्ञान प्राप्ति में कैसे मदद करता है ? जब आप ध्यान करते हैं, तो सबसे पहले अपनी आँखें बंद करते हैं। अजीब बात यह है कि जब आप अपनी आँखें बंद करते हैं, तो दूसरी आँखें खुल जाती हैं।

वह आँखें क्या हैं ? मनस की आँखें। मनस काम करता है। अगर आप आँखें बंद करके बैठें, तो आप अपने घर के आस-पास की हर चीज़ देख सकते हैं। आप अपने घर में रखी अलमीरा, उसमें मौजूद सभी चीज़ें देख सकते हैं, लेकिन आप आत्मा को नहीं देख सकते हैं।

जब आप यह आँख बंद करते हैं तो क्या होता है ? दूसरी आँख खुल जाती है। क्या इसका मतलब यह है कि वह आत्मा को देख सकती है ? ऐसा नहीं है। तो पत्री जी ने क्या कहा ? उन्होंने आपको 'श्वास पर ध्यास' ध्यान केंद्रित करने और उस मानसिक आँख को भी बंद करने के लिए कहा। तब आपकी दिव्य आँख खुल जाएगी। इससे आप आत्मा को देख पाएँगे।

इसीलिए जिनके पास दिव्य नेत्र हैं, उन्हें सभी आत्माएँ जैसे दिखाई देती हैं। इन नेत्रों से देखने वालों को सभी शरीरों दिखाई देते हैं। इसलिए, इन तीन बातों का ध्यान रखें: अभ्यास, स्वाध्याय और सत्संगति। आपको अवश्य ही ज्ञान प्राप्त होगा और आपका जीवन बदल जाएगा।

::17::

शंकराचार्य जी ने अद्वैत का सिखाते हुए.... द्वैतवाद को क्यों बढ़ावा दिया ?

शंकराचार्य जी का स्तर तो हम जानते ही हैं। उन्होंने बौद्ध धर्म के अधीन पूरे भारत को पूरी तरह से हिंदू धर्म में परिवर्तित कर दिया। उस समय मौजूद सभी आरामों को खुद ही हटा दिया और मंदिर परंपरा, यानी हिंदू परंपरा, वापस आ गई।

शंकराचार्य जी ने मंदिर क्यों बनवाए? कुछ लोग पूछते हैं। वह कोई नासमझ व्यक्ति नहीं हैं। वह जो कह रहे हैं, वह अद्वैत का सिद्धांत है। इस मंदिर परंपरा में द्वैत है, यानी ईश्वर अलग है और मैं अलग हूँ। उन्होंने इसे क्यों बढ़ावा दिया? हमें पत्री जी ने अपनी पुस्तक योग परंपरा में यही कहा है। मानव जीवन में आने के बाद, व्यक्ति एक के बाद एक जन्म लेता है... धीरे-धीरे बड़ा होता है... और उसका व्यवहार बदलता रहता है।

अपने शुरुआती जन्मों में, वे कहते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। कुछ जन्मों के बाद, ये कठिनाइयाँ आती रहती हैं, तो उन्हें समझ नहीं आता कि क्या करें, इसलिए वे किसी की शरण में चले जाते हैं। क्योंकि उन्हें शरण लेने की ज़रूरत होती है, इसलिए वे कहते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है, और क्यों कि वह महान है, इसलिए वे ये पूजाएँ इस उद्देश्य से करते हैं कि यदि वे उसकी शरण में आएँ, तो वे इन कठिनाइयों से मुक्त हो सकते हैं।

वे अपनी इच्छानुसार पूजा और प्रार्थना करते हैं। वे मन्नते रखते हैं और तीर्थयात्राएँ करते हैं। कुछ और जन्मों के बाद, वे पूजा से स्तोत्र की ओर बढ़ते हैं। कुछ और जन्मों के बाद, वे स्तोत्र से जाप की ओर बढ़ते हैं। लगभग 300 या 350 जन्मों के बाद, वे ध्यान में प्रवेश करते हैं।

तब तक वे यही सोच कर आए होंगे कि ईश्वर अलग है और मैं अलग हूँ। कोई कितना भी कहे, वे नहीं सुनेंगे। बहुत से लोग कहते रहेंगे कि मेरा पति मेरी बात नहीं मानते, मेरी पत्नी मेरी बात नहीं मानती, मैं कितना भी कहूँ, वे नहीं मानते । तब मैं कहता हूं कि वह अगले 100 जन्मों के बाद समझेंगे।

और शंकराचार्य जी को सब कुछ जानते हैं। यह मंदिर परंपरा इन प्रारंभिक और मध्य जन्मों में रहने वालों के लिए बनाई गई थी, उन्हें संयोग पर नहीं छोड़ने के लिए। वे इसे स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन ध्यान और ज्ञान नहीं। वे जानते हैं कि कई स्तरों पर आत्माएँ हैं। हर कोई खुद को शरीर समझता है, खुद को इंसान समझता है, लेकिन कोई भी इंसान नहीं है, आत्माएं है। इसलिए, यह मंदिर परंपरा उन जन्मों में बदलाव लाने के लिए है।

पत्री जी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पहले 100 से 150 जन्मों तक व्यक्ति तमोगुण में रहेगा। 200 से 250 जन्मों तक व्यक्ति रजोगुण में रहेगा। 250 से 300 जन्मों तक व्यक्ति सात्विक गुण में रहेगा। 300 या 350 जन्मों के बाद व्यक्ति ध्यान में प्रवेश करेगा और उस सात्विक गुण से बाहर आकर निर्गुण में चला जाएगा।

तमोगुण में वे मूर्खों जैसा व्यवहार करते हैं, रजोगुण में वे मूढ़ता में होते हैं और सात्विक गुण में उन्हें बुद्धि प्राप्त होता है। जैसे-जैसे वे निर्गुण में प्रवेश करते हैं, अज्ञानता निकल जाता है।

जब वे मूर्ख होते हैं, तो कहते हैं, मुझे जो पता है, यही सही है। जैसे की एक खरगोश पकडने वाला उन्को तीन ही पैर दिखते है, और वह मानते है कि खरगोश को सिर्प तीन पैर होते हैं।

वे रजोगुण में मूढ़ता में रहते हैं। वे कहते हैं, कि बाकी सब जो

करते हैं, वही सही है। जब वे सात्विक गुण में बुद्धिमान हो जाते हैं, तो अगर उनके काम से कुछ नया और अलग होता है, वे सोचते हैं। वे दूसरों को गलत नहीं कहते या उनकी बुराई नहीं करते।

वे सारी किताबें पढ़ते हैं और उनका खूब अध्ययन करते हैं और पता लगाते हैं कि क्या सही है। अगर वे उससे आगे बढ़कर समझदार बन जाएं, तो धीरे-धीरे उन्हें सब कुछ पता चल जाएगा। इंसानी जन्म में आने के बाद, इंसान अलग-अलग लेवल पर होते हैं। इसीलिए इन योगियों और बुद्धिजीवियों ने उनके लेवल के हिसाब से उनके लिए सही तरीके बताए।

इसलिए शंकराचार्य जी ने निम्न वर्ग के लोगों के लिए, जो अपनी प्रारंभिक जन्मों में हैं, ये मंदिर बनाए। वे करोड़पति हो सकते हैं, और पूजा करते हैं। उन्होंने यह ध्यान और ज्ञान उन लोगों को सिखाया जो अपने आखिरी जन्मों में आ चुके हैं। इसी तरह, पत्री जी भी उन लोगों के हिसाब से कुछ बातें बताते हैं जो इस शुरुआती अवस्था में हैं।

सहज बात है कि, अभी धरती पर 60% आबादी तमो गुण में है। 30% रजो गुण में है। 9% सात्विक गुण में है। 1% उससे कम है और निर्गुण अवस्था में पहुँच रहा है। पत्री जी ने सिर्फ़ आश्रम बनाकर, वहीं रहकर ज्ञान कांक्षति लोगों को ही नहीं सिखाते थे।

ऐसे लोग नियम कितने भी सख़्त क्यों न हों, वे उनका पालन कर पाते थे। संदेश कितना भी बड़ा क्यों न हो, वे उसे समझ पाते थे।

लेकिन वे दूर-दूर तक घूमते थे। वे दूर-दराज़ के गाँवों में भी जाते थे। सैकड़ों नहीं, बल्कि हज़ारों लोग उन क्लास में आते थे। और जो लोग उन क्लास में आते थे, उनमें से ज़्यादातर, 90%, तमो और रजोगुण में थे।

अगर उन्हें ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान केंद्रित करने को कहेंगे तो वह उनके बस में नहीं, और वे भाग जायेंगे। वे सिर्फ श्वास पर ध्यास रखकर नहीं बैठ सकते हैं। इसीलिए वे संगीत बजाते हैं। जब ऐसे बहुत से लोग होते हैं, तो वे उनके लाभ के लिए भी कुछ शब्द कहते हैं। वे शब्द उन लोगों के लिए हैं जो ऐसी अवस्था में हैं, लेकिन उन लोगों के लिए नहीं जो अपने आखिरी जन्मों में हैं। उन लोगों के लिए नहीं जो ज्ञान की कांक्षा रखते हैं।

कुछ लोग इस बात को नहीं समझ पाते और कहते हैं कि, उसने कहा, उसने कहा और उसी को प्रामाणिक बना लेते हैं। अब मैं भी यह बात उन 90% में लोगों के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं यह बात सिर्फ़ उन लोगों के लिए कह रहा हूँ जो 9% में हैं। मैं यह उनके लिए कह रहा हूँ जिनमें थोड़ी बुद्धि है, जो सोच सकते हैं। मैंने उन्हें क्यों चुना? अब अगर मैं भी यह नहीं कहूँगा, तो उन 9% लोगों का क्या होगा? वे तो धरती पर सिर्फ़ अपना ज्ञान बढ़ाने आए हैं। अगर उन्हें ज़रूरी ज्ञान नहीं मिला, तो यह जन्म उनके लिए व्यर्थ है! वे सिर्फ़ एक जन्म ही गँवाएँगे!

बहुत से लोग हैं जो 90% लोगों को यह बताएँगे। इन 9% लोगों को यह बताने वाला कोई नहीं है। इसीलिए मैंने और मेरी मैडम ने इसे चुना। इसीलिए हमें यह संयोजन मिला। यही हमारी प्रणालिका है। यही कारण है कि वह, जो पश्चिम बंगाल में हैं, और मैं, जो पश्चिम गोदावरी में हैं, मिले! मैंने अपनी शादी से पहले 100 रिश्ते देखे। कई अमीर और खूबसूरत लोग आए। लेकिन उनमें से कोई भी कारगर नहीं हुआ। जैसे ही मैंने इस महिला को देखा, मैं सहमत हो गई। मुझे तब तक समझ नहीं आया जब तक कि पत्री जी से मेरा परिचय नहीं हुआ। हम दोनों को साथ मिलकर कुछ करना है, कुछ हासिल करना है, इसलिए मैंने इस महिला से शादी की है, अब मुझे समझ आया।

बहुत लोग का पूछ्ना है कि शंकराचार्य जी ने कई मंदिरों का निर्माण कराया और उसने द्वैत की बात करते हुए अद्वैत क्यों सिखाया? इसी तरह, पत्री जी ने कहा, ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान केंद्रित करो, और उसने पी एम सी चेनेल में संगीत लगाकर करवाया था, क्यों किया? उसने गाइडिंग क्यों करवाया था? इस बात को नहीं समझकर, प्रश्न पूछते हैं।

एक बार आनंद ने पत्री जी से साफ़-साफ़ पूछा। क्या ध्यान का मतलब ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान नहीं है? हम तो कहते हैं कि हर पल सत्य का दर्शन है, है ना? फिर हमें ये सब क्यों करना पड़ता है? तब पत्री जी का जवाब था! हमारा पी एम सी एक सुपर बाज़ार की तरह है, कोई भी सुपर बाज़ार में आकर अपनी मनचाही चीज़ खरीद सकता है। जिसे साबुन चाहिए वो साबुन खरीदे, जिसे कपड़े चाहिए वो कपड़े खरीदे, जिसे सैंडल चाहिए वो सैंडल खरीदे। जिसे फैंसी ड्रेस चाहिए वो ये खरीदे। जिसे जो चाहिए वो खरीद ले। जिसे जो पसंद आता है वो उसे लेता है।

इसी प्रकार, जो लोग इस मार्ग पर आए हैं, वे कहते हैं कि उन्हें जो अच्छा लगेगा, वही लेंगे। और अगर हमारे पास थोड़ी बुद्धि और ज्ञान हो, तो हम समझ जाएँगे कि पत्री जी ने क्या कहा। शंकराचार्य जी जितने महान हैं, पत्री जी भी उतने ही महान हैं। वे एक बात कहकर दूसरी बात कैसे करवाएंगे ? शंकराचार्य जी अद्वैत बताया और द्वैत को प्रोत्साहित क्यों करेंगे! इसी प्रकार, पत्री जी ने भी ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान का बताया और संगीत पर ध्यास को प्रोत्साहित क्यों करेंगे! अगर हमारे पास ज्ञान होगा, तो हम समझ जाएँगे कि उन्होंने ऐसा क्यों किया।

हम आत्माएँ उस स्तर तक पहुँच चुकी हैं और उसे समझने में सक्षम हैं। अगर हम इन सब बातों को अच्छी तरह समझ लें, तो हमारा यह अंतिम जन्म होगा। और अगर हम इस मार्ग पर आकर भी यह ज्ञान प्राप्त

नहीं करते, तो हम वहीं रह जाएँगे और अपना जन्म व्यर्थ कर देंगे।

हम सम्पूर्ण जगत का ध्यानमय नहीं कर सकते हैं। यह असंभव है। रजोगुणी और तमोगुणी लोग कैसे ज्ञानी बन सकते हैं? हर कोई नहीं बन सकता। केवल सात्विक गुणी लोग ज्ञानी बनते हैं। केवल उन्हें ही अपनी बुद्धि विकसित करने का अवसर मिलता है। वे ही हमारे पास आते हैं।

अगर आप गौर करें, तो हमारी भीमावरम कक्षाओं में, या हमारे ज़ूम पर, न तो सैकड़ों लोग आते हैं, न ही हज़ारों लोग। केवल वे ही आ पाते हैं जो बुद्धि की अवस्था में होते हैं और बुद्धि की अवस्था पार कर चुके होते हैं। क्यों कि प्रकृति ने सृष्टि में सभी को बनाया है, इसलिए सभी के लिए हर तरह की व्यवस्था है। कुछ लोग जो तमोगुणी लोगों को सिखाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो रजोगुणी लोगों को सिखाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सात्विक और निर्गुण लोगों को सिखाते हैं।

इसलिए हम किसी और चीज़ को ज़्यादा महत्व नहीं देते। और क्या हम बाकियों को नहीं बता सकते? हम बता तो सकते हैं। लेकिन वो समझेंगे नहीं। क्या पोस्ट-ग्रेजुएशन कर चुका कोई हमें ए, बी, सी, डी नहीं बता सकता? वो बता तो सकता है। लेकिन वो कुछ और जन्म लेकर, आपके स्तर तक न पहुँच जाते हैं, तब तक नहीं समझेगा। अब तुम ज़रूर 350 से 360 जन्म पार कर चुके हो, तो समझ पा रहे हैं।

इसलिए, अपनी तुलना हर किसी से मत करो। तुम सब एक जैसे नहीं हो, तुम्हारी आत्मा की स्थिति अलग है। तुम बहुत उन्नत आत्माएँ हो। आखिरी जन्मों में आई आत्माएँ। इसलिए थोड़ा ध्यान दो। जितना तुम अपना ज्ञान बढ़ाओगे, तुम्हारे जन्मे उतने ही कम होंगे। हर किसी को अपने जन्मे कम करने की कोशिश करनी चाहिए। तभी तुम अपने लक्ष्य को जल्दी प्राप्त कर पाओगे।

''जैसे सूरज सुबह-सुबह अपनी लाल रोशनी की किरणों से सारा अंधेरा दूर कर देता है, वैसे ही आत्मा ज्ञान से अज्ञानता दूर हो जाता है और आत्मा स्वयं प्रकाशित होती है।''

पहली सुबह का मतलब है वह समय जब सुबह-सुबह सूरज उगता है, जब रोशनी की लाल किरणें आ रही होती हैं। जैसे-जैसे वे आती रहती हैं, अंधेरा कम होता जाता है। किरणें पहले आती रहती हैं। फिर सूरज उगता है।

भले ही वह दिखाई न दे, वे किरणें पहले दिखाई देती हैं, रोशनी आती रहती है। इसी तरह, जब सूरज डूबता है, तो सूरज धीरे-धीरे गायब हो जाता है। लेकिन उसकी किरणें, वह रोशनी, अभी भी थोड़ी सी होती हैं। धीरे-धीरे, वे भी पूरी तरह से गायब हो जाती हैं।

इसी तरह, जब आप पत्री जी द्वारा सिखाई गई ये चार चीजें कर रहे होते हैं, यानी

1) जब आप ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान तीव्रता से अभ्यास कर रहे होते हैं, यानी जब आप घंटों, दिनों, महीनों तक बिना किसी विचार की स्थिति में अभ्यास कर रहे होते हैं, तो भले ही आप तीन घंटे या चार घंटे बैठें, आपको बैठने जैसा महसूस नहीं होगा। आपको तीन या चार मिनट बैठने जैसा महसूस होगा। यही तीव्र अभ्यास है।

इनको कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वे पाँच या छह घंटे बैठे हैं। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि वे सोने से पहले बैठते हैं, और सुबह तक बैठे हैं। वह हालत सिर्फ़ उन्हें आती है जो ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान करते हैं, लेकिन उन्हें नहीं आती है जो म्यूज़िक पर ध्यान करते हैं और जो गाइडिंग करते हैं।

यह शक्ति उन्हें नहीं मिलती जो किसी और तरह का ध्यान करते हैं। यह शक्ति सिर्फ ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान करने से ही मिलता है।

2) इसके साथ ही, आपको आत्म-ज्ञान से जुड़ी किताबें पढ़नी चाहिए, जो आत्म-ज्ञानी लोगों द्वारा लिखी गई हों। किताबें पढ़ते समय आपको बहुत सावधान रहना चाहिए। अगर आप शरीर, मन, शरीर के लाभ, मन के लाभ से जुड़ी किताबें यह कहकर पढ़ेंगे कि ये हमारा समाज के लोग का है, तो आपको आत्म-ज्ञान नहीं मिलेगा। आपका विकास नहीं होगा, न ही आपको ज्ञान प्राप्त होगा।

पत्री जी द्वारा रचित पुस्तकें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भगवद्गीता, उपनिषद, पुराण, साथ ही कुछ योगियों, शंकराचार्य, वशिष्ठ, वेमना, वीरब्रह्मेंद्र स्वामी और कबीर के अद्भुत संदेशों वाली पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिए।

इसके अलावा, विचार शक्ति, मन की शक्ति, आपका जीवन आपके हाथ में है, ये सब चीज़ें नहीं। क्योंकि सैकड़ों लोग योग की अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं... उन सबको लेना है, इकट्ठा करना है। यह कुछ किताबें लेकर संतुष्ट होने की बात नहीं है। आप बहुत पैसा खर्च करते हैं। उस पैसे का कुछ हिस्सा आत्मा को लाभ पहुँचाने वाले ज्ञान को अर्जित करने में लगाएँ, यानी किताबें इकट्ठा करें।

सभी किताबों को अपने कमरे में, बिस्तर के पास, एक शेल्फ में इकट्ठा करके रख दीजिए। अगर आपको ऐसा करने का थोड़ा खाली समय मिले, तो आप एक किताब निकालकर पढ़ना चाहेंगे। जब आपका पढ़ने का मन करे, तो एक किताब निकाल लीजिए। इससे आपको ज़रूर फ़ायदा होगा। आपको कोई एक ही किताब सीरियल में नहीं पढ़नी चाहिए। आपको वही विषय पढ़ना चाहिए जो आपको पसंद हो। अगर आप किसी बात का पालन नहीं करते, तो ज्ञान बढ़ाना बहुत मुश्किल है।

चाहे आपको कितने भी लाभ मिले, चाहे आप कितना भी प्राप्त करें, यदि आप ज्ञान प्राप्त नहीं करते हैं, तो आपको अपने किए गए कार्यों और मेहनत का सही परिणाम नहीं मिला। इसलिए, ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान जितना महत्वपूर्ण है, ज्ञान से संबंधित पुस्तकें भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।

3) आपको आत्म-ज्ञान सिखाने वालों के संदेश भी सुनने चाहिए। आप चाहे जितना भी सुनें, आपको देखना चाहिए कि आपने कितना ज्ञान अर्जित किया है। अगर आपमें वो बदलाव नहीं आते, तो समझ लीजिए कि आपको और मेहनत करने की ज़रूरत है। क्योंकि जब आप सुनते हैं, तो ये बातें याद कहाँ रहती है ? आप सुनी हुई हर बात को समझ कहाँ पाते हैं ? अगर समझ ही नहीं है, तो अभ्यास कहाँ है ? अगर अभ्यास ही नहीं है, तो ज्ञान कहाँ से आएगा ?

साथ ही, जो ज्ञान आपने अर्जित किया है उसे सबके साथ बाँटें। 22 साल पहले जब मैं पत्री जी से मिला, तो मैंने उनसे यही सीखा था, ''बाँटने से बढ़ता है।'' मैंने यह बात समझ ली, लेकिन शुरुआत में मैं ज़्यादा आगे नहीं बढ़ पाया। क्योंकि तब मैं थोड़ा स्वार्थी था। मुझे लगता था कि अगर मैंने यह सीखा हुआ ज्ञान बाँटा, तो वे आगे बढ़ेंगे और मुझसे मुकाबला करेंगे। लेकिन पत्री जी को देखने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि यह ज्ञान अनंत है, और मेरे पास चाहे कितना भी ज्ञान क्यों न हो, यह मुझे ऊपर से मिलता ही रहेगा।

इसलिए, मैं बिना किसी हिचकिचाहट के अपने लोगों के साथ अपनी सारी जानकारी साझा करता रहा हूँ, और तब से मैंने कुछ भी नहीं छिपाया है। एक बार पत्री जी ने अम्मा और मेरे साथ कहा, ''मेरे पास और क्या है ? मैंने तो तुम्हें सब कुछ दे दिया है, है ना ?'' । और उन्होंने इतनी सारी किताबें लिखी हैं और सारे राज़ बताए हैं। लेकिन हमारे कई

मास्टर छिपाते हैं। अगर मैं उन्हें बता दूँ, तो वे मुझसे आगे निकल जाएँगे, के डर से वो छिपाते हैं।

लेकिन मैंने पत्री जी से साफ़-साफ़ सीखा है। इसलिए मैं आपको वीडियो के ज़रिए भी बताता रहता हूँ, किताबों में भी लिखता हूँ, और आपके पूछने पर भी बताता रहता हूँ। इस सिद्धांत का पालन करें। देखिए आप कितने महान बनेंगे। आपको अपनी बात सुनाने के लिए हर किसी को परेशान करने की ज़रूरत नहीं है। जो लोग रुचि रखते हैं, उन्हें बिना छिपाए, जो तकनीक आपने सीखी है, अपना ज्ञान, जो भी आपके पास है, उसे बताने की कोशिश करें।

पत्री जी ने कहा कि अगर एक शिष्य एक कदम आगे बढ़ता है, तो गुरु दस कदम और आगे बढ़ेगा। क्योंकि सृष्टि में अनंत ज्ञान है। इसका कोई अंत नहीं है। अगर हम इसे सबके साथ बाँटेंगे, तो ईश्वर और भी ज़्यादा प्रसन्न होंगे। वह सबके लिए मेहनत कर रहा है, हमें उनकी मदद करनी चाहिए। ऐसे हर प्रकार का मदद पहुंचाते हैं। इस रहस्य को मत भूलना।

यह एक बेहतरीन सिद्धांत है अगर आपको विकसित करना होगा। जब आपसे आपके ज्ञान, आपकी तकनीक या आपके किसी भी कौशल के बारे में पूछा जाए, और कोई आपकी बात सुनने में रुचि दिखाए, तो ज़रूर मदद करें।

आप टेक्नोलॉजी में और भी बहुत सी तकनीकें सीखेंगे। मैंने देखा है कि हमें सब कुछ देने पर भी वे एक दम बड़े नहीं हो सकते। यह इतना आसान नहीं है। अगर वह बहुत मेहनत करें तो वे बड़े हो सकते हैं।

इसलिए, आपको इस ज्ञान से जुड़े संदेश अवश्य सुनने चाहिए। यानी भीमावरम में भी और सुबह के ज़ूम में भी आपको सुनना चाहिए। उसे लिखना चाहिए, उस पर बार-बार मनन करना चाहिए, उसे समझने

की कोशिश करनी चाहिए, और जब आप उसे समझ जाएँगे, तभी आप उसका अच्छी तरह से आचरण कर पाएँगे, अगर आप आचरण करते रहेंगे, तो आपका ज्ञान बिना आपको पता चले ही बढ़ता जाएगा।

हर तीन या छह महीने में खुद को परखें और लिखें कि आपमें कितनी चीज़ें बदली हैं। आत्मज्ञानी व्यक्ति के गुणों और व्यवहार की एक विशेष पुस्तिका रखें। बहुत सी चीज़ें होती हैं। अगर आप देखें कि आप उनमें से कितनों का पालन कर रहे हैं, तो आपको समझ आ जाएगा कि आपमें विकास हुआ है या नहीं। किसी को हमें प्रमाणपत्र देने की ज़रूरत नहीं है।

4) तो फिर इस मार्ग पर यथाशक्ति सेवा करनी चाहिए। विशेषकर सत्य सिखाने को महत्व देना चाहिए। सत्य ही सबसे महान है। सत्य ही आत्मा है, आत्मा ही परम ब्रह्म है, उसके अतिरिक्त इस सृष्टि में कुछ भी नहीं है, उससे परे कोई नहीं है। सब कुछ वही है! इसलिए तुम्हें किसी से छिपने की ज़रूरत नहीं है।

परब्रह्म कौन नहीं है? सब एक जैसे हैं! आपको यह कहाँ से मिला? आपको यह उनसे मिला है। आप इसे सबको दे रहे हैं। इसलिए मैं उन सभी को, जो भटक गए हैं, इस ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान के बारे में बताना को कह रहा हूँ, जिससे सत्य की शरण ली जा सकती है। इससे बड़ी कोई सेवा नहीं है। हमें इसे यथासंभव करना चाहिए। उससे कोई पीछे मुड़कर देखने को ज़रूरत नहीं होगी।

15 साल पहले, यह समझा गया कि मांस के खतरों और शाकाहार के महत्व के बारे में सबको बताना मुख्य है। तब पत्री जी के संदेश पर आधारित दो किताबें प्रकाशित किया था। शुरुआत में इसकी कीमत ढाई रुपये थी, फिर तीन, चार, पाँच और अब, दाम बढ़ने के बाद, यह छह रुपये में उपलब्ध है।

हमने कुछ लाखों किताबें वितरित कीं और उन किताबों को पढ़ने के बाद कई लोग शाकाहारी बन गए।

इसके अलावा, एक समय ऐसा भी था जब कोई संगीत या गाइडिंग नहीं था, और लोग ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान ही करते थे, जो पत्री जी ने उन्हें सिखाया था। अगर पत्री जी कहीं संगीत बजाते, तो लोग उस पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते थे, बल्कि उनकी उपस्थिति में ही करते थे। जब वे घर पर होते, तो चुपचाप ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान करते थे। लॉकडाउन के बाद से यह सब बदल गया है।

उन्हें पता ही नहीं कि वे सत्य से भटक गए हैं और इस बदलाव की वजह से उन्हें नष्ट हो रही है, लेकिन वे इसे अपना लाभ समझते हैं। क्योंकि जब वे मूर्ख होते हैं, तो दूसरों की बात नहीं सुनते, और कहते हैं कि उन्हें जो पता है, वही सही है। वे इस सोच में डूबे रहते हैं कि मैंने जो खरगोश पकड़ा है, उसके तीन पैर हैं। हमें ऐसे मूर्खों को किनारे करके बुद्धिमानों को बताना चाहिए। और क्यों कि हम नहीं जानते कि जो लोग आए हैं, उनमें से कौन बुद्धिमान हैं, इसलिए हमें इन पुस्तकों के माध्यम से उन्हें अवगत कराया जाना चाहिए।

बुद्ध ने और पत्री जी ने भी कहा, ''मूर्खों से बहस मत करो, उन्हें समझाने की कोशिश मत करो।'' अगर वह एक-दो बार बहस करने लगे, तो उसे छोड़ दो। बस मान लो कि वह सही है और जो आप कर रहे हो, करते रहो। इस दुनिया में अगर वह एक इंसान न सुने, तो कोई बुराई नहीं है। बहुत से लोग हैं जो सुनेंगे। चलो उसे बताने की कोशिश करते हैं।

पत्री जी ने कहा, मूर्ति पूजा नहीं, सिर्फ़ सत्य कि आराधना करने को। इसका कारण यह है कि वह मूर्ति असत्य है। बहुत से लोग इससे सहमत नहीं थे, क्यों कि वे पूजा मना किया। इसलिए उन्होंने क्लास में

आना बंद कर दिया। लेकिन उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था, चाहे कितनी भी जगहें हों, चाहे कितनी भी तरह की रुकावटें हों, चाहे कितने भी हालात हों, चाहे कितने भी झगड़े हों उन्होंने सत्य का कभी त्याग नहीं किया।

हम इस मार्ग पर इसलिए आए हैं क्योंकि उन्होंने कहा था कि मूर्ति नहीं , आत्मा ही सत्य है, आत्मा ही ईश्वर है। मूर्ति असत्य है, परिवर्तनशील है, और जो अपरिवर्तनशील , शाश्वत , आत्मा के साथ रहने को कहा। आत्मा के साथ रहने का उपाय है ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान करना, उन्होंने कहा। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने मांसाहार को मना किया। हिंसा अधर्म है, मांस तब तक नहीं आता जब तक हिंसा न की जाए, यह अधर्म है, उन्होंने निडरता और निर्भीकता से कहा।

अब, सिर्फ़ ये दो ही नहीं, बल्कि एक और बड़ी समस्या खड़ी हो गई है। जैसा कि पत्री जी ने कहा, सत्य की शरण लेने, सत्य को पाने को, और अब लोग सत्य के पास ले जाने वाले ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान को छोड़कर असत्य मनस को पकड़ रहे हैं। मनस पर ही रुक रहे हैं। इसलिए, यह कहना हमारा धर्म है।

जब हम मूर्ति पूजा की बात करते थे, तब भी हमसे असहमत होते धे, जब हम अब ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान की बात करते हैं, यह आश्चर्य की बात है कि,बड़े मास्टर्स असहमति जताते हैं। ऐसे लोगों की आँखें खोलने के लिए ही हम सही साधना के बारे में एक पुस्तक प्रकाशित करने और उसे सभी के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहे हैं।

क्योंकि जब हम उनसे बहस करते हैं, जब हम चर्चा करते हैं, तो हम किताब की सारी बातें एक साथ नहीं दे सकते। जब हम उन्हें ये किताब देते हैं, इसे पढ़ते हैं और निर्णय लेते हैं, और इसे पढ़ने के बाद भी अगर आपको लगता है कि आप जो कर रहे हैं वो सही है, तो उसे करें, हमें कहने के बाद, जो भी सत्य का आश्रय करने का अर्हत है, तो वो ही

आएंगे।

सत्यं मतलब भगवान है, परब्रह्म है। हर कोई परब्रह्म की आश्रय करने के योग्य नहीं है। हम सब वो हैं जो योग्य हैं। वे योग्य नहीं हैं इसलिए वे असहमत हैं और स्वीकार नहीं करता।

भगवद्गीता में ही लिखा है कि उसे पहचानना इतना आसान नहीं है। हम किसी जन्म के पुण्य के आधार पर इसके योग्य हैं। उन्हें और भी कई जन्म लेने पड़ेंगे।

इसलिए, यदि आप ऐसी सेवा में भाग लेते हैं, तो आपका ज्ञान धीरे-धीरे कुछ दिनों में, अनजाने में ही बढ़ता जाएगा। जैसे सूर्योदय होने से अंधकार दूर हो जाता है, वैसे ही आत्म-ज्ञान से अज्ञान दूर होता है, और आत्मा स्वयं प्रकाशित होती है। वह आत्मा आपके माध्यम से अनेक महान कार्य करवायेगी। आपके अज्ञानता, आत्मा के चारों ओर अंधकार करता है, यानि मनस हटने से आपके भीतर की आत्मा प्रकाशित होगी, और आपको भीतर से अनेक प्रकार के संदेश, उपदेश और महान ज्ञान प्रदान करेगी।

जिस प्रकार सूर्योदय होने पर अंधकार दूर हो जाता है और सूर्य चमकने लगता है, उसी प्रकार ज्ञान प्राप्त होने पर अज्ञान स्वयं ही दूर हो जाता है और आत्मा चमकने लगती है।

::19::

''जैसे आरणि में मंथन करने से अग्नि निकलती है और सारे लकड़ी को जलाती है, वैसे ही यह आत्मा नामक आरणि में, 'श्वास पर ध्यास' ध्यान नामक मंथन से, ज्ञान नामक अग्नि को प्राप्त करके, अपने सारे कर्मों नामक लकड़ियों को जलाती है।''

हर इंसान अपने बुरे कर्मों और पाप कर्मों के कारण कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करता है। जब तक वे कर्म विद्यमान रहेंगे, तब तक जीवन में कठिनाइयाँ आती रहेंगी। इसलिए, इन कठिनाइयों को दूर करना चाहिए, अर्थात कर्मों को नष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। लेकिन जब तक वे अपने संचित कर्मों को जला नहीं देते, तब तक वे जन्म लेते रहेंगे और कठिनाइयाँ भोगते रहेंगे।

इसलिए, अगर कष्ट न हों, तो जन्म न हों, और अगर जन्म न हों, तो कर्म भी न हों। और अगर ये कर्म न हों, तो इन्हें जला देना चाहिए। ये कब जलेंगे? जब ज्ञान अग्नि के समान हो जाएगा, तो उस ज्ञान अग्नि में सारे कर्म जल जाएँगे और मोक्ष की प्राप्ति होगी।

किसी भी मनुष्य को, किसी भी समय, चाहे उसके कितने भी जन्म हों, ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए। केवल एक कठिनाई को दूर करना ही पर्याप्त नहीं है, उन सभी कर्मों को जलाना आवश्यक है जिनके कारण कठिनाइयाँ उत्पन्न हुई थीं, और ऐसा करने का ज्ञान प्राप्त करने के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं है। वह ज्ञान केवल ध्यान, ''श्वास पर ध्यास'' से ही प्राप्त किया जा सकता है। चाहे पत्री जी ने कहा हो, अब शंकराचार्य जी ने कहा हो, या श्रीकृष्ण ने कहा हो, जो भी कह रहा हो, वे एक ही बात कह रहे हैं।

इसीलिए, शंकराचार्य जी ने कहा था, ''यदि तुम इस शरीर से, जहाँ आत्मा है, ध्यान करो, तो ज्ञान की अग्नि उत्पन्न होगी और तुम्हारे

सभी कर्मों को भस्म कर देगी।'' भगवान कृष्ण ने भगवद् गीता के चौथे अध्याय के 37वें श्लोक में यही कहा है कि, ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणां ।

श्लोक:

यथैधांसि समिध्दोअग्नि र्भस्मसात्कुरुतेअर्जुन ।

ज्ञानाग्निः स्सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ।।(भ.गी. 4-37)

ता: अर्जुन! जैसे अच्छी तरह जली हुई अग्नि लकड़ी को राख कर देती है, वैसे ही ज्ञान की आग सभी कर्मों को राख कर देती है।

बहुत से लोग, जब बीमार पड़ते हैं या मुश्किलों का सामना करते हैं, तो तरह-तरह के कारण बताकर डॉक्टरों, विद्वानों, पादरियों और मौलवियों के पास जाते हैं और जो कहा जाता है, वही करते हैं। लेकिन किसी को भी यह समझ नहीं आती कि जो मुश्किलें उन्हें झेलनी पड़ रही हैं, वे उनके कर्मों के कारण हैं। खासकर अगर आप उनसे पूछें, तो वे आपको बता देंगे। इन कर्मों से उत्पन्न मुश्किलों से मुक्ति पाने के दो तरीके हैं।

1) यदि वे अनुभव किये गये हैं तो वे चले जायेंगे, 2) यदि वे कर्म खत्म होने से तो वे चले जायेंगे।

कर्म के खत्म हो जाने की प्रक्रिया को हम भस्म होना कहते हैं। अगर आप इसे भोगेंगे तो यह मिट जाएगा, यानी आपने जो कर्म किया है, उसे एक से तीन महीने, छह महीने, तीन साल या छह साल तक भोगेंगे।

तब तक, चाहे आप कितने भी डॉक्टरों के पास जाएँ, चाहे आप कितने भी लाखों खर्च कर दें, कोई फायदा नहीं होगा। चाहे आप कितने भी स्वामियों के पास जाएँ, चाहे आप कितने भी गुरुओं के पास जाएँ, चाहे आप कितने भी धर्म बदल लें, चाहे आप कितने भी प्रयास कर लें, आप इससे बाहर नहीं निकल पाएँगे।

फिर, निराश होकर, वे कहते हैं, मैं ये कर रहा हूँ, मैं इस धर्म में हूँ, मुझे खत्म नहीं हो रहा है, यह रास्ता मेरे काम नहीं आ रहा समझकर,

और वे किसी दूसरे गुरु, किसी दूसरे उस्ताद, किसी दूसरे धर्म की ओर चले जाते हैं। हमारे समाज में आजकल चाहे जो भी चर्चा हो, फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं। सचमुच, उनके भाग्य के अनुसार, सब कुछ परिष्कार करने वाले ज्ञान मार्ग में आए हैं।

जब वे इस तरह हमारे पास आते हैं, तो उनके द्वारा किए गए थोड़े से ध्यान में ही सब कुछ कैसे खो सकता है ?

इसीलिए वे तरह-तरह के गुरुओं के पास जाते हैं। अब कई गुरु उन्हें धोखा दे रहे हैं। वे आँखें बंद करके ज़ोर-ज़ोर से भगवान शिव के भजन गाते हैं। वे ध्यान नहीं करते। वे बस आँखें बंद कर लेते हैं। उन गीतों को सुनकर, वे बहुत उत्तेजित हो जाते हैं। मन उत्तेजित हो जाता है और शरीर झूम उठता है। जब ऐसा होता है, तो वे गुरु आँखें बंद करके ऐसे बैठते हैं जैसे किसी चीज़ का ध्यान कर रहे हों। फिर कुछ लोग कहते हैं कि वह उन्हें शक्ति दे रहे हैं और इसीलिए वे ऐसे झूम रहे हैं।

वे उन्हें यूट्यूब या टीवी पर देखते हैं और सोचते हैं, अरे, अगर हम उनके पास जाएँ, तो हमें वो शक्ति मिल जाएगी। वे देखते हैं कि कौन झूम रहा है और उन सभी लोगों को मंच पर बिठा देते हैं। मंच पर आने वाले सभी लोग झूमने वाले होते हैं। जैसे ही वे ऐसा गाना बजाते हैं, वे ऐसे ही झूमते रहते हैं। उन्हें देखकर वे चकित हो जाते हैं और कहते हैं, अरे, ये गुरु कितने महान हैं ? वे कोई न कोई कारण बताते हैं। वे लाखों नहीं, करोड़ों दे रहे हैं। इसी तरह वे पैसे कमाते हैं।

अगर आप बस बिना उन गानों को बजाए बिठायेंगे, तो कुछ नहीं होगा। मुझे नहीं पता कि उन्हें ऊर्जा मिली या नहीं, मुझे नहीं पता कि उन्होंने दी या नहीं, वो भी झूमते हैं, वो उन्हें झुलाते रहते हैं। उन्हें देखकर हमें हंसी आती है। अगर इतने शोर में उनके मनस काम कर रहा है, तो उन्हें ऊर्जा कहाँ से मिलती है ? पत्री जी ने साफ़ कहा कि कोई किसी को

कुछ नहीं दे सकता। कृष्ण ने खुद कहा था कि हर कोई अपने आप ही का उत्थान करना चाहिए।

वे वास्तव में कैसे देंगे ? उनमें कितनी शक्ति है ? विश्वामित्र को देखकर हम समझ सकते हैं कि अगर हम वास्तव में ऐसी शक्ति दें तो क्या होता है। कुछ गुरुओं ने अच्छी साधना की है और अपनी शक्ति बढ़ाई है। जब वे लोगों के बीच आते हैं, तो अपनी कुछ शक्ति उनकी कठिनाइयों और उनकी इच्छाओं के अनुसार खर्च करते हैं और उनके रोग और व्याधियाँ कम करते हैं, तब उनकी सारी शक्ति समाप्त हो जाती है, और वे साधारण इंसान बन गए हैं।

जब उनके पास ये गुण होते हैं, तो उनका आकर्षण ज्यादा होती है। वे जो कहते हैं, वही होता है। जब वे इसे खो देते हैं, तो वे साधारण इंसान बन जाते हैं और बाकी सब जैसे हो जाते हैं। इसीलिए वे फिर से ध्यान करने और शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

वनस्थलीपुरम के एक गुरु मानसिक योग सिखाते हैं। वे अमेरिका गए और वहाँ कुछ लोगों को सिखाया और अपनी शक्ति खो बैठे। यहाँ आकर वे बाहर नहीं निकले और आश्रम में बैठकर फिर से अभ्यास करने लगे। उन्होंने कई वर्षों तक जो कमाया था, वह चला गया। इसलिए अगर कोई किसी और को शक्ति दे दे, तो वह शून्य हो जाता है। उसे और क्या देगा ?

इसलिए पत्री जी ऐसा कुछ नहीं करते ? वो अपनी ऊर्जा नहीं खोते। जब कहीं किसी को ये यकीन हो जाता है कि वो आगे चलकर दुनिया के कल्याण के लिए मेहनत करेंगे, वह भी आख़िरी चार दिन या हफ़्ते में उसमें कर्म खत्म होने वाला है, तो वो उसे सुधारते हैं और उनसे काम करवाते हैं। वो सबको हिम्मत देने वाले शब्द कहते रहते हैं, बताते रहते हैं कि क्या करना है।

मेरी मैडम के साथ भी यही हुआ। अग्नि के दुर्घटना के बाद उसने धैर्य ही दिया। तुम्हें कुछ नहीं होगा, तुम सामान्य हो जाएगी, उन्होंने कहा कि वह सब कुछ करेंगी जो वह कर सकती हैं, विदेश भी जाएंगी। उस हिम्मत से वह ठीक हो गईं। जब भी वह हिम्मत हार जातीं, तो 10 या 15 दिन में एक बार अस्पताल आकर उसे हिम्मत देकर वापस आते थे। मैं एक बार उन्होंने कहा, कि मैं कितने लोगों के साथ ऐसा करूं ? कितने लोगों ऐसा कर सकता हूँ ? तब मैंने समझ गया।

इसलिए वे साफ-साफ कहते हैं कि अगर तुम मेरा हाथ पकड़ोगे तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा, अगर तुम मेरे पैर पकड़ोगे तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। अगर मैं अपना हाथ तुम्हारे सिर पर रखूंगा तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। भले ही सेतु महाशय ने कहा हो, भले ही श्री कृष्ण ने कहा हो, उन्होंने कहा 'उद्धारेदात्मनात्मानम' यानी, वे साफ-साफ संदेश देते हैं कि हर कोई अपने आप को ही उत्थान करना चाहिए।

और अब जो भी आ रहा है वह कहता है कि मैं करूंगा। वे क्या करेंगे ? कुछ समय बाद, कर्म खत्म हो जाएगा, वे बाहर आ जाएंगे, वे कहेंगे कि मैंने ही खुद किया है। अभी यही हाल है, सब एस्ट्रल सर्जरी भी यही है, सब संकल्प ध्यान भी वही हैं, इन सब बातों से कुछ नहीं होगा। जिसका कर्म खत्म होकर, आखिर तक पहुंचें है, वही बाहर निकल जाएंगे।

इसलिए याद रखना कि कर्म से होने वाली मुश्किलें अगर झेली जाएं या कर्म खत्म हो जाएं तो गायब हो जाएंगी।

इसलिए पत्री जी क्या कहते हैं! ''अगर बीता हुआ कल समझ लिया जाए, तो वह गायब हो जाएगा।'' उस बीते हुए कल को समझना ही ज्ञान है। समझना ही उस ज्ञान को पाना है। यानी, वे समझते हैं कि यह मुश्किल उनके पिछले किए गए पाप कर्मों की वजह से आई है। फिर, उस

मुश्किल को झेलते हुए, वे अंतर मंथन शुरू होता हैं। तो समझेगा कि ऐसा कर्म करने की वजह से ही मुझे अब इतनी मुश्किल हो रही है। अगर मैंने वह कर्म नहीं किया होता, तो यह मुश्किल अब नहीं होती है।

अब वह तय करता है कि मैं किसी भी हालत में ऐसा कर्म नहीं करूँगा। चाहे मेरी जान चली जाए। वह इतनी मज़बूती से तय करता है कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह ऐसा काम नहीं करेगा। जब वह ऐसा तय कर लेता है, तो कोई उसे कितना भी लालच दे, वह गलती से भी वह काम नहीं करेगा। यानी उसे वह ज्ञान मिल गया है, वह इस जन्म में वह काम नहीं करेगा, चाहे कितने भी जन्म ले ले।

आप सोचिए उसे कैसे पता चलेगा। भले ही उसने 10 जन्म पहले तय किया हो। भले ही उसने 50 जन्म पहले तय किया हो, उसने जो तय किया वह आत्मा में स्टोर हो जाएगा। भले ही वह कितने भी जन्म लेने के बाद वह काम करे, तुरंत आत्मा से चेतावनी आती है कि, तुम यह काम क्यों कर रहे हो? वह तुरंत वह काम नहीं करता।

क्योंकि उसने पहले जो किया है, उसी की वजह से ही, का समझ आ गया है, यानी वह समझ गया है। चाहे कुछ भी हो, इंसान के अपने कर्मों में जो कुछ बंद करता है, वे सब खत्म हो जाएंगे, यानी दग्ध हो जाएंगे! लेकिन सब कुछ नहीं जाएगा, सिर्फ ऐसे कर्मों ही चले जाएंगे। वजह यह है कि इंसान को इस ज्ञान अच्छी तरह समझ गया है।

अब देखिए, बहुत से लोग मांस खा रहे हैं। इसकी वजह शायद संस्कृति हो, परिवार की परंपरा हो, या शायद सब लोग खा रहे हों। लेकिन उस परिवार के कुछ लोगों ने, जैसे आप, इन ज्ञान-कक्षाओं को सुनकर यह सीख लिया है कि उन्हें मांस नहीं खाना चाहिए, उन जानवरों पर अत्याचार नहीं करना चाहिए, वे भी मेरी तरह आत्मा हैं, मेरे समान हैं! अगर उन्हें यह ज्ञान हो जाए, तो वे फिर कभी किसी भी हालत में मांस न

खाने का निर्णय लेते हैं।

आपके परिवार में, बच्चे हो सकते हैं, पति हो सकते हैं, माता-पिता हो सकते हैं, कोई भी हो सकता है, वे अभी शुरू जन्मों में हैं, उन्होंने ऐसा कोई फ़ैसला नहीं लिया है, वे परंपरा के अनुसार खा रहे हैं। अगर आप उन्हें बताएँ, तो वे समझ नहीं पाते, वे खाना बंद नहीं करेंगे। वे कई कारण बताते हैं, कहते हैं, अगर तुम बंद करो तो बंद करो, जब तुम्हारी उम्र हो जाएगी, तब हम बंद कर देंगे।

लेकिन आप किसी भी हालत में इसे नहीं लेते, घरवाले पूछते हैं, आपको ताकत कहाँ से मिलेंगी ? आप काम कैसे करेंगे ? आप उनकी बातें सुनते हैं, लेकिन क्या शाकाहारी लोग ज़िंदा नहीं रहते ? क्या शाकाहारी कुछ नहीं करते ? क्या शाकाहारियों के पास हर तरह के प्रोटीन नहीं होते ? ऐसे आप को जो कहना है, कहते हैं।

और हाँ, आप समाज में रहते हैं, इसलिए इन समारोहों, शादियों, पार्टियों में जाते हैं। वहाँ नॉन-वेज भी मिलता है। यहाँ आप कहते हैं, मैंने तो बंद कर लिया, किसी भी हालत में नहीं लूँगा, बस देखने आया था। फिर वे आपसे बिनती करते हैं खाने को।

वे मिन्नतें करते हैं और बहाने बनाते हैं, कहते हैं, बस एक बार खा लो, बस एक बार खा लो, हमारे लिए खा लो, अगर बिना खाए चले गए तो क्या होगा ? जितना ज़्यादा वे बहाने बनाते हैं, उतना ही कुछ लोगों को यह बात खींचती है। बस एक ही बार है न ? वे कुछ टुकड़े खा लेते हैं और कहते हैं, चलो एक बार खा लेते हैं और फिर बंद करते हैं।

कुछ लोग इस स्वाद का विरोध नहीं कर पाते। वे टुकड़े देखते ही उनकी लार बहती रहती है। तो यहाँ क्या हुआ ? यहां उनके पुराने कर्मों को समझ नहीं पाया। इसीलिए इनके खाते में जमा किया ऐसे कर्मों सभी रह जाते हैं।

जन्म–जन्मांतर के वो सारे कर्म वैसे ही रहते हैं। जब वो समय आता है, तो उसका फल मिलता है। उन्हें लगता है कि एक बार खा लेंगे तो क्या हो जाएगा। वे यहाँ पर अपने विचार से पीछे हट गए। इसलिए, वो कर्म निश्चित रूप से दग्ध या नष्ट नहीं होंगे। उन्होंने पिछले कर्मों को समझ में नहीं आया।

इसी तरह, कुछ औरतें अपने पतियों के लिए मांस बनाती हैं। उन्हें यह पसंद है, और वे मना नहीं कर सकतीं। वे उनके लिए यह कहकर पकाती हैं कि उन्हें यह नहीं खाना है। भले ही वे इसे मार दें, टुकड़ों में काट लें, पकाएँ, खाने के लिए उकसाएँ, खाएँ, परोसें, यह हिंसा ही है!

लेकिन जो लोग अपने पिछले कर्मों को समझते हैं, जब उन्हें अवगत हो, तो वे न केवल इसे रोकते हैं, बल्कि चाहे उनके पति उन पर कितना भी दबाव डालें, वे कहते हैं, मैं हाथ नहीं लगाऊँगा। अगर तुम चाहो, बाहर जाकर खाओ, मुझे परेशान मत करो, मैं नहीं खा सकता। तुम जो चाहो करो, मैं कुछ और करने को तैयार हूं। मुझसे वह एक काम मत करने को कहो, वे कहती हैं।

अगर पति उसे बहुत ज़्यादा परेशान कर रहा है, हमारे लोग में भी कुछ कहा, अगर तुम मुझे मार दो तो मुझे खुशी होगी, लेकिन मैं उन्हें नहीं मारूंगा। पति क्या करेगा? बहुत से ऐसे हैं जो अपनी पत्नियों को न छोड़ सकते हैं, बाहर जाकर खाते हैं। ऐसी पत्नियों के लिए, उनके कई जन्मों के किए हुए सारे कर्म दग्ध हो जाते हैं।

उन्हें ऐसे कर्मों को भोगने का मौका नहीं मिलेगा। वे मुश्किलें उनके पास नहीं आएंगी। अगर तुम समझौता करोगे, तो वे सारे कर्म तुम्हारे अकाउंट में ही रहेंगे। वही पत्री जी ने कहा, ''अगर बीता हुआ कर्मों समझ लिया जाए, तो वह खत्म हो जाएगा।''

उसी को शंकराचार्य जी ने साफ कहा कि ज्ञान की अग्नि में ही कर्मों दग्ध हो जाएंगे।

ज्ञान का मतलब है अपना किए हुए गलतियों को जानना और समझना। दुनिया में मौजूद सिद्धांतों और नियमों को समझना। अगर आप इस तरह से हर तरह की गलतियों को समझ जाते हैं, यानी अगर आपको पूरा ज्ञान मिल जाता है, तो सभी कर्म नष्ट हो जाएंगे।

आपके अकाउंट में और कोई कर्म नहीं रहेंगे। आप दोबारा कहां जन्म लेंगे? आप जो भी समझेंगे, उस तरह के कर्म नष्ट हो जाएंगे। इस तरह, आपको हर गलती और बुराई को ठीक करना होगा। इस तरह, आपके अंदर कई तरह की बुराइयां हैं, और आपको एक जन्म में उनमें से कम से कम कुछ को ठीक करना होगा।

अगर आप बिना रुके भीमावरम आते हैं और तीव्र से ध्यान करते हैं, अगर आप लगातार जूम पर आते हैं और अपना ज्ञान बढ़ाते हैं, तो आप और भी बहुत कुछ जान जाएंगे। अपने आप जान जाएंगे, किसी को आपको बताने की ज़रूरत नहीं होगी! आपकी बुद्धि बहुत बढ़ जाएगी, फिर आप सब कुछ जान जाएंगे।

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।..... Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।..... Rs.160/-
3. भगवद् गीता का सार ।..... Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।..... Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है।..... Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?..... Rs.120/-
7. भगवान कौन है।..... Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।..... Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ ।..... Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।..... Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ?..... Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।..... Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?..... Rs.100/-
14. इच्छाओं के कारण होने वाली हानियाँ..... Rs.100/-
15. शंकराचार्य जी का ज्ञान संदेश..... Rs.100/-
16. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।..... Rs.80/-
17. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।..... Rs.80/-
18. आत्म हंतक कौन होता है ।..... Rs.70/-
19. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
20. दुख निवारण का मार्ग..... Rs.75/-
21. उत्तम पुरूष..... Rs.60/-
22. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ?..... Rs.60/-
23. निर्वाण मार्ग..... Rs.60/-
24. सत्य..... Rs.50/-
25. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ?..... Rs.50/-
26. गुरू को पहचानना कैसे ?..... Rs.50/-
27. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या..... Rs.50/-
28. शाकाहार ही मानव का आहार है!..... Rs.50/-
29. ब्रह्मं क्या है ?..... Rs.50/-
30. शंकराचार्य जी का जाग्रत पंचक..... Rs.50/-
31. शंकराचार्य जी का निर्वाण शट्कम..... Rs.50/-
32. चैंपियन बनना हो तो ?..... Rs.50/-
33. तीन प्रकार के जीवन..... Rs.50/-
34. संकल्प अर्थात ?..... Rs.40/-

- एक मुनि जो आत्म ज्ञानी है, भले ही वह मानव के शरीर में हो, वह शरीर से जुड़े किसी भी सहज गुण के बिना, आसमान की तरह जीता है। भले ही वह दुनिया के बारे में सब कुछ अच्छी तरह जानता हो, वह ऐसे घूमता है जैसे कुछ नहीं जानता।
- बाह्य के वस्तुएं, जो अनित्य हैं, और भ्रम पैदा कर रही हैं, उन पर सुख प्राप्त करने की इच्छा का गुण, को त्याग देना चाहिए, तथा आत्मा की सुख में स्थित रहकर, संतुष्ट रहना चाहिए। ऐसा व्यक्ति अपने भीतर, हंडिया में दीपक की तरह चमकता है।
- जिसने आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया है, मोह के सागर को पार कर, राग-द्वेष के राक्षसों को मार कर, तथा शांतिपूर्ण जीवन से आत्मा अनुभव प्राप्त कर, वह ब्रह्मानंद से प्रकाशित होते है।
- जिस प्रकार भ्रमर के कारण कीड़ा भ्रमर बन जाता है, उसी प्रकार मुक्त आत्मा आत्मज्ञान प्राप्त करके पूर्व शरीर से संबंधित गुणों को त्याग देती है, तथा सच्चिदानंद स्वरूप होकर ब्रह्म का निरंतर चिंतन करके ब्रह्म हो जाती है।
- एक योगी जिसने पूरा आत्म-ज्ञान पा लिया है, वह अपनी आँखों से पूरे ब्रह्मांड को अपनी आत्मा में देखता है। और वह पूरी दुनिया को जो एक ही चेतना है, को अपनी आत्मा के रूप में देखता है।

Rs. 100/-

– ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

Scan these QR codes using Google Lens to download the books of Mr. Tatavarthy Veera Raghava Rao & Mrs.Rajalakshmi from the website.

Telugu Books	English Books	Hindi Books	Kannada Books	Tamil Books